#### प्राक्कथन

हमें बड़ी प्रसन्नता है कि धार्मिकशिक्षण के छिये कोन्परेम्स की ओर से तैयार की गई जैन पाठावली के लॉवर्ने भाग की यह

प्रथमायृत्ति श्रीतिलोके रान स्था जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड पाचर्डी हारा प्रकाशित की जा रही है। पाठय पुस्तक के रूप में जैन समाज में पाटावली का जो मृत्यांकन किया है वह हमारे लिये हर्ष का विषय है । बालकों को जैन संस्कृति और जैन तस्वज्ञान का सरखता से बोधकराने के लिये ऐसे सर्वमान्य पाठप्रक्रम की माँग कोन्परेन्स से होनी रहती थी। फळस्चरूप यह पाठावली श्रीधार्मिक शिक्षण समिति हारा श्री संतवाल जी से नैयार कराई गई है। जैनदाला, छात्रालय भेर स्कलो में क्रमदाः शिक्षण दिया जा मके और उत्तरोत्तर वालक धार्मिक ज्ञान प्राप्त कर संकेदस तरह इस पाठावली के ७ साम किये गये हैं। हम आशा करने हैं कि जहाँ २ अभी तक इस पाठावली को अपने पाटपक्रम में स्थान नहीं दिया गया है यहाँ २ सभी स्कूल, पाटशाला और सामालय यथा शास्त इसे अपना लेंगे और बालकों के कोमल हृदय पर जैन संस्कृति की गहरी छाप डालने में सहायक बनेंगे। आनंदरांभ सुराणा धीरजलाल के. तर्राविधा

> रामनारायण जैन मानद् संत्री श्री. म. मा. देवे. स्था, जैन कॉन्फरेस

शांतिलाल व. सेठ

खीमचंद मगनलाल बोरा,

### \* विघयानुक्रमणिका

दुवासमग-माहप्प
समणीवासया
समणे भगवं महावीरे अज्जे मिरिरोहै म
लोग-तत्त-सुन
असंखय जीविय
समय गोयम । मा पमाथए
कामभोगा
बगरण ,

Ę

۷

९ अध्या

۲۰

११ कुणिय-जुद

१३ मुदमणे सेट्ठी

26

وبر

१६

१८ पमाय-मुन

१९ नमाय-मुत्त

२० अध्यमाय-मुस

71

मेत्कुमारस्म निक्समण

बज्जुगए माठागारे

ममस्यितुत्ते गोमाले

च उच्चिहा समाही

१० योगालम्स मण्य

महावीरम्स गुणकिसण

द्वे-कम्मे

U

ر ۲۰

88

22

१४

to

₹0

28

20

3 8

2.4

36

٧o

٧÷

¥¥

(३) निवयापा

ह तेक क्षा व मिलिने सिंगा वेशी इस रहते व नीम र तार में उस में ति अन्य क्षाता क्षाता समें तो को स्थिति भिजन पाठावलीि

### [ सातवां साग् ] <u>फालका</u>ण्य

जुला इवालसंग-माह्य्ये

् इच्चेरपीम दूबासारी गायिषिको मणेवा भावा भनेता धमाबा, मिर्माता हैक, भावता घरेक, धमेता फेरिसा भावता भाकारचा, धमेता स्वीवा धमेता सत्रीवा/ धनेता मर्चिमिद्रेया, बर्माता घमासिद्रिया, भागेता विद्वा सर्वाता भाविद्रा पर्याचाः—

मार्यम्भावा देउनदेज कार्यमकार्य वर्ता । जीवाञ्चीर्वा मविष्यमंत्रिया सिद्धा मतिद्धा य ॥

- इच्चेर्स दूबालमंगं ग्रामितिहर्गं, श्रीए काल कर्णता वीना काचाव कारादिका चाहरंते मंत्रास्वंहारं बाह्यसंत्रे । पुरुषण्यकाले परिचा बाहर्गुर्वे, च्यानुष् र्वे अस्ति है। के **ब्रह्मक**्रिक

विद्रंति !

# ामणा मगवं महावीरे श्रञ्जे सिरिरोहे प

तेर्पं कालेणं तेर्थं समर्थनं संमयंत्रमं मंगवत्रमें बहानीरस्त्र क्रन्तेवासी रेदि चार्मं अखनारे लगानरहं, राम्यवंत्रं राम्र-हिर्देशि, राम्यवंत्रंते, राम्यवंत्रं न्योद-मार्ख-मार्ख-सिर्धे, निजन्दवंश्लो कलीये मर्स्य, रिचीण सम्बद्धान्त स्वान्यमें महानीरस्य कर्स्सामंत्रे जट्ट आसु स्रोतिस्त क्रान्यं कोटे

बगए, संबमेपं वरसा मणाणं मारेमारो दिहरह । 🖍

दिराया भारोसखादाखे उच्चारे समिई इव।
मखानुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती य महुमा॥
एयाओ पंच समिईओ चरणस्त य पवचये।
गुत्ती नियचये चुत्ता असुमत्येष्ठ सन्यसे॥
एसा पवपखमाया जे समं आयरे सुखी।
से खिप्पं सन्यसंसारा, विष्मप्रचार पंडिए॥

## प्रसा**त्रमंखयं जीवियं**

धसंखयं जीवियं मा पनायए, अरोबणीयस्स हु नित्य नाणं।
एवं विज्ञाणाहि जये पनचे कं सु विहिता अज्ञया गहिति ।
विचेश ताणं न स्त्रे पनचे कं सु विहिता अज्ञया गहिति ।
विचेश ताणं न स्त्रे पनचे कंसि तीए अदुषा पत्य ।
दीवपण्यहे च अ्त्रेगतमोहे नेपाउमं दूरभुदहुनेव ।।
तेश जहां संपिष्टहे गांहीए सक्त्रमुखा किच्चर पावकारी ।
एवं पया पेच्च हर्ष च लीए कडाय कम्माण्य नित्य आदि ॥
संसारमावस्य परस्स अहा सहार्या जं च करेह कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्स ज वेयकाले न पंचना पंचनयं उचेति ॥
सुनेसु मा वि पडियुद्धीची न बीसने पंडिए आनुपचे ।
धोरा सुनुष्टा अवले स्रीरं मार्टियक्षी ,व चरित्रमुष्टे

समा इद काममुज्यिया मोह जंति नरा असंगुडा ॥११॥
संगुज्यह ! किं न पुज्यह ! संवीही खलु वेच दूझहा |
नी हवव्यवित राइयो नी सुलमं पुष्पापि नीवियं ॥१२॥
दुष्परिवया इमे कामा नी सुजहा अधीर-पुरिसेहिं ।
अह संति सुल्यया साह जे तरित अतर विव्यया या ॥१२॥

अस संति सुल्यया साह जे तरित अतर विव्यया या ॥१२॥

अस सर्गा
विचे पसवी न नाइमो ते याले सर्ग ति मशह ।
एए मन तेस वि अहं नी तार्ण सर्ग विज्ञहा॥।।

जम्मं दुम्खं जरा दुम्खं, रोगाणि मरणाणि य ।
सदी दुम्खो हु संसारी तत्य कीसंति जंतुणो ॥२॥
इमं सरीरं अणिचं, अक्षदं असुइसंमनं ।
असासया वासविणं दुम्ख-केसाय मावणं ॥३॥
दाराणि सुपा चेव मिचां य तह पंचरा ॥
जीवेतमणुत्रीवंति मर्यं नाणुत्रपंति य ॥१॥
वेवा अदीया न मर्वति ताणं सुचा दिया नीति तमें तमेणं।

प्रपुत्रं जीवियं नचा सिद्धिमर्गः विवाशिया । वेश्विद्यदण्डन भोगेसु ष्ट्राउं परिमिष्यमप्पयो ॥१०॥ परिसो रम पावकमूखा पलियंतं मध्यपाय जीवियं । सभा इह कामप्रच्छिया मोहं जंति नरा व्यसंबुडा ॥११॥ संबुज्मह! किंन बुज्मह? संबोदी खल पेच दल्लहा। नो हुवलमंति राइय्रो नो सुलमं पुलरावि नीवियं ॥१२॥ दप्परिचया इमे कामा नो सजहा श्रघीर-परिसेहिं ।

श्रह संति सुन्त्रया साह जे तरंति श्रवरं विखया वा ॥१३॥

धपुर्व जीवियं नचा सिद्धिमगां वियाखिया । वेशिब्रएज्ज भोगेसु खाउँ परिमित्रमप्पणी ॥१०॥ पुरिसो रम पावकम्मुणा पलियंतं मणुयाण जीवियं ।

### श्रसररां विचं पसवी न नाइधी तं बाले सरणं ति मझड ।

एए मन तेसु वि श्रद्धे नो साणं सरखंन विज्जइ ॥१॥ जम्मं दुक्लं जरा दुक्लं, रीगाणि मरणाणि य । श्रहो दुक्खो इ संसारी लत्य कीसंति जंतलो ॥२॥

इमं सरीरं श्राणियं, असुई श्रासुइसंमवं ।

श्रसासया वासविणं दुक्छ-केसाण मायणं ॥३॥

दाराणि सुवा चेत्र मित्ता य तह बंधता ।

बीवंतमणुत्रीवंति मयं नाणुवयंति य ॥॥॥

षेया श्रहीयां न मवंति ताणं सुत्ता दिया नीति तमं तमेणं !.

थप्पा कत्ता विकत्ता य, दृहाख य सुद्दाख य। थणा भित्तममितं च. दुष्पद्विय सुष्पद्विश्री ॥२॥ थ्यपा चेत्र दमेयन्त्रो, अप्पाहु खलु दृद्मो। थ्यपा दंती सही होड़. श्रस्ति लोए परत्य य ॥३॥ वरं मे श्रप्पा दंती, संजमेख तवेश य । माऽहं परेहिं दम्मंती यंधगेहिं वहेहि य । ।।।। जो सहस्सं सहस्याणं संगामे दज्जए जियो । एगं जियोज्ज श्रापाणं एस से परमो लश्री। ५॥ श्रपाणमेव जुल्काहि, किंते जुल्केण वरक्त्रेयो । व्यप्पाणमेव ध्रप्पाणं वहचा सहमेहए ॥६॥ पंचिदियाणि कोहं माणं मायं तहेव लोहं च ।

द्रज्जयं चेव श्राप्ताग्यं सव्यमप्ये जिए जियं ॥७॥ न तं अरी कंडच्छेचा करेइ, जं से करे अप्यशिया दुरपा।

से नाहिइ मसुमुहं तु पत्ते पच्छाणुतावेश दयाविहुशो ॥=॥ षस्तेवमप्पा उ इवेज्ञा निच्छित्रो चड्जा देई नहु धम्मसासर्ण। र्च तारिसं नो पपलेंति इंदिया उवेति वाया व सुद्रंसणं गिरि ।।६।। ंभ्रप्पा हु खुल संययं रक्खियब्बी सब्बिदिएहि सुसमाहिएहि । अरिक्षमी जाइपह उच्चेह सुरिक्षमी सम्बद्धाण मुच्ह । १०॥ सरीरमाहः नावति क्षीयो युव्चः नाविम्रो ।

संसारी अएणको बचो खं वरंति महेसियो ॥१

सावयां भाग ( १५)

तए वं से मेहे कुमारे समग्रस्स भगवन्नी महावीरस्स श्रन्तियात्रो उत्तरपुरत्थिमं दिसिमानं श्रवक्कमति श्रवकः-मिचा सयमेव श्राभरणमञ्जालंकारं श्रोप्रयति ।

तए णं से मेहकुमारस्स माया इंसलक्ष्याणेणं पडसाड-एएं आमरणभद्धालंकारं पहिच्छति पहिच्छिता हारवारि-घार सिदंबार-छिनमुत्तावलिसगासाई श्रंस्णि विणिम्मु-यमाणी विणिम्मुयमाणी रोयमाणी रोयमाणी कंदमाणी फंदमाखी. विलवमाखी विलवमाखी एवं वयासी--जतियन्त्रं जाया ! घहिपन्त्रं जाया ! परक्रभियन्त्रं

जाया। अस्ति च णं अहें नो पनादेयव्यं। अम्हं वि णं एमेर मांगे भवड ति कट्ट मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो समणं मगर्व महावीरं बंदंति नमंसन्ति वन्दिचा नमंसिचा जामेत्र दिसि पाउच्यूया तामेत्र दिसि पडिगया । . तए णं से मेहे कमारे सबमेव पंचमुटियं लोयं करेति करित्ता जेगामेव समग्रे भगवां महावीरे तेगामेव उवा-

गच्छिता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्ती व्यायाहिणं पया-दिणं करेति करिता वन्दति नमंसति वन्दिता नमंसिता एवं चयासी-

श्रालिच-पलिचे णं भंदे लोए जराए मर्खेण य । से जहा-

थालिते में मेरी! लोए, पलिचे में भेरी! लोए,

सातवाँ भाग<sup>ः</sup> ( १७ )

ा गर्भ गरिकुश्चियं चुँछ । १००४ वह स्व १००४ चुँ से चेड्य राषा स्मीत कहार लड्डे समाचे नव महार नव चेड्यु से कारीकीलला अहारत वि गण-

नेव मुद्दार नेव लेच्छर कामीकोनलगा अद्वारस वि गण-रायाणों संदेशित सदाविता एवं वर्षात्रीः— एवं खुल देवाणुणिया ! बुदेखें कुमारे कृषियस्स रख्ने असंविदिते ये सेयंग्रां अद्वारसर्वकं च हार गद्दायु हरे

हुर्वभागते । जर्म कृषिपूर्ण सेम्ब्यास्य वृद्धिस्य हुर्वभागते । जर्म कृष्य कृष्य सेम्ब्र्य कृष्य वृद्धिस्य हुर्वभागते । जर्म कृष्य वृद्धिस्य हुर्वभागते । तर्म कृष्य कृष

रस्तं वि पंखराधीची 'चेडगरायं पूर्व वयावी— व पूर्य सामी ! जुनं वा पुर्व वा रायवरिस्तं वा डी णे सेप्यमे ब्रह्तारस्तवंके च इवियरस्त रही पंचणियजवि वहेंद्वे च इमारे सरखागते 'पेसिजवि । व डाण इविष्

बहेन्ने य कुमारे सरणागत पिसंस्रति । ते वहंग राया चाउरीगणीय सेयायः संदि संपर्सिट्टे 💸 तए णंते दोन्ति वि रायाणी रणभूमि सङ्जाविचा रणभूमि जयति ।

स्य र्णं से कृष्णिए तेविसाए दंति-सदस्सेहिः...... जावं मंखुस्सकोडिहिं गुरूलवृहं रएति रहचा गरूलवृहेख रहमुतले संगाम उवापाते ।

ं तर्षे ण से चेड्रप् राया सतायन्त्राप मणुस्सकोडीहिं सगडवृहे रएति संगडवृहेण रहमूसले संगाम ज्यापते ।

ं तए जे से दोन्ति वि राहेर्य श्राविषा संन्तद्वा गहिया-उदयहरता वनाहपदि कलपदि निकड़ादि श्रावीदि श्रंबागपदि तृत्वीदि सजीवेदि य श्रावृद्धि सुत्राव्यज्ञिति सरेदि सहन्त-वित्वीदि वाहादि वित्वाद्धियान्य व्यवमायोग्यं महण स्वत्य सीहंनावेशिल-स्वतंत्र्व रवेणं, सहहरवपूर्य दिव करेमाया देवस्या देवसतेदि प्रयास्य संस्तरादि रहस्या रहेसतेदि

त्राक्षणां विकास क्षेत्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वस्त्र के स्वस्त्र के स्वस्त्र के स्वस्त्र के स्वस्त्र पायचित्रा पायचित्र के अन्तमनिद्धे सर्द्धि संपन्नामी पावि होत्या। स्व

११८ तर्ं मं ते दोष्ट्र-चि ताईणं व्यथीया विषयासामी सारायोगुरामा महया ज्यानेखर्य ज्यायदे ज्यायदे ज्यापमद्व व्यक्तिवृद्धस्य निर्वेतकर्ययवारमीमे रुद्दिरक्ष्य निर्वेतकर्या ःसातवाँ माग (२१.)

त् णं ताथ्यो मर्पावीस्ट्राती थन्नपा प्रयादं धरियंति । चिरत्यमियंति सुलिपाए संम्हाए पनिरत्यमाणुर्वति णितंव-पटिणिसंवेति सभापंति दुवे कुन्मगा ,श्यादारत्यो थादारं ,ग्वेतमाणा, सचिगं क्षापं वृत्तर्रात्, सस्तव मर्पावीस्ट्रस्स पुरिष्टेतेव सञ्ज्ञां समेवा परिपोत्तेमाणा विचि कप्पेमाणा ।

 सातवों मार्ग (२३)

शीखिये यासंवि। पासिका सिग्धं नवलं तुरियं चंडं नहेर्दि दंवेदि कंवालं विदार्जेत । विदारिका तं कुम्मगं नीवि-पान्नो वयरोवेंति वयरोतिचा मंसं च सोखियं च थाडारेंति । एवंभियं संस्काउसो । जो थम्हं निग्धंयो वा निग्धंयो वा झायरियउवज्ज्ञावाणं श्लीतए पव्यतिए समाधे पंच य से दृदियाई अगुत्ताइं भवति से खं इह समे चेव पहुणं सम-पाण्यं बहुणं समयीणं सावनाशं साविनाणं हीलायिक्षे पर-सोगे वि य णं आगच्छति वहणं दंडनाणं संसायनारं

वय ज ते पारसियालाग होने वि तब वि जान नो संबाधित तस्ते हम्मास्त दिनि सार्वाह वा बान नो संबाधित तस्ते हम्मास्त दिनि सार्वाह वा बान होने स्वाधित सार्वाह तस्ते त्या स्वाधित स्वाधित स्वाधित त्या प्रतिस्वाह सार्वाह सार्वाह स्वाधित स्वा सातवाँ भाग (-२1)

विदृद्धः । यं गम्ब्रामि णं [०] यंदामि" । एवं संवेदृद्धः संवेदिका लेखेन ध्वममाविषते विवेच क्वानम्बद्धः । उपागन्द्रिका करणलः [०] ध्वेनलि कह एवं वपाती "एवं खलु ध्वमम् ध्वमम् सार्व्य [तान] विदृद्धः । यं गम्ब्रामि णं सार्व्य नार्वा [तान] विदृद्धः । यं गम्ब्रामि णं सार्व्य नार्वा [तान] विदृद्धः । यं गम्ब्रामि णं सार्व्य नार्व्यमामि । वान्वी चन्नवामामि ।"

याजा समय [मात्र] शिवहरं । ते गच्छाति या समय मात्री महावीरं यंदाित नयंदाित [जात्र] वच्छाताित ।'' तए वां सुदंग्यां सिष्टिं अम्मायियां। एवं वयासी 'एवं बज्तु पुता ! अमृज्यां सालातार्रा (जात्र) घाएयाच्ये विहरह । चं सा वां पुता ! समयुं मात्रं वहावीरं यंद्य निगच्छाहि ।

माणं तव सरीरयस्स वावत्ती भविस्तरः । तुमएणं इहगए चेव समणं भगवं महावीरे चंदाहि नर्मसाहि ।''

तए णं सुदंसणे सेट्टी ध्यम्मापियरं एवं वयासी—िक्रणं बाई ध्यम्माणो समर्ण भागं महावीरं इहमागणं इह पणं हह समीसदं हह गए चेत्र चंदिनसािम ? । सं गच्छामि णं धार्ट ध्यम्मयाध्यो तुम्मेहि ध्रम्भणुएखाए समाणे मगार्थ महावीरं चंदए !" तए णं सुदंसणं सेट्टि ध्यम्मापियरो जाहे णो संवाएति

सुदं देवाणुष्यमा ! मा पिडचंच करेद !'' तए ण से सुदंसखे अन्माविउद्धि अन्मणुष्याए समाखे पदाएसदुरपावेतादं (जाव) निचा पायविद्वारचारेण रावगिद्दं

बहुद्धि श्राधवणाहि (जाव) परुवेचए ताहे एवं वयासी ''अहा-

ेखं सिंह समर्ग मगर्व महावीरे सुदंसणस्स समखोवासगस्स श्रञ्जुणयस्स मालागारस्स तीसे प [०] पम्मकहा [०] सुदंमखे पडिगए।

त्तए णं से श्रञ्जुणए मालागारे समणस्य मगवश्रो महावीरस्स श्रीतर्थं धर्मं सोचा निसम्म [इह.] "सह्हामि णं मंते ! निरगंधं पाचवणं [जाब] श्रन्धद्वेषि । श्रद्धासुई देवाणुष्यिया ! मा पडिवंधं करेह ।"

तए यां से खाजूणए मालागारे उत्तर [-] अयमेश पंचाइड्रियं तोपं करेंद्र । करिया [आव] अयगारे जाए [आव] विदर्दा । तए णं से खाजुणए अयगारे जे चेत्र दिवसं मुंदे [आव] पञ्चए सं चेव दिवसं समयं भागं महावीरं चंद्रह नांसद्द । चोरेला नांसिला इसं एपारूनं अभिगार्ड उम्मायद्वर । कप्पद मे आवशीयाए खडुंछड्रेणं अधिनिखत्तंगं तशोकस्मणं अपार्णं भावेशायस्त विदरि-तप् । ति कड्ड् थामोगार्स्णं अभिगार्ड ओमिरिहणा आवशीयाए [आय] विदरद । तए खं से अञ्चलए अखगारे इड्डम्पमण-पारायांसि पदमाए पोरिसीए सञ्झापं करेह । जहा गोपानामी [आय] खड ।

तए गुं तं कज्जुणयं अगुनारं रायगिहे नयरे उच

तर् णं से व्यव्याप् व्यापारं तेर्णं कोरासेणं प्रवेषेणं पगादिष्णं महासुनागेणं त्वोक्रमेणं व्यपाणं मारेमाणे पट्ट-पुण्णे हम्मासे मामण्यारिमाणं पाउत्यह। पाउत्यिचा व्यद्ध-मासियाप् संसेहणाप् व्यपाणं कुतेह। कुनिषा तीसे मचाई व्यवस्थाप् छेरेहः छेदिषा वस्तद्वाप् कीरह[बाय] सिद्धे।



### महावीरस्स गुराकित्तरां

तद पं से गोसाले भेरालिश्च सहालशुचेषं समयोधा-सद्गं अयाहाइङजमाणे अवस्त्रिताखिज्जनाणे पीड-फलग-सिज्जार्सयास्ट्रयाद् समयस्स अगायो महावीरस्स गुख-क्रिचर्णं करेनाणे सहालगुचं समयोशसर्य द्वां वसासीः—

'समणे भगवं महाबीरे महामाहणे'

से वेखट्टेण देवाणुणिया ! ०वं युच्यद्-'समग्रे मार्ग महाबीरे महाबाहणे, एणं खतु सहासमुद्रा ! समग्रे मार्ग महाबीरे महाबाहणे उरण्याख्यस्टन्सययरे जाव महिय-पुरुष जाय तथरुमधीपयार्थपत्रसे से वेखट्टेणं देवाणुण्यया ! 'एगं युवर्- भिज्ञनाची लुप्पमाचे विलुप्पमाचे उमगमपहिनने सप्यह-विवण्ये भिज्ञननसाभिभूए श्रष्टविहरूमनतमपहलपिडिन्क्सने वष्ट्रिंद श्रुटेडिंग जान नामास्ट्रीहि य नास्टरंना यो संभारकंता-साबी साहर्कित मिल्यादि, से तेस्ट्रेणं देशस्त्रुच्या ! एवं सुबाह—'सम्पे भगवे महाबीरे महाबस्यन्दही' !

के णं देवाणुष्पिया ! महानिजनावए ?

समयो भगवं महावीरे महानिज्याम् । सं केखहुणं १ व्यं खलु देशणुरिया ! समयो भगवं महावीरे संसार महा-समुद्दे पदवे जीवे नस्समायो दिख्यसमायो जाव विलुप्तायो बुहमायो तिमुहमायो डिप्यसमाये प्रमम्पर्देश नावाय तिमायो सीरामिष्ठहे साहर्षिय संवाहे, से तैयाहुणं देशाणुप्तिया ! व्यं खुयर—'समये मगवं महावीरे महानिज्यामय' ।

## नंखिनुते गोसाक्षे

. तेजं कालेजं तेजं समएजं सावस्यी नामं नवसे होस्या, . यममो । तीते जं सादस्यीए नासीए वहिया उत्तरपुरन्दिने इदिक्षिमाए तस्य जं कंद्रए नामं चृरए होस्या, वस्रमा । त्तर् णं से गोसाले मेहालि पुने तेणं अद्वंगस्य महानिमिन् त्तरम् केल्इउद्वोग्येनेवणं सावत्त्रीर् नगरीर् श्रतिके त्रिल्य-लावी अल्परहा अरहप्पलावी अप्रेवली फेबलिय्पलावी, श्रतक्वनन् सन्त्रन्त्वज्ञावी अजिले जिल्लस्दं पगासेमाले जिहरह।

तए में सावत्थीए नगरीए सिंघाडम जाव पहेंसु बहुजशो

यक्तमसस्त एवमाइस्वर् जाव एवं परूपंति— 'एवं खतु देशालुण्या ! मोसाल मंखलिपुचे त्रियो त्रियप्यकावी जाव-पगासमाथ विदर्शतः से कहमयं मन्ने एवं ! तेर्च कालेखं तेर्ण समप्पं सामी समोस्तरे, जाव परिसा पिडम्या । तेर्ण स्रातेर्ण तेर्ण समप्पं समयस्य मगत्रश्री महावीरसः जेड्डे स्रोतासी दंदभूती यामं प्रयापारे गोयमगोनेणं जाव खडूं कहेर्ण एवं जहा विवियम्य विदर्शस्य जाव—पदमासे बहुत्रखाद्वर्गनासेति, बहुत्रखा स्रथमध्यम एवमाइस्वर्रः । एवं खनु देशालुण्यिया ! गोसाले मंद्रालिपुचे त्रियो त्रियापनाश्री जाव-पमासेमाथे पिदर्शन, से कहमेपं मने

पूर्व १ तए वो मारी भोवमे बहुज्ज्ञस्य अधिनं एयमई सीखा पूर्व १ तए वो मारी भोवमे बहुज्ज्ञस्य अधिनं एयमई सीखा भिसम्म ज्ञाव-ज्ञायज्ञङ्के ज्ञाव-मत्त्राणं पढिदंसित, ज्ञाव बज्ज्यासमार्थे एवं वयासी—"एवं खलु आहं मंचे ! छहुँ० तं चेव ज्ञाव-ज्ञियाहं पगामेमार्थे विहरित । से बहुमेर्यं वेशेत्र उत्रागच्छा, ते० २-च्छिचा गीपहुलस माहणस्त गोसालाए एगरेमंनि मंडनिक्सो करेति, भंड० २ करेचा मरवर्ण संनिजेसे उच-नीय मजिमनाई कुलाई घरमग्रदाण-स्मिभवतायरियाए श्रहमाखे वमहीए गव्यथो समेता मग्गण-गनेसणं करेति, वसडीए सुन्यक्षो समैता मम्मण-गनेसणं करेमाणे बाह्यस्य धमहि बालममाणे तस्मेत्र गोपहलस्स-माहणस्य गोसालाए एगदेर्मनि वासावासं उदागए । तए पं सा भद्रामारिया नवण्डं सामाणं बहुविडाद्रवार्थं श्रद्धदुषाण साईदिवाणं बीनिक्संताणं सुकृताल • जाव पडिस्पानं दार्शं पयाया । तए मं तस्य दारगस्य श्रम्माविवरी एकारसमे दिवस बीतिवर्को जाब बारमाहे दिवसे अयमेप सर्व गाण गुणनिपहरनं नामधेर्नं करेंति —"जम्हा वं श्रम्हं इमे दारम् गीवरलम्म मारणस्य गीमालाए जाए वं होड णं श्रम्हं इमेरन दारगरस नामघेर्ज 'मोसाले' 'मीसाले' चि । तप र्णं तस्स द्वारमस्य ' ब्राम्यावियरी नामधेखं करेंति ' 'गोपाले'-ति । तए णं गांसाल दारए उम्हक्त्वालमाने निण्लाण परिस्परमेचं जोव्यसमस्स्परन्ने सपमेय पाडिएकर्र चित्तपत्नमं कांति, सपमेव० २ कांचा चित्तफलपहत्वगए मैखनणेखं श्रापाणं मानेमाणे विहरति ।

नाव समुष्पनित्या यो सन्तु यहं नियो, नियप्पलाबी, नाव नियसदं पगासेमाणे विदर्शि ।

ब्रहं णं गोरा।ले चेत्र मंखलि<u>प</u>ुत्ते समरापायए, समरा-मारए, समखपडिखीए, व्यायरियउनम्मावाणं व्ययसकारए. श्रवनकारए, श्रकिचिकारए, बहुद्दि श्रसन्मावुन्मावणादि मिच्छत्तानिनिनेसेहि य अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बुद्दारमाणे युष्पारमाणे विहरित्ता सर्प्णं, लएणं अन्नाइद्वे समाणे अंतो सचरत्तस्य विश्वअत्वरिगयसरीरे दाहवक्कं-तीए छउमस्ये, चेव कालं करेस्सं । समणे भगवां महावीरे जिणे जिल्पप्लावी जाव जिलसदं पनासेमाणे विहरश्-एनं संपेहेति एवं संपेहिता ग्राजीविए थेरे सहावेह का० २ सद्दानेता उचावयसवहसाविए पकरेति। उचा० २ पकरेत्ता एवं वयासी-- 'ना खलु श्रद्धं जिणे जिग्रप्पलावी, जाव पगासेमाणे विद्वरद (विदृरिए) बाहुन्नं गोसाले मंखलियुत्ते समग्रायायण, जाव छउमत्थे चेत्र कालं करेस्सं, समग्री मगर्नं महावीरे जिणे, जिणप्यतायी, जाय-जिणसद्दं पगासे-माणे विहरह, ते तुक्ने णं देवाखुष्यया ! ममं कालगयं जाणेचा, वामे पाए सुंबेण यंवह, वा॰ २ वंधित्ता तिक्रखुची मुद्दे उन्युद्दए, ति॰ २ उन्युहित्ता, साधस्थीए नगरीए सिंघा-डग० जाव-पहेंसु आकरिकाई करेमाणा महपा महपा

दिनं च कामा समिद्दवंति,

दुर्म बहा साउफले व पवली॥

रूने विरन्ति म्यामी विस्ताती, एएसा दुवखोद्दर्गरंपरेख

न लिप्पर मवमन्त्रे वि संती,

ं जलेख वा पोक्षपतिशी पत्तासं स र्याविदियत्या य पर्णस्य 'थतथा.

दुक्खस्स हेर्डं म्रणुपस्स समिया ।

ते चेव थोवंति कपाइ दुक्खं, न वीधरामस्य करेति किचि ॥

न कामभोषा समर्थ उनित, न यावि भोगा विषदं उनेति।

ने वाप माना विषय उपाव, जे तप्यक्रीसी य परिमाही य,

सी तेत् बोहा विगई उपेर ॥ याखाइकालप्यवस्स स्तो,

मखाइकालप्यवस्स स्तो, सन्यस्य दुवसस्य प्रमोक्समगा ।

विषाहिक्यों जं सम्रविच सत्ती, कमेल कर्यत गुद्दी मर्विड ॥ जहां लाही तहां लोही,
लाहा लोही पनदृह है
दो मास-कर्ष कर्ज,
कोडीए वि न निष्ट्रियां।
अदे यपंति कोहेण,
माखेण भाहमा मही।
सापा गहपिटायाओ,
लोहासी दृहको सर्थ ॥
सुव्यक्ष-रूपस्स उ पन्यम महै,

सुवर्ण-रूपस्स उ पन्त्रवा मने, सिया हु केलाससमा असंख्या। स्टब्स लडस्म न तेडि किंदि

नरस्त लुद्धस्त न तेहि किंचि, इन्दा हु श्रामाससमा मर्णतिया॥

पुरवी साली जत्रा चेत्र, हिरएषं पसुभिस्मह ।

पहिदृष्यं नालमेगस्म, इह विम्रा तर्ने चरे ॥

क्रोहंच माणंच तहेच सायं,

स्तोभं चउत्थं मन्भत्यदीया । एकावि वंता बरहा-महेसी.

य्याम्य वंता करहा-महेसी, न दुव्यक्ष पावं न कारवेर ॥

म दुभ्वर पाव न कारवर

एकोवि पायाई विवज्जयंती, विहरजज कामेतु स्वस्त्रज्ञमायो ॥ जाई च दुर्ज्ति च इहज्ज पास, भूपाई मार्य पिडलेद जाये । तम्हा डाईवज्जो पर्सा ति नचा, मम्मत्तरंसी न करेद पार्य ॥ न कम्हुषा कम्म खर्वेति पाला, अकम्हुणा कम्म खर्वेति धीरा। "

### चडब्विहा समाही

सुर्प भे भाउस् ! तेणं मनदया एवमक्खार्य । इह साल थेरेहि मनवंदिहि चत्तारि दिख्यसमाहिद्वाखा पत्रता । कपरे खल्ल ते थेरेहि मनवंदिहि चत्तारि विखयसमाहिद्वाखा 'पत्रता १ ।

प्ता । इसे कुलु ते घेरेहि भगवतिहि चत्तारि विखय समाहि-इस्या पत्रता । तजहां — निखयसमाही, सुप समाही, तज समाही, व्यापार समाही ।

विष्णुष् सुष् य तवे, व्यावारे निच पंडिया । व्यभिरामयंति व्यप्पाणं, ने मवैति निदंदिया ॥१॥

चउन्विहा खलु विखय समाही मवर, तं जहाः—श्रख सासिन्त्रंतो सुस्यम्ह । सम्मं संपहित्रज्ञह । वेयमाराहर्। न य

(88) ावयाँ भाग व्यथ्यों विष्यमुक्ते । स्रमियम चुउरी 🧺 े व्यवसागमं गए ॥ र्राक्ट्र ह विउल्रहियं मुख्यं 🥱 Parti. बार मरणाची हुन्ह ! दुच्चरं । PRI CA सिद्धे वा इवा 🗫 क्खुणी ॥ it. जमे । कर त्यां दकरं ॥ , ज्ञणं दुक्करं ॥ पालिए 🍖 वाए (सन्त्रणा । हायीरस्य सुदुक्करं ॥ नेग्गं**धे** या क्ट<sup>्र</sup>ं मीयणवज्ज्ञणा । गेएग क्ट<sup>्रिट</sup>्वो सुदुककर ॥ पेहुंडे इंड क्कर ... मंसग वेपणा । Ť जन्लमेव च ॥ बह य-परिसहा ः । Hξ श्रलाम्या छेमेग

द्विहं खवेऊरा य पुरायपानं, निरंगये सम्बन्धी विष्यस्कते । तरिचा समुद्दं व महामनोयं, 'समुद्दगले' अपुषानमं गए ॥

#### 000000000

### सामरागां

तं विवनम्मावियरो, सामवर्षं पुत्त ! दुच्चरं । ग्रणाणं त सहस्साई, धरियव्याई मिक्खणी ॥ समया सञ्चभूएस, सन्तमित्रेस वा जमे । पाणाहवायविरह. जावज्जीवाए दुक्ररं ॥ निच्चकालप्पमत्तेणं, ग्रुसावायविज्जणं । मासियव्यं द्वियं सच्चं, निचाउत्तेख दूकरं ॥ दंतसोहणपाइस्स. अदचस्स विवज्जणं ) श्रमवज्जेसण्ज्जरस, गिएइमा श्रवि दक्कर ॥ विरई अर्वमचेरस्स, कामभोगरसन्तुखा । उग्गं सहन्दर्यं वंभं, घारेयन्त्रं सुदूबकरं ॥ चउविष्हे वि श्राहारे, सहमीयखबज्जला । संतिही संच्यो चेव, वज्जेपन्यो सद्दक्तरं ॥ छहा तण्हा य सीउण्हं, दंस-मंसग वेयणा । श्रकोसा दक्खसेजा य, त्यफासा जन्लमेव च ॥ तालना तज्जणा चेत्र, वह-वंध-परिसहा । दक्तं भिक्छायरिया, नायणा य भलामया।। श्रकरंडुण्कणगरूषगनिम्मलसुजायनिरूपद्दयदेहपारी, श्रष्ट-सहस्मविडयुण्णवरपुरिसलक्खणवरे, सण्णवनासे, संगय-वासे, सुन्दरवासे, सुजावशासे, नियमाइयवीखरइयवासे, उज्ज्ञपसमसिद्दियनचत्रशुक्रसिण गिद्दश्राह्अलडहरमणिज्ञ-रोमराई, सत्तविहमसुजापपीणकुच्छी, सत्मीपरे, सुइक्ररणे, पउमविषडणामे, गंगावत्तगपयाहिणावत्ततरंगमंगुररवि-किरणतरुणवीहियमकोसायंतपउपगंनीस्वियहणामे, साह-यसोर्णद्रमुसलद्रपण शिकरियनरकणगच्छस्सरिसवरनहर वलियमज्मे, पष्ट्रवरतुरगसीहवरवङ्टियकडी, वरतुरगसुजाय सुगुज्कदेस, ब्राइएणइउन्त्रशिह्नवलेत्रे, वरवारणतुल्ल विक्वविल्तियगई,गयससणसुत्राय संनिमोह्र,ससुग्गणिमग्ग-गृहजाण्, एणीकुहविदावत्तरहाणुप्नजेषे, संदियसुसि-लिइ ( विसिष्ठ ) ग्इगुण्फे, सुप्पइहियक्तम्मचारुचल्ये, श्रणु-पुन्यसुसंहपंगुलीए, उपण्यवसुतंत्रशिद्धस्व बसे, रचुपल वच-मउपमुकुनाल-कोमलतले, धहसहन्सवरप्रिसलक्खणधरे, मगरसागरचनकं कवरंगतं वलंकियचलयी नगनगर विसिद्धस्त्रे, हुपनहनिद्ध्यज्ञलिय तढिताउग नरुणरवि क्रिरण सरीरतेष, अणासवे, अममे, अक्रिचणे, दिससीए, निरुश-लेथे, वयगयपेमसगदीसमोहे, निग्गंथस्स प्ययणम्सदेवए सत्यनायमे, परदावए, समणपई, समणेगविदपरिवट्टिए, 

( 29 )

दंतमोहणमाइस्म श्चदत्तस्स विवज्जणं । व्यणवज्जेसणिज्जस्स गिण्हया व्यवि दुवर्त ॥ विरई अवंगचेरस्स काममीगरसन्तुगा । उग्गं महर्द्ययं बंभं घारेपञ्चं सुद्रकरं ॥ धरा-धन्त-पेतवम्होस पश्चिमहिववज्जणं । सन्वारंमपरिचाधो ँ निम्ममत्तं सुदुकारं ॥ चउव्यिहे वि व्याहारे राईमोजगवन्त्रगा । संनिर्दिसंचक्री चेव वज्जेवच्या सुदुखर ॥ ·छुदा-तण्हा य सीउण्हं दंस-मसगवेषणा । श्रकोसा दुवससेजां य तस्प्रपासा जल्लमेव य ॥ त्तालणा तज्जणा चेव वह-बंध-परीसहा । · दुक्रां भिक्खायरिया जायणाय घलाभया ॥ कावोया जा इमा वित्ती केसलोय्रो य दारुखो । दुवर्खं चंभन्त्रयं घोरं घारेउं च महप्पणो ॥ सुद्दोइयो तुमं पुत्ता ! सुक्रमालो सुमञ्जियो । न हु सी पभू तुमं पूत्ता ! सामण्णमणुपालिया ॥ जावज्जीवमविस्सामी गुणाणं तु महब्मरी। गुरुउ लोहभारुव्य जो पूत्ता ! होइ दुव्यहो ॥ त्रागासे गंगसोउच्य पडिसीउन्य दुत्तरी। बाहाहि सागरो चेव तरियम्बो गुणीदही ॥ गोपकी:—ष्मानीयणाण् वं भंते ! श्लीवे (कं जलपद १ मगर्व भवावीर:—ष्मानीयगाण् वं मापा-निगाण्— विच्छाद्वेयपाण्डाच्यं मोषप्रमागविष्यावं व्यवंतरंसार वेयावावं उदावं करेट् । उज्जानावं प जाणवर । उज्जामाय-विद्यन्त्रे प वं जीवं ष्मार्थ दृश्यीवेयनपूर्णगपेनं प न र्षयर । प्रवादं प वं निज्जरेट ।

गोयमी:-- निद्गुपाएलं भेते ! जीवे कि जयपह ?

मनव महावीरः—िनिद्यायायणं वन्द्राणुतायं जायवर्। वन्द्रशाणुगवेणं विरञ्जमाये करणगुणसिदि विडेवनजद । करणगुणसिदिहिषसे म र्ण स्राचगारे मोहिणाओं करमी दरवायर् ॥

गोपमो:—धपडियद्वपाए वं संते ! अश्वि कि जायपर ? मगव महाशेर:-धपडियद्वपाए निस्सामं जायपर ! निस्तंगचेणं अञ्चले एक एक्श्वियद्वपाए स्थापित अध्यक्ष मार्च अप्वडियटे वाचि विहरह !!

नाथ अप्याहपद्ध गाव विद्वरह ॥ • गोपमीः—विचित्तसपणासणयाण् णं भेते ! जीवे किं अखयह १

मगर्व महावीरे:— विविचसमणासण्याय चरिचगुरि जण्याः । चरिचगुचे य शं जीये विविचाहारे दहचरिचे, एर्गतरए मोकलमात्र वृद्धिको महविद्दकमसाँठि : ल्यालुवंषशाणि य वोच्छिद्द्, मलुन्नामलुन्नेसु सद्-प्रस्ति-स्व-रस-गंधेसु चेव विरज्जद्द् ॥

गोपमो:—खंतीए णं भंते । लीवे कि जणवह १ मगर्व महावीरे:—खंतीए परीसहे जिखह ॥

गोपमो:—मुत्तीए णं भंते ! जीवे कि जणपद ? मार्च महावीर:—मुत्तीए चकित्वणं जलपद । व्यक्ति

ष्णे य जीव अत्यत्तीलाणं पुरिसाणं अवत्यणिजो भवह ।। गीयगो:—अज्ञदवाए णं भंते । जीव कि ज्यावह ? भगवं महावीर:—अज्ञववाए काउज्जयमं, भावुञ्जवमं,

मासुरत्ययं अविसंवायणं जण्यदः । अविसंवायण संबद्धवायः एं जीवे घम्मस्स आराहण् भगदः ॥ गोषमी:—मद्वयाणः णं भंते ! जीवे कि जण्यदः ?

मगर्य महावीरे:—मद्वयाए श्रामुस्तियर्व ज्ञायर्द । मणुस्तियत्ते जीवे मिउनद्वसंपत्रे श्रद्धमयठाणार्द निहाबेद ॥

गोवमी:—मायसवेणं मंते ! जीवे कि सवायरं है मु म न म्यानसवेणं मायविसीहिं व्यवादं । माद-विसीहित पहमाचे जीवे सार्रवरास्त्रस्य सम्मस्य काराहराचायाय कम्बद्धे है। यराहेवराक्ष्यस्य सम्मस्य काराहराचायायः कम्बद्धित्व, वरतोगधममस्य काराहर् मृतद्यः ॥ ' हातवाँ भाग ( 209 ) गोयमो:-वयसमाहारखयाए भन्ते ! जीवे कि जखयइ ?

म॰ म॰:-वयुसमाहारखयाए वयसमाहारखदंसखपञ्जने निसोहेर, वयसमाहारखदंसखपञ्जवं विसोहिचा सुलह-. पोहियत्तं निव्यत्तेः, दुल्लह्बोहियत्तं निज्जरेः ॥

ं गोयमो:-कायसमाहारणयाए णं भंते ! जीवे कि जगयइ १ म० म०:-कायसमाहारणयाए चरित्तपञ्जवे विसोहेट । वरिचवज्जवे विसोद्वित्ता छाहक्खायचारित्तं विसोद्देह । मद्दबखायचारित्तं विसोहेत्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खदेह । तथो पच्छा सिरमाइ, युजमाइ, मुचाइ, परिनिन्नायइ सन्न-

दुक्साणमंतं करेड ॥ गोयमो:-नागसंपन्नगए णं भंते ! जीवे कि जगपह ? म•भ•!-नाणसंपद्मवाए जीवे सन्वभावाहिगमं जणयह नामसंपन्ने मं जीवे चाउरते संसारकतारे स विसारसह ॥

श्वहा धुई समुचा पिडझा न विशासह तहा नीवे समुचे गीयमी:-दंसणसंपनपाए णं मंते ! जीवे कि जणवह !

.संसारे न विण्यस्सइ । नात्यविण्यतवचरिचनोमें संपाउण्यह सक्षमयपरसमयविसारए य असंघायगिन्ते मन्ह ॥ म । म ः - दंसणसंपन्नवाए भन्निच्छत्तछेवणं करें! । परं न विज्ञायह । परं अविज्ञाएमाणं अणुत्तरेणं नार्वहेत त खेखं अत्वाणं संजीएमाचे सन्मं माने माखे विहरह ।।

म॰ म॰:—कालपडिलेड्खयाए नाणावरणिजं कम्मं विद् ॥

गोयमो:--पायच्छिचकररोणं भांते जीवे कि जणयह ?

म॰ म॰:—पायच्छित करखेणं पायविसीहिं जययह, पिश्मो पाति भन्दू ! सम्मं च णं पायच्छितं पडिवज-पि मगं च मगफर्त्तं च विसोहेद् । धायारं च धायारफर्तं धाराहेद्द ।

गोपमो- खमायखपाए णं मंते ! जीवे कि जखपद ?।

भ० ग्रः :---खमावण्याए णं वन्हां यणमार्गं खण्यः । न्हां यणमावधुवगए य सञ्चराणाभ्यजीवसचेगु मेचीमाव-गुपार्द्र । मेचीमावधुवगए यावि जीवे भावविद्योर्दि काऊण नेनम्ए मदः ॥



. इंग हहा सत्य-विसारंयत्तं

श्रग्रत्थहेऊ य गिरापड्चं ।

् विएणाण-वेइत्तमवत्युर्यं घ

नासाइयोऽज्यत्त्वज्ञहारसी चे ॥१॥ दीवं समुद्रस्मि तरुं मरुम्मि

दीवं निसाए भगणि हिमे य (

काले कराले लहए दुसवं भारमध्यत्तां चहुमाग्धेमो ॥२॥

धारमाप्य सज्जे पसरंत—तेए मगाप्पराष परिभासमाखे ।

कचो तमी समझ मीग-पंकी सिग्धं पलायंति कमाय-चौरा ॥३॥

मवी झटंनी मवनककवाले भुजीब भीगे बहुमी बहुचा।

तहावि दिचि अगयी श्यामि मयुमभोगेसु गवेसए वं ॥४॥

सच्चे पराष्ट्रीण-दमा इहतिय

को कं मर्वतं पमरेश्व काउं। सर्प दलिए। हि कई समस्यो

इवेज्य काउं सिरियन्त्रमधं । ॥४॥

( 45 )

तो माप समुद्द-महम्मे गिरिको गुडाय पापाल-देसे विश्वसालये वा ।

कहि वि गच्छेज, न मच्छायो त इवेज गुचो वि-जय-प्यहूमी ॥११॥

संसार-दावरिग-बहिज्जमार्खे . सपेज्ज धम्मीववर्ग जिम्री वे । न तस्स दुस्खाणुमवावधारी समी तवन्ते तरिखम्म फची १ ॥१२॥

पोम्मस्य विज्ञुचवसा, ऋषपः-श्चमव्य देशे, सिमिश्यव्य सङ्गा । मच्यू पुणी संनिद्दिमी विसङ्गी,

नज्यू पुणा सानाहमा (१८७४) द्वेडज ता घम्मनिश्चिन-विची ॥१३॥ वेचोय देहेण (विवाहीणा संसारबीसस्स कुर्णति पोसं।

तेणेव देहेण विजेतपन्ता संसारनीमस्स कृष्मित सोसं ॥१४॥ बा उमर्ह चावनई च मस्यि

का उत्तर पुराणस्य पानस्य च जम्मित्रं र्ष । पुराण समने विद्वो अवेर

पुष्णे समत्त विद्वा स्थर तानस्तरे को गुसुहिन्म मोही । ॥१४॥ जण्णा अस कि मरणं मर्ग कि गया है मार्ग ज़या स्था कि ? कि संपम निम्नल उसका या

जं मोह-पासुत-मणी सपा सि ! ॥२१॥ स एव घीरी स च एव वीरते स एव विज्ञं स च एव साहू वेशिदियाणं उत्तरी स-सप्ता वित्यारिका माणस-निजयेण ॥२२॥

बहेदियासा मण्-स्व-स्बो . जुनई तेऽत्येष्ठ तहा चर्लति ।

पार्डति गड्डे गुणमूदमर्च इा ! केरिसं एस परासयर्च ! ॥२३॥

सहावांची सन्त्रों पववई तथायां ति-हुमाणे किलेसाशुक्तेश मगद मणुद्दीनतीतद्दिव सो।

त एवं संसारं मृखिम दिसमं द्वस्वश्रद्धं महत्त्वा निस्संगी हविम्न निम-मन्त्रिम रमए॥२४॥



( 52 )

रवोनीमो निज-संदिराम्म तो तीइ सी अमच-सुच्छो । रीनाराण सहस्सं कयन्तुयत्तेण से दिशं ॥३१॥

के चउत्य-दिवसे रायसुत्री निगामी नयर-मज्मे। माबिपं च "संति जइ मज्म रख-संगत्ति-पुरुखाई ॥३२॥

वी रापहंतु बारं," भह तत्पुराखीदएख तत्व खणे। क्युर-रापा अनिनित्तमेव जाभी मरख-सरखी ॥३३॥ म्पूर्वो य, पदचा गवेसचा रजजोग्ग-पुरिसस्स । नेनिचित्रोवरही ठवित्री स तस्म रजम्म ॥३४॥ प्वारि वि तो मिलिया प्रमणंति परोप्परं पहिट्ट-मणा ।

पानत्यमेचकिर्वियमम्हाणं, तो मणीत एवं ॥३४॥ "दनश्चमण्यं पुरिसस्स पंचर्ग, सहपमाहु मुदिरं 1 द्वी सहस्त-मुद्धा, सप-साहस्ताई पुष्पाई ॥३६॥ सत्याह-मुमो दनखत्रयोध सही-मुमो व रुरेण । प्रदीर समय-सुमी जीवर पुण्येदि राव-सुमी" ॥३॥।

पाइय-भासा

क्रमिन्नं पाइभक्ष्यं पटिउं सीउंच जेन आसंति । मामेश्र पाइमकन्य पाठ ।। कामस्य वस-वर्षि युग्वि, ते कह म सन्वर्षि १।। १॥ (स्पानन्यार्थ-१५) पहली सबक्त-बंधी पाऊच-बंधी वि होई गुउमारी । परमा सरकर अतिमारितर् तेविमानिकाणे ॥ २॥ -( 44, may- :

श्रह देवी मण्डह निवं "कि जोण्डा ससहरस्स वि परोक्खे । ' विद्वह १ कत्यह दिट्टा उ केण रविणो पहा मिला १ ॥१६॥ ता न सुपूर्ण कज्जं, तुब्साणुमयं मएवि कायच्यं ।" इप नाउं निय्वंचं तीसे ठविउं सुवं रज्ते ॥१७॥ तायस-दिक्खं राषा पडिवजह धारिखीह इहियो वि । थोद-दिवही य ठीए गृब्मे आसि चि तो समए ॥१८॥ नाथो पत्तो तयणंतरं च सा आइसेस मरिकरा । देविचेणुप्पन्ना काउँ वण-महिसि-स्वं च ॥१६॥ खिनइ कुमारस्स मुद्दे दुईं नेहेख ब्यह्मकी विद्धि । सी वक्कलेडि टविश्रो हो वक्कल-चीरि-नामी चि ॥२०॥ श्रद्ध कडवप-वरिसंते रूवं ललिपं श्रेणुत्तरं ठस्स । त्रिष्ठवं पप्तत्रचंदेण राइणा सम्रो प पच्छतं ॥२१॥ वेसार्षं भूयामी महिषावसंज्ञाय-जोव्यख-मराध्ये । भइसप-रुववईमो रायस-रुवाई कारविउ ॥२२॥ संजोहक्त एंडाई पनर-दन्वेहि मोयए तास । हत्ये दाऊण तमो बहु-पाइक्डइ-क्रलियाम्रो ॥२३॥ संपेतिपाउ वहिंगं सनिहाईएं गए कलबहिमा । वक्रत्वीरिस्त कलाणुगारियां मोयए ताउ ॥२४॥ टेन्ति तमो मुंबेउं पुच्छर कत्यासमिम जापन्ति । एरिस-महर-फलाई १' वो वाश्रो मणंति "एपाई

वेसाए एकाए लोय-यसिद्धाए सिद्धि-किलियाए । नर-वेसिली य एका भूषा तीसे घरे यस्य ॥३६॥ नेमिनिक्ए कहियो पुर्व्वा पे हुसो पलोइयो लाहि।

नैमित्तिष्ण कहियो पुर्व्य पि हुसो पलोइयो वाहि । बरयाहरणेहि निहृतियो च ण्हायो बिलानो य ॥३७ । उपरण्य-काणुरायाप धृयाप कारियो स रयाणीप । पाणिगाहर्ण तसो गिञ्जह वाहञ्जप पणियं ॥३=॥: रसो वि तयं कहियं वकलचीरी जहा व्यरण्याम्म ।

ष्ठान्देहि सह वित्रको पिपरेल प ममह राष्पिम ॥३.६॥ तथी प धार-महंते दुक्तं आपं पमाप-समए थ । इक्तारिक्त्य मणिया प्राचिपा कृतिपण नरवहचा ॥४०.॥ " मह परिगमि दुक्तं गूणं मणीरहा इन्या । जे पर्व पारन्वद गारन्वद इहतुद्वेदि " ॥४१॥ सो भीए मणियाप कृतियं नीमिचपार-वर्षवे में ।

तावस इसरस्य य कार्मनाह परिनाहितं सन्तं ॥४२॥
" देवस इसर—हमर्थ बन्धेति न जागिय तको छान् हु " ।
पुन्ति वि बोर्ड दिही वे रक्ता पंतिचा पुरिता ॥४३॥
प्राणिनाव वेहि दि कार्योर छह पहुरु मो देहें ।
क्रान्तिमात्रे य रक्ता स्वर्तस्वन्द्राच्छे उहिको ॥४३॥
क्रान्तिमात्रे य रक्ता स्वर्तस्वन्द्राच्छे उहिको ॥४३॥
क्रान्तार्थे दि इ नरवर-पुनायं माहिको क्रां वर्गिय ।
स्वर्ताय-प्या उहिको इंडर दिस्ते होने कोए ।४४००

पडिचोहए य विशरं पसलचंदें च सावयं कुणहं । श्विरि-वीर-जिख-सवासे मध्यो तको गिण्डिड पिनरं ॥४६॥ देक्खाविद्यो य सिक्खाविद्यो न सिरि-वीर-जिख-वरेगेसो । 'वक्छनवीरी -सिद्धो पिग वि गेतृण दिय-लोगे ॥४७॥ -सिनिम्स्सङ् युवकस्को मोजूल सुदेव-मणुय-पोक्खाई। 'इय जर-दृह-वारखयं सिरि-वीर-जिर्णिद-पय-कमलं ॥४॥॥

## श्रमय-दार्शा

बन्दवा व मेहरही उम्मुक-भूतकाहरकी पीतह-सालाए पोसद्द-जोग्ग-म्यासर्थ-निसएखो--सम्भत्त-र्यण-पूर्वं, जग-जीवहिषं सिवालयं फल्यं । राईमां परिकार्देड. द्वाख-विमुक्तं तर्हि धर्म ॥ एयम्मि देस-काले, भीको पारेवको मरभरेन्तो । पोसह-साल-महनका, 'रायं ! सरणं' ति 'सरणं' ति 1 'अमुझी' चि मण्ड्राया।'मा भाडि'चि मण्डि द्विभी श्रह सी। तस्य य श्रायुक्तमञ्जी पत्ती, विरिष्पी सी वि मणुय-मासी । नह-तल-त्यो रापं मण्ड्-"मुपाहि एपं पारेवयं एस मम भक्तो।" मेहरहेण मणिपं-"न एस दायव्यो सरणाग्रामी।" तिरिएस मिस्न-"नगवर ! जह न देखि मे सं सहियो कं सरखमुवगब्दामि ! चि ।" मेहरहेण मणिपं-"जह जीवियं त्रव्मं - वियं निस्तंत्रयं तहा सन्त्रजीताणं । भणियं च---

## वहू-चतुरत्तरां

अभग मन्म--रचे पह चेन्छ सिहाओ सीलमई निग्मवा।
विविद्यन्तिया आसपा सहरेख दिहा। चितिय 'नूर्ण पसा प्रमील' चि। गोसे महिलो समस्य वृत्ती पुनी 'गव्ड ! हिंगील' च। गोसे महिलो समस्य वृत्ती पुनी 'गव्ड ! हिं एता परिची कुसीला। अभी अञ्च मन्म-रचे निग्गेत्ल क्रव विगया आसि। वा एसा न खुजद गिंदे धरिउ'। हारो--

पण-रम वसकी उम्मग्गगानिया भगगुण-दुमा कलुमा (

महिला दो वि ब्रलाई क्लाई न्हव्य पार्टेड ॥ १ ॥ ता वराणित वर्ष विदृहरं?"
श्वेषा पुर्व—"ताय ! अं जुर्च तं करेतु ।" मणिया कहुता-"मही मामामे शिल्डह किर्म पेत्रिक्स कित्र कित्र क्षाय—संदेशको । जा चलाइ केषा हुमं सम वराणियि" । सा निरंपतिक निरामस्येष मामे इतिले संक्रमाणीप्यमार्वेग्ड सार्ती विद्याला सार्वे पि पि चिन्तिकण चिल्पा हराहदेख सिद्धिणा समं। कित्र की से ही वर्षी मही वर्षी स्वाप्त चुना वह—वाण्डाको

मत्त्व नई क्रीवरम् । तीए न मुक्काकी वाक्षी । सेहिया

शागभो दिहं परम-पचा-पर्स झडचंत-प्रक्तिन

3

चितियं 'श्रविणीय' चि ।

हृहाओ!'तीए जंपियं 'जल-मज्मे कीह कंडपाई न दीमह'ति पर्गो मिह सेहि । देमियाई तीए महि-चिहित-महस्याई। वहेंच मिहिया मजाए सुयस्स सन्दं कहिङ्स्य कया सा 'पर-सामियी।

--<u>क</u>ुभारपाल श्रतिबोध

### सज्जगा-वज्जा

• महणम्म ससी महलम्मि सुरतहः महणसंभवा लच्छी । सुपणी उस कहसु महं न-पालिमी कत्य संभुत्री ॥१॥ सुपणी सदसहावी महलिज्जनती वि दुज्जणपणेखा। छारेण दण्यो विष श्रहिपयरं निम्मली हो । २॥ मजरों न इप्पर चिय घह इप्पर महुलं न चिन्तेर। श्रद्ध चिन्तेह न जम्पद श्रद्ध जम्पद सजित्ते। होह ॥३॥ दहरीसकलुमियस्त वि सुपणस्त सुहाउ विष्पियं करो। राहमुद्दरिम वि ससियो किर्या अमर्व चिय मुपन्ति ॥४॥ दिहा इसन्ति दुवर्ध जम्पन्ता देन्ति सवलसोक्साहं । एवं विदिशा सुक्रयं सुयशा जं निम्मिया सुरहे ॥१॥ न हसन्ति परं न पुणन्ति अप्परं पियसपारं अम्पन्ति । एसी सुक्तसहाबी नमी नमी नाग प्रसिशापं ॥६॥ अक्ष वि कप वि विष विषे इसन्ता अवस्मि दीसन्ति। बन्धविष्पए वि इ पिपं इरान्ति ते दुन्तहा सुपरा ॥॥॥

.--

### साहसवज्जा

गहममगलम्बन्तो पावः हिण्डच्छियं न सन्देहो.। देखनमङ्गमेचेण सहुला कवलियो चन्दो॥१॥ र्वे कि वि साइसे साइसेण साइन्ति साइससहावा। वं मविक्रण दिच्यो परम्मुहो घुणः नियमीमं॥२॥ यरहरइ घरा सुन्भन्ति सावरा होइ विन्मलो दहवी। भगगवनसायभाइस-संलद्धजसाय घीराणं ॥ ३ ॥ वह जह न समप्पइ विहिचसेण विहडन्तक अपरिणामी। वह तह धीराण मणे बहुद विजयो सहुव्छाही॥ ४-॥ हिपए जामो जत्थेन बहुिमी नेप पवडिमी सीए। ववसायपायको सुपृत्माणं सक्तिसङ्गः पलेहि॥ ४ ।। न महमहणस्य पन्छे मन्ने कमलाण नेय खीरहरे। क्वसायसावरे गुप्रतिसास लन्ही पुढं वसह ॥ ६॥

### **दीरावज्जा**

प्रसम्प्रतावार्यम् मा अगामि जगेनु एतिनं पुत्रं। उत्तरे दि मा परिजनु एत्यममही कमो जेना।?॥ ता स्वं तार्य प्रदास सुत्रः प्रचामित तार्यः ता दिवं तार्य प्रदास सुत्रः प्रचामित तार्यः। तार्वा दिव महिमाची देति। तार्या द्वारा ११॥। तिरुक्तं वि इ सुत्यं दीवं द्वत्ये तिम्मितं सुत्रः।। तार्य कि न नीर्षं भन्मानं एव्यवस्य ।३॥।

ः । निर्मा नीइवज्जा यन्तेहि श्रासन्तेहि य परस्स कि अप्पिएहि दोसेहि। थत्वो जसो न लन्मइ मो वि श्रमिची कभी होई ॥ १ ॥ शिसे सचसमिद्धे श्रालियपमुक्के सहावसंतुष्टे । वत्रयम्मनिवममहूष विममा वि दसा समा हो ह।। २॥ मीलं वरं कुलायो दालिई मन्त्रपं च रोगाथो। विजा रजाउँ वरं रामा वरं सुद्रु वि तवायो ॥ ३॥ मीलं वरं कुलाधी कुलेख कि होइ विगयसीलंगा। समलाई कर्मे संमयन्ति न हु हुन्ति मलिणाई ॥ ४ ॥ वं वि सुमेर समत्यो धणवन्तो वं न गव्यमुष्यस्र। वं च सविको निमरी तिस तेस अलिङ्ग्या प्रदर्श ॥ ४ ॥ छन्दं जो अलुबद्दर मन्मं रक्खर गुल प्रयागेर । सो नवरि मालुगाणे देवाल वि बद्धही दोह ॥ ६ ॥ स्यवश्रारेण धरिमा नामइ दिवसी इसीपण सुधे। इ.इ.ल्वेश य जम्मी नागइ पम्मी अधमीय ॥ ७॥ हुएं प्रामं पपउं च पेतिमं पारन्तरवायं। राजगरहिको जम्मी राज्ञरणाय मंपद्रशा = ॥ धीरवज्जा

तिर्म बारह कर्ज पार्द मा कहि रि निरितेत । पादिशासियां क्यां इसे न निम्बन्ति॥१॥

राजान १ । हा. ४२

सन्तं थप्पे जिए जियं । 3, 8, 134 भणाः मित्तमभित्तं च दृष्णहियमुपहिद्यो । 3. 20123 मणा क्ता विक्रमा य दुहाल य सुहाल च । उ. २०।३७ थप्पा कामदृहा धेणु श्रप्पा मे नंदणं वर्णं । 3. 30 1 14 मणा गई वेवरणी ऋष्या मे कड मामली। , उ. २०। १६ न वं भरी कंटलिया करेई जं से कर अप्पणिया दूरपा 3, 3. 1 YS

### ज्ञानसूत्र

पये नाचे 4 1 1 £ 503 पदमें नाजें तभो दया। द्विदा बोही,गाराबोही चेष देवगुषीही चेष टा. २ टाला २,४,०० मार्थेष दिना य पूर्ति परणगुणा। 3. ₹=1₹+ नासमंबद्यवाए श्रीवे मन्द्रमावादिगमें अमवदा उ. ६६ । ५६ व. चउद्दिश पुदी-उप्पर्या, बेदार्या, कम्मिया, परिदामिया । EL Y Z, Y, 19

नारंगरिस्म मार्ग । मारीय च हुनी है।, नरेच हो। नाहमा । सदा दू से बांतरशा मरेति । व देशनं बादर् में सब्दें बादर्, दे सब्दें बदर् से दूर्व शादर 1

तीरे विषाय पररे, ग्रं दश्द बहुम्मून् <u>।</u>

साववाँ भाग ( ( ( ) ं विज्ञाचरणं पमोक्खं <sup>र</sup> स्य. ११ । ११ पंते धमिनिव्यहे दंते बीतिगद्धी मदा जए स्य. ८१ १५ महीवेगनतदिष्टीए चरित्ते पुत्त ! दुकरे वना लोहमया चेव चावेयच्या सुदुक्तरं । 3, LE 1 1E सामाधियमाह तस्स जं जो श्रद्याणं भये स दंगए । स. २ । १७ उ. २ तपसूत्र उ. १८ । १५ तर्वं चरे । रवसा धुणइ पुराण पावर्ग । दश. ६ । ४ च. उ. तवेख परिस्रज्मई । उद्या ३५ तवोगुणपदाणस्य उज्जुनई । दश. ४। २७ सर्व कुव्यई मेहावी । दश. ५ । ४४ उ. २ ंत्रवेणं चोदाणं जणयह। उ २६-१२७ परक्रमिजा तव संजमम्मि । दर्गः ⊏।४१ सब्बद्धी संबुद्धे दन्ते, बावा वं सुसमाहरे । स्य. ८।२० अकोहणे संघरते तवस्सी । Et 80 1 85 अपा दन्ती सुदी होह।

सो पूर्वा सबसा भावदेखा ।

ममाहिकामे समणे ववस्सी

वेवणिज निजरापेही

3. 9 1 84

ह्य. ७। २७

3, 3 1 30

च. ३२ । ४

मातवाँ भाग ( 100) मयागिष्ठोगविषविष्यक्रोगवहुदुवराजलखपदनलिव ।

नरपेन्छवायममायो मंसारे को थिई कुणह ॥ स यासवस्पि ठाणे तस्मोवाष् य परं मुखीमिखणः। एर्गनमहर्षे सुपुरिसाण वची नहिं जुनो ॥ सीत्मासमेहिं दुक्सेहि अभिदृद्विभ संसारे । पुल्हमिणं सं दुवसं दुलहा सद्धममपहिषत्ती ॥ थावायमेत्तमहुरा विवामविरसा वियोवमा विसवा। थरुद्वमाण बहुनवा विबुद्दनणविविज्ञवा वावा ॥

एगामिस लोको कएण मोत्तव सासर्य धर्म । सेवेड श्रीवियत्थी विसमिव पार्य सहामिरश्री ॥ महिशोवि प्रणाउ घरमं घरमस्त फलं विधाणची ॥ मगुडको इव लोको तुच्छो इयरेण पन्नएण व । एत्य गसिअह सी वि ह इस्समायेय अनेगं ॥ एवं विहे वि लाए त्रिसपपसंगी महामोदी ॥ गहरेसणावरचवरगुषगुच्छं विषा गहीराध्री ।

दुवर्खं पावस्स फलं नासधी यावस्य दुविखमी निश्वं। सी वि ह न एस्य सबसी बम्हा अयगर कर्यवबसणी छि। संसारकृषकुहराउ निग्मनी नित्य जीवाणं ॥ भागं ताण कुणंति जीडियक्ता दासन्व मन्त्रे सरा । मार्चनादिवेलिंगसीदपप्रदा बहुवि वार्षं बसे ॥

🕟 🤥 मुख्य प्रतिपाद्य बांत्य, बोग, बेरोपिक, न्याय और बेदान्त वे पाँची दर्शन प्रात्वाही हैं अर्थान् कान की प्रधानना देते हैं। मान से ही सुकि भारत है। प्रकृति और पुरुष का भेदहान हो सौक्यमत में मोड रें। इसको वे विवक रुपाति कहते हैं। योगमत भी ऐसा ही मानता है। बरोपिक खोर स्थात कहत है। बरोपिक खोर स्थात कहत है। वरोपिक खोर स्थाय १६ परामी के तत्त्वमान से मोख मानते है। मावा का व्यावरण हटने पर प्रदानस्य का साहात्कार हो जाना का आवरण हटन पर अकार इत पाँची दर्शनों में ं शान हो मोल या मोल का कारण है। इस लिए झान ही सुख्य

भीमांना दर्शन कियाबादी है। उनके मत में बंद विदित कर्म रूप से प्रतिपाच है। ही जीवन का मुख्य जेय है। वेश्विहित कर्मी के अनुदान और ा जावन का मुख्य व्यव हो वश्वाहत करने क अञ्चल व्यव ्निपिद्ध कर्मी को छोड़ने से जीव को स्था खथवा सुख प्राप्त होता हो। अब्दे वा दुरे कर्मी के कारण हो जीव सुली या दुर्जी होता है। कर्मी का विधान या तिपेव हो सीमीमा दर्शन का मुख्य प्रतिप्राग है।

**जग**त

सांख्य दर्शन के अनुमार जगन प्रकृति का परिणाम है। मुख्य रूप से प्रकृति और पुरुष हो तस्व हैं। पुरुष चनन, निर्तित मुख्य रूप स अञ्चल जार जुड़न राज्य चार चुन्य चनवा, तालव निर्मुख तथा प्रद्रम्य नित्य है। महति बद्द, विगुर्गामिक तथा वरिगुमिनित्य है। सस्य, रबस्, श्रार तथम् तीनी गुला की वारम्माभागत्व व १९९२ । १९५० १९५५ १९मा शुमा अ साम्यावस्था में संमार प्रकृति में लीन रहता है। शुम्में से विषमता साम्यावाया होने पर प्रकृति से महत्तस्य, महत्तन्त्र में श्रहर्शुर श्राहि हान यर वर्णा अवस्थात क्यान म अवस्थार स्थान वाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, प्राँच हन्मात्राएँ, स्थेन

### ईश्वर

माजिय दर्गत देशर को नहीं सानता। योग दर्गन के शक्त-गत कर्मियांक और जनके फल काहि से व्यागृष्ट पुत्रन दिशोव देशर है। इनके सम में दूरत दास्त्रन्ता नहीं है। देशीयंक और परिव मत में दूषर दागन् का कर्ती है। वसमें श्वाठ गुरा रोते स्थाप (एक्स), परिमाण् (राममहन्) पुष्तक्त, मंदीग, विमाग, है, हम्बा और रामना।

मीमांतक ईश्वर को नहीं मानते। वेदान्ती मायाविष्यन्न रूप को ईश्वर मानने हैं।

#### जीव

मांख्य दर्शन में पुरुष को ही जीव माना गया है वह अनेक या विमु क्योंन् सर्व स्थापक है। मुल दुन्य स्थादि सब प्रश्ति के मैं हैं। पुरुष क्यानता के कारण अन्हें क्यना नमम कर दुन्ती होता है। योग दर्शन में और का स्थल्प मांच्यों के मचान ही है।

हैरोरिक तथा मैशायिमें के कानुगार शरीर, इन्ट्रिय काहि का क्षिप्रतान कात्मा है और है। इसमें १४ तुम्य है-कंप्या परिमाण, एपस्य, संबोग, विभाग, पुढि, तुम्प, हुम्य, व्यया, हेप्र, प्रतस्त, पूर्व, क्या सीर भावना नाम का मंदकार। इनके पन में भी और विश्व क्या साम्य है। सीमीमा दुर्गन के बनुनार मो बीव तिम, नाता, कर्या, कर्या, भाग्य है।

बेरामा के बनुसार बामात्ररात से युक्त हुए ही अप है।

### मोद्य साधन

सींदर और योग दर्शन में प्रकृति पुरुष का विरंक तथा वैधिक कींदी वैशायक मत में तस्वमान ही मीच का कारण है। मोजाब मन में स्वर्ग रूप मोजा का माध्य विधिद्देश कर्म का विद्वाल और विधिद्ध कर्मों का खाता है। येदान्व दर्शन में का वैदेशन और विधिद्ध कर्मों का खाता है। येदान्व दर्शन में कविशा कींद बढ़के कार्य का निद्यल हो जाता सोख है।

### श्रधिकारी

शंख्य रहाँन में संमार से विरास्त पुरुष की मोच मार्ग का प्रिकारी माना है। योग व्हांन में मोच का व्यक्तिकारी विशिष्ट पिप बाता है। ज्याद कोर वैद्यांतक दर्यान में दुस्तीजाराष्ट्र चर्यात दुश्क को ब्रोहाने को इच्छा बाला क्यांक मोच मार्ग कारिकारी है। मीमोसा रहाँन में कर्मच्छानक तथा बेरान्तरहाँन में मारज बहुद्ध सम्बन्ध च्यांक मोच मार्ग का बारिकारी है।

इम लोक तथा परलोक में भोगों मे विरक्ति होना, शान्त, हान्त, उपरत तथा ममाधि से युक्त होना, परान्य तथा भोज की इच्छा होना ये चार साधन पतुष्टय हैं।

वाद

संमार में हो तरह के परार्थ हैं:—(१) नित्य जो कभी उत्पन्न नहीं होते और न कभी नट्ट होने हैं।(२) क्षतित्य, जो उत्पन्न भी होते हैं और नट्ट भी होते रहते हैं।

हातित्व कार्यों की उत्पत्ति को अत्येक सत को अक्रियाएँ अस जिस हैं। सांस्य कीर योगसर्रात परिखासवारी हैं। इत सत

### यात्मपीरेगाम

षरी दर्शनों में चात्मा विनु है। वेदान्तदर्शन में चात्मा कहें और मानी मनों में नाना।

### ख्याति

कान नो तरह का है-प्रमास और अम। अम के सीन भेद है-भीरात, सिपरिय और खन्यधुमार। भिदेशतार कान को संग्रस मेरेत हैं। विपरित कान को विषयंत्र और खनिश्चित प्रमानकर कान को कान्यवुमारा कहते हैं। विपरीत कान के लिए राग्योनकों में परसर विवाद है। धोरेट में रुस्ती देख कर साँव ममफ लेता है। कान है। बार्स पर सभ होता है कि विपरीत कान लैसे होता है। विपरिवाद माय सभा मेती में कान के जबि प्रार्थ को कारस साता है। रस्तो में माँच का अम होते पर प्रभ उठता है कि याने साँच तहने पर भी उनका सात बैसे हुम्या है इसे अस उत्तर देशे के लिए राग्योनकों ने निष्ठ मिक्ष स्वादियों सात्रों हैं।

सांहव, पोन और भोगांमक अध्याति या विवेकाच्याति को मानत हैं। इतका कहता है कि 'वह साँद हैं इसमें तो हान मित हुन हैं। यह रसमें है और वह साँद। 'यह रस्कों है' यह स्त प्रत्यत्त्व हैं और 'यह साँव' हैं यह मान मरखा होतों हान सहें हैं। सामने पड़ी हुई रस्ता का हान भी मचा है और चहते तेरत हुए सांद का सरख भी मचा है। इत होनों हानों में भी दो हो खंश मान, उपमान क्षौर राष्ट्र । मीमांमक तथा घेदान्ती प्रत्यश्च, अनुमान, असाद, आगम, वर्षापत्ति श्रीर अभाष ।

#### सत्ता

पीतन को होइकर सभी उरोन मांसारिक प्रायों को बालिक मांसारिक प्रायों को बालिक मांसारिक प्रायों को सामित मांसारिक प्रायों को सामित हैं। ज्यान और वैशोषिक मांता को लाज मांसारे मांसारिक प्रायों में इनका रहना मांसारिक मांसारिक पानि यो जीर मोंसारिक बानि या सिवारिक मांसारिक बानि या सिवारिक मांसारिक बानि या सिवारिक मांसारिक बानि या सिवारिक मांसारिक मांसारिक प्रायों में स्वाया मीति मांसारिक मांसारिक प्रायों में स्वयाहार मी मांसारिक प्रायों में स्वयाहार मी मांसारिक प्रायों में स्वयाहार मांसारिक प्रायों में स्वयाहार मांसारिक प्रायों में मांसारिक मांस

#### उपयोग

प्रयोगिया प्रतार वा उनका मध्य मार्क्स कोने से वार्व प्रयोगिया प्रतार है। साम्याद कर वे का का हार्त क्या उन वर विशेष का समी वा प्रवार कर वे का कि हतने क्या उन वर विशेष का समी वा प्रवार है। देवा की वा प्रतार है। इस विशेष प्रदान है। इस विशेष प्रयोग से भी सीका योग देवा वा उत्तर हो है। इस विशेष प्रयोग से भी सीका योग देवा उत्तर हो। इस विशेष प्रतार का विशेष का तो वा प्रवार कर के लिए का से इस वा वा सिंप का उत्तर है। इस विशेष को उत्तर है। इस विशेष का विशेष का तो विशेष का तो विशेष का तो वा सी सी सी वा प्रवार है। का तो वा सी वा प्रवार है। वा वा सी वा

मतर्रो भाग (११७)

<sup>कृत</sup>, उपमान और शष्ट्र । मीमांसक तथा बेदान्ती प्रत्यत्त, व्यतुमान, <sup>दा</sup>मान, व्यागम, श्रयोपत्ति और श्रमाव ।

#### सचा

पेरान्त को होड़कर सभी दरांन सांसारिक वहार्यों को क्रांविक मंत्र अपीय परमाय मन मानते हैं। न्याप, और पेरेपिक क्ष्या के वार्ति में स्वार्य करा प्रवार्य के क्षांवे के हता करायां के वार्ति का क्षियों के हता के क्ष्या करायां के क्षांवे के क्षांवे का क्षियों के क्षांवे का क्षांवे के क्षांवे क्षांवे के क्षांवे के क्षांवे के क्षांवे के क्षांवे के क्षांवे के

### उपयोग

प्रापेक रहाँन या उनका घन्य वाहरूम होने से पाने करानी बचनोर्तमा सातार है। सामाराज कर से मारे कांन नाया दन वर लाने तर प्राप्ती के उपयोग पुराप्तीय स्वीत दूराने हैं। दूरा है। हिन्दु प्राप्त का करान पानी रानेनों से एक नहीं है। इस नियं उपयोग से सो सोहा सोहा सेर वह जाता है। सांत्र करांन कहांन सी पुरा का से मेरान कराना है। करान करांन महत्त है। होने का उपयोग है किए सी प्याप्ता । केरोन करांन मारान है। होने का उपयोग है किए सी प्याप्ता । केरोन करां क्या के करांत्र सामार्थ केराय करां है। होने करांन हो सांत्र करां करांत्र हों हो से सांत्र करांने हैं क्या नियं हो। करांत्र करांत्र हतांत्र सामार्थ करांत्र हो। हतांत्र सामार्थ करांत्र है करां के सामार्थ हो।

#### ਜਾਬਜ

धैद स्त्रीत में ममार को दु:खमय, चिवाक, मून्य व्यादि गिता गात है। इस प्रकार का चिन्दान हो मोज का सोधन है। गिता गात है। इस प्रकार का चिन्दान हो मोज का सोधन है। गुन्दों से ही शान्ति भाग होंगों है। जैन दर्शन में चंतर और बेत को मोज का मध्यम साला है।

#### श्रधिकारी

मौद्ध और जैन दोनों दर्शनों में संसार से विरक्ष महुन्य वेस्तहान का अधिकारी माना गया है।

### वाद

मार्थाओं से बस्तु नी ज्यानि के विषय में कई बाद मर्थानत है उनसे मुख्य कर से स्थापकार है कार्यान बानु को ज्यानि कीर विनास स्थापिक कर ने कार्यो ज्यार तेने एन है रहसार-बाद के तिसाद रह से कार्यानमध्याद, कार्युकार, कार्युक्तार, हताः ज्यारवार, कार्युकार्यो पार्चार, बट्यावार कार्यं, की स्थानत है।

बीड मनीव्यसमुन्यार को मानवे हैं। कार्यन कार्यन ने कन्यति से वामे रहता है कौर न बाद में। बस्तु का क्यूनर राज्य हो जन्मर है।

केत रार्तन बारमणार्यवार को भागता है। बादीन प्रचानि से वर्तने बार्य कार से अन् भीर कार्य क्या से बारन् रहता है। ष्ट धे बलु में विश्व हावरा विधि निरोध आहि हारा, परस्तर अंदिक्ष कार्ने हा जिससे हान हो उसे सममंत्री कहते हैं। यहाँ "अविकर" यह वास ज्यान से रकते चांच है। 'दामरूल' 'पीमरूल' 'पीमरूल' 'पीमरूल' 'पीमरूल' 'पीमरूल' में हमा है और अपने होता की हम निर्माण और किंद्रेग, इस होनी धर्मी का समावेद्य एक 'रासरूल' में हिचा 'पाई हो एक स्वा का सम्मूल के स्वा का हम का सम्मूल के स्वा का सम्मूल के स्वा का सम्मूल हम के स्वा का सम्मूल हम के स्वा का सम्मूल हम हम का स्वा का सम्मूल हम हम का स्वा का सम्मूल हम हम का स्वा का सम्मूल हम हम हम का हम होना पाई हो समझा था खा के स्व हम हम हम हम का हम सम्मूल हम के सम्मूल हम सम्मूल है।

अन्द्रा, संय उपयुक्त पाका को मी घर स्वीतिये-पामस्त ऐसा से बहा है चीर हीरासाल से जोटा है। जो ड्रन्ड मी दिवा में क्योंकी हम स्वत्व से तहीं रह तहीं। हमारा क्या यह हुआ कि रामस्त्र में पोत्र की करोजा बहारन कीर होगलाल की पोत्र होरासन वाका असा है। यह बारा लोट में अमिद्र है, सक्य है, बहु उक्त समित्री के स्वस्त्र में क्योंकर में पहिल्ली का रहार है।

भारतक भोज सबसे हैं कि बहायन और होतायन परस्तर क्षित्रक से माद्रस होते हुए भी किनती सरकता से एक जात हाते हैं। यहां हात क्या हाजों भमी का भी है। महले पत्त के पित्रक अंबते हैं। यर गहरा विचार करने से गर्व व्यंत्रत को प्यान में रहते से व्यंत्रक्क हो जाते हैं। वहाँ यह कहा जा सहजा है, कि हुद्रान कोर पहणान जो कार्योदिक पत्त हैं, व्यंत्रत कार्ति नहीं। के दूर कार की रह मान्ते हैं। यह कहता ठीक नहीं है। व्यंतिक वर्त कार की रह मान्ते हैं। यह कहता ठीक नहीं है। व्यंतिक

( e=u )

होई राष्ट्र ही नहीं है जिमसे पृथक् पृथक् सब घमी का क्यन किया जा सकता हो। श्रतएब इस रोप्ट से यस्तु को श्रवचारूय राष्ट्र से कह देना हो उपयक्त होता है।

सातवाँ भाग

पर जैसे धवकतत्य न मानता भूल है, जमी मफार एकट्स (महंया) अवक्रव्य मान लेना भी भूल ही है। क्योंकि ज्यारि क्लु धवक्रव्य है, फिर भी यह 'ख्रक्तव्य' मान्द से तो कही ही जाती है। अवक्रव्य शहर के हाम स्वच्य्य होने के कारण चलु को क्योंनिय ख्रक्तच्य पहल के हाम स्वच्य सहस ना चाहिए। धरणु को क्योंनिय ख्रक्तच्य कर्याच्य हम हम के से कहते भी जाए तो "मैं मीनी हैं" इस क्यान की तरह स्वच्यन से हो बाघा चायेगी।

इस प्रकार एक हो बस्तु में ब्रस्तित्व, नास्तित्व, ब्रस्तित्वना-सित्तव और श्रवहतत्रवन रहना मित्र होना है। ब्रागे के सीन भा भी क्षान भेर से समभ लेना चाहिर । विस्तार थय से उनका स्पद्वी करवा नहीं किया जाता। इस प्रकार सप्तमंगी न्याय स्पष्ट हो जाता हैं।

कर से यह मिद्धांत यहा ही विधित्र प्रतीत होता है, परन्यु बास्त्रिक सत्य हमी में है। हो हम में प्रयुक्त होने बाले करितव मासितक कारि के कार्यों का प्यान रखना चाहिए। मुप्तमिद्ध हार्य-क्तिक केटो ने कहा है—

When we speak of not being we speak, I suppose not of some thing apposed to being but only different.

भयोन् " जब हम बसता (नास्तित्व) के सम्बन्ध में इस इस्ते हैं, तो मेरा ज्याल है कि हम सत्ता के विरुद्ध नहीं कहते-सिर्फ बंग, स्वाहार इम प्रकार परस्वर विरोधी प्रतीत होने वाले न्तु बालब में श्रीवरोधी, धर्मी का एकत्र मगन्यय करता है और स्वीहर इस गया है कि जो पिरोध का मधन करे वही स्वाहार — विरोधमधन हि स्वाहार: ! "

स्रोवेष परिदार-स्थादाद के बास्तविक स्वरूप की भान-भिक्षा पूर्व सामदाधिक विदेष के कारण स्थादाद जैसे सार्थासदान्त ए भी भाषेप किये गये हैं। इस हम मंत्रेप में उनका दिन्दरीन स्पर्वेगे।

र पर्यकान्य सर्वपा क्रमेकान्य है या किसी क्ष्मेका एकान्य भी रे पाई सर्वपा क्ष्मेकान्य कर हो हो पाई। क्ष्मान्य हो सप्ता दिया वह सिवान्य कर क्ष्मेकान्य क्ष्मेकान्य हो सप्ता दिया वह सिवान्य क्षा क्षमेकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मिकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मिकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मिकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मिकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मिकान्य क्ष्मिकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मिकान्य क्ष्मिकान्य क्ष्मिकान्य क्ष्मेकान्य क्ष्मिकान्य क्ष्मि

इमहा ममाणत यह है कि क्रतेहाल न हो सर्वेया क्रवे-काल रुद है न सर्वेया फ्टान्त रुद हो। ब्रांक मर्देवन क्रतेहाल रूद बीर क्रवेनि एकाल रुद है। क्रांकाल हो प्रहाद हाई है (१) सम्बानेकाल और (१) मिष्या क्षेत्रहाल हो हो। क्रांक क्ष्माल से सम्बादाल और मिष्या फ्टान्त के मेह से हो क्षांका हाई हो जो मत्येष क्ष्मामा आहि प्रमाशों से व्यक्तिक क्ष्मल क्ष्मां का एक बच्च में बिलाहत कर ते हह सम्बन्ध क्ष्मतेक क्ष्मते क्षांकाल है। त्या जो मत्येष ब्राह्मियां से विषद क्ष्मेक फ्यांका क्ष्मी क्षांत्रिक स्थानक र्मन मिद्धान्त विद्यारह काँचा रूप

जैन पाटक्ट

[स्टब्ह्

No Wie tie are de tre mer t eria

यो तिरोद का सा अन्ति अन्य का ना

कान्फरेन्स की िडितीयावृत्ति र्मिक परीक्षा एतक के रूप

ेवह हमारे

उता में बोध न्फरेन्स से

क शिक्षण

।नि प्राप्त कर

## ः तिषयात्रकम् ः

ः विषयानुस्रम् ः	
१ सूत्रविमाम	
१) धम्मसुत्तं	
२) विणओ	,
३) तं वयं यूम माहणं	* * *
४) माणुस्सए भवे	1
५) माणुस्सए सरीरं	*
६) माणुस्सवा कामभोवा	*
७) जयन्तीसमणीयासियाए पन्होत्तराणि	
८) तिण्हें बुष्पडियार	7
९) जो खणइ सो पउइ	7
१०) पण्होत्तराणि	3
११) संघत्यई	٧,
१२) तित्थयरावली	Y
१३) गणहरावली	४६
१४) घेरावली	86
१५) वहणे जागणसुए	48
१६) विजये चीरे	Ęo
१७) मियापुत्ते	৬০
१८) संदए परिष्यायमे	७६
१९) इस अमचेरसमाहिठाणा	१०२
२०) मोक्लमागो	115
२तत्त्वविभाग 🔨 १) कर्मधाद'	
र्) कमयाय	1₹₹

. ₹₹₹

#### -० प्राक्कयन ०-

C

हमें परम प्रसप्ता है कि धार्मिक शिक्षण के लिये कान्करेस की ओर से तैयार की गई जैन पाठावली भाग ६ की यह दितीयावृत्ति कान्करेस की सम्मति से श्री तिलोकरत्त स्था. जैन द्यार्मिक परीसा बीड पाथर्डी द्वारा प्रकाशित की जा रही है। पाठपपुस्तक के रूप में जैन समान ने पाठावली का जो मूल्यंकन किया है वह हमारे लिये हमें का विषय है।

बासकों को जैन संस्कृति और जैन-सस्वज्ञान का सरश्रता से बोध कराने के लिये ऐसे सर्वमान्य पाठप-त्रम की मांग कान्करेन्स से होतो रहती थी। फलस्वरूप यह पाठावली श्री धार्मिक शिक्षण समिति द्वारा श्री संतवालती से तैयार कराई गई हैं।

बालक अपनी योग्यतानुसार उत्तरोत्तर धार्मिक ज्ञान प्राप्त कर सके इस तरह इस पाठावली के सात भाग किये हैं।

हम आधा करते दें कि जहाँ २ अभी तक इस पाठावली की अपने पाठाकम में स्थान नहीं दिया गया है वहाँ २ सभी स्कूल, पाठावाला और छात्रालय यद्यापीध्य इसे अपना लेंगे और बालको के कोमल हृदय पर जैन संस्कृति की गहरी छाप बालने में सहायक बनेगे।

### :: प्रकाशकीय ::

बस्मई निवामी दानवीर घमंत्रेमी श्रीमान् मगनलाल प्राणजीवन डोसी उत्साही और उदारन्यभाव के धार्मिक कार्यकर्ती से । आप पावर्डी परीका बोर्ड के सरकार सदस्य से और श्री अबोल जंन सिद्धानदाला समा श्री रत्न जैन पुनतकालय पावर्डी को भी आपका अब्दा सहयोग प्राप्त है। आपने अपने रहने के गाव टकारा (मौराष्ट्र) में श्रावकों के धर्मध्यानार्थ उपाध्य यनवाया है और भी अनेक तरह के दान धर्म आप सदेव किया करते से।

दानवीर धर्मनिन्छ थीपून गोहुज्दास शिवलालशी अजमेरा भी धम्बई में ही रहते हैं। आप भी पापडों बोर्ड के सर-हाक सदस्य हैं। महासती में भी रम्माजी में विदुषी थी गुमति-कुवरत्री में के सन १६६८ में करिताडों (सम्बई) चानुमित के समय आविल खाते में विषेप सहबोग देकर आपने उस साते का प्रारम करावा और २५०००) का दान देकर एक हॉस्टिल भी सम्बई में मुलवाया है।

धीमान् मगनलालजी डोधी ने ५०१) स्वयं और श्रीयुत्त गोजुल-दासत्री अने देश ने अपने पुत्र श्री छवीलदान नी के हमरणार्थ ५५१) स्वयं गायडी परीक्षा बोर्ड के पुत्तक अन्नागन विमाग में प्रदान क्रिये हैं। आप दोनों महानुशाबों के आविक सहयोग से इस पुत्तक स्वारत किया गया है। अत. आप लोग स्रोता. धन्यवाद के पात्र हैं।

# जैन-पाठावली [छ्हा भाग]

सूत्र-विभाग

## धम्ममुत्तं

धम्मो मंगलमुक्किट्टं अहिंसा संजमो तयो । देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥

अहिसमसच्चं च अतेणगं च तत्तो य यमं अवरिगाहं च । पडियन्जिया पंच महत्वयाणि चरिज्ज चम्न जिणदेसियं विद्री

> वाणे व नाहवाएउजा अदिशं वि न नायए ! साहर्य न मुसं यूपा एस घम्मे बुसीमओ !!३!! जरामरणयेगेणं युज्ञामाणाण वाणिणं ! धम्मो दीयो वहद्वा य गई सरणमुसमं ॥४॥

अद्धाणं जो महंतं तु अप्पाहेओ पवज्जई । गच्छतो सो दुही होइ छुहा-तण्हाए वीडिओ ॥५॥

एवं धम्मं अकाऊणं जो गचछुड वर्र भयं । गच्छतां सो बुही होड बाहीरोगेहि वीडिओ ॥६॥ अद्याणं जो महतं सु सपाहेओ ववजतर्ड । गच्छतों सो सबी होड एडस्नव्याध्यितिवयो Hou

अद्याण जा महत सु तपाहुआ ववज्ञह । गण्छती सो मुही होड एहा-तण्हाविवज्ञितओं ||७॥ एव धम्मं पि काळणं जो गण्छुट पर सव । गण्छतो सो मुही होड अपवक्रमे अवेवण ||८॥

### धर्म-सूत्र

(१) अहिंगा, गोयम, और तर कय, छने बहुच्य संयक्ष है। ब्रिगका सन गरा धर्म से एगा रहता है जने देव की नमाबार करते हैं।

(२) अहिता, तरव, सबीयं बळवर्च और अशिवह क्य योच महावती को अजीवार करके क्रिकेट देव द्वारा चर्चास्ट धर्म का आवाल करो।

(३) प्राप्तियों को हिमा नहीं करनी काहिए, अवस पहल नहीं करना काहिए, विश्व (नायानाय) और विश्वा बाक्स नहीं काना काहिए । यह नदीवधी का सर्व है।

Ϋ́

(४) करा (ब्हारा) और मन्य वे प्रवार से दूबने हुए प्रान्ति) के लिए प्रसं हीय कर (या दीय कर ) स्रातानक, स्रोनक्य, सीर जनस सरस्वय है।

(५) को स्पृतिन पार्चय (कार्म वा कोत्रय) निया दिला लाखे कार्य के प्रधान कार्मा है वह कार्मा हुआ कुछ और स्थास के दोहिन होकर मुखी होता है।

सा क्षाप्त कृत्य र प्रकार होता है। (६) इसी लाड़ को स्टब्स क्यों किये देशना ही परस्थ से कला है यह कला हुआ। स्टार्थ्य एवं देशने कर्यों किस होत्य दुखी

(%) को उद्देश बाब से सारह मेहर कार्ड कार्न से क्टान कार्य है वह बार्य हमा बुख रहात से सी इस कही. हात्य हुआ सुको हात्य हैं।

(८) हुनी लाह की त्यांका का बाक्याचार करने करनत से क्षाना है का कार्यकों वाता कीर देशका शिल होतर सुनी हारत है।

## विणओ

मूलाओ क्षंघप्वमयो हुमस्स खंघाउ पच्छा समृवेति साहा । साहाप्पसाहा विषहेंति पत्ता तओ य से पुष्कं फलं रसो य ॥

एवंधम्मस्स विणओ मूलं परमो से मोबलो । जेण किति बुपं सिग्धं निस्सेसं चामिगच्छड ॥२॥

श्रह पंचहि ठाणेहि जेहि सिवला न लब्मइ । यम्भा कोहा पमाएण रोगेणाऽऽलस्सएण य ॥३॥

आणार्ऽनिद्देसकरे गुरूणमण्**ययायकारए ।** पडिणीए असंबुद्धे अविणीए सि युच्चद्द ।।४।।

अभिन्त्रणं कोही हवइ प्यन्धं य प्कुन्यइ। मेतिन्जमाणो यमइ सुयं लद्भूण मन्जई॥६॥

पदण्णवादी बुहिल्ले यदे लुद्धे अणिगाहे । असंविमागी अचिमते अविणीए ति युच्छद्द ॥६॥

अह अट्टहि ठाणेहि सिबबासीलिसियुटचड् । अहस्सिरे समा बते न य मम्ममुदाहरे ॥७॥

माप्तीले न विसीले न तिया अङ्गलोल्पु । अकोहणे सच्चरए तिवलासीलिति बुच्चङ् ॥८॥

#### विनय

वृक्ष के मूल से स्कन्ध (धड़) की उत्पत्ति होती है, स्कन्ध से शासाएँ निकलती है, शाखाओं से प्रशासाएँ फुटती है, इसके

बाद पत्र, फूल, फल और रस उत्पन्न होता है। १ इसी तरह धर्म रूपी वृक्ष का मूल विनय है और इसका उरकृष्ट रस मोक्ष है। विनय रूप से कीति ( रूपी पत्र ) खुत ( रूपी फूल ) और सम्पूर्ण इलाप्य पद की प्राप्ति होती है । २ निम्मलिखित पाँच कारणों से जीव ज्ञान प्राप्त करने से असमर्प होता है .- अहकार, कोछ, प्रमाद, रोग और आलस्य । ३ गर्जनों की आजा के अनुसार कार्य नहीं करने बाला, उनके समीप नहीं रहने वाला, उनके विषरीत वर्ताव करने वाला

कोर अबिवेकी-उनकी घेष्टाओं को (इंगित को) मही समझने बाला अविनीत कहा जाता है। ४ बारबार क्रोध करने बाला, प्रबंध करनेवाला, ( एक दूसरे

की गप्त वार्तों को प्रकट करने वाला ) मित्रता करके छोड़ देने वाला और शास्त्रों का मान करके अभिमान करने बाला ( अविनीत कहा जाता है।) ५

श्रतिवाचाल, होही अभिमानी, लोभी, इन्द्रियों की बदा में नहीं करने वाला, माप्त वस्तुओं का विमाय न कर अकेला ही भोगमें वाला और अमीति करने वाला अविनीत ( अक्संध्य शील ) कहा जाता है। ६ निम्न आठ कारणों से जिलाजील (शानी)कहा जाना है-

बारबार नहीं हुँसने वाला, सदा इन्द्रियों का दमन करने थाला, मर्म (रहस्य ) प्रकट न कन्ते वाला, सरावारी, अता-बार न करने बाला, अलीलपी, कीय नहीं करने बागा और साय में सन्दरन रहने बाला, विसातील बहा बाता है। ७-८

जहा सागदिओ जाण, समं हिच्चा महापहं। विसमं मगामोइण्यो, अवलं भगामिम सीवर्ड ॥९॥ एवं धम्म विजयकम्मं अहम्मं पश्चिविज्ञिया । वाले मरचमहं पत्ते अपले मार्ग व सोवई ॥१०॥ जहा य तिन्नि याणिया मूल घेतूण निग्नया। एगोऽस्य सहइ लाभं एगो मूलेण आगओ ॥११॥ एगो मूलम विहारिता जागओ तत्य याणिओ । वयहारे उपमा एता एव धम्मे वियाणइ ॥१२॥ माणुसत्तं भवे मूल लाभो देवगई भवे । मूलच्छेर्ण जोयाण नरग-तिरियवत्तर्ण ध्वं ॥१३॥ जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियक्तई। अहम्म कुणमाणस्स अफला जति राइओ ।।१४॥ जा जा बच्चइ रवणी न सा पडिनियत्तई। धम्मं च कृणमाणस्स सफला जंति राइओ ॥१५॥ जरा जाय न पीडेंद्र वाही जाव न यह्दह । जाविदिया न हायंति ताय धम्मं समापरे ॥१६॥ मरहिसि रायं ! जया तथा या, मणोरमे कामगणे विहास | 'एक्को विधम्मो नरदेव! तार्ण, म विज्जई अन्नमिहेह किचि ॥१७॥ -महाबीरवाणी ६-१५

(६) जिस प्रकार गाडी वाला समान राजमार्गको छोड़ कर गाडी को विषम मार्गपर ले जाता हुआ धुरी के मन्त होने

पर शांक करता है।

पर जाल करताहुँ। (१०) इसी प्रकार जो अज्ञानी धर्म को छोड़ कर अधर्म को स्थोकार करता है यह मृत्यु के समीप आने पर धुरी के मन्त्र हो जाने से गाडीबान की तरह पडचासाप करता है।

हा जात ते पाढाजा का तरह पर्यापाप में प्राह्म है। (११) जिस प्रकार तीन स्थापारी मूल धन लेकर घर से निकलें। एक लाम प्राप्त करके आता है और एक मूल लेकर ही।

लोटा। (१२) तया एक श्यापारी मृत धन को भी लोकर वापस आया। यह व्यायहारिक उपना धर्म के सम्बन्ध में भी जानी।

(१३) मनुष्य मब मूल धन के समान है और इससे देव-गति मिलना काम है। जो जीव नरक और तियञ्च गति योग्य कर्म करते हैं वे निरुचय से अपने मुल धन को भी खो देते हैं।

(१४) को जो राग्नि स्पतीस हो जाती है वह वापस नहीं सौटती। (गया हुआ समय वापस नहीं आता)। अधर्म करने

होटतो । (गया हुआ समय वापस नहीं आता ) । अधर्म करने बाले जीवों को राजिया निय्मल जाती है । (१५) जो जो राजि य्यतीत होती है वह बायस नहीं

(१५) आ जारात्र य्यतात हाता ह यह यायस महा सौटती। धर्म करने वाले जीवों का रात्रियों सफल होती है। (१६) अब तक बुढ़ापा पीडित नहीं करता, रोग नही

(१६) अब तक बुदापा पीडित नहीं करता, रोग नहीं बद्देते और इंद्रियों की शांकत क्षीय नहीं होतो तब तक धर्म का आवरण कर सेना पाहिए।

(१७) राजन् । मनोरम काम गुर्गो (विषय-घोगों) को छोड कर क्लिसे समय (जब कथों) मरना तो पढेगा ही। है नरदेष । उस समय केवल धर्महों प्राण कप होगा, प्रकार कुछ भो प्राप्त कप नहीं होगा। —महाबोर वाली रू-१५ आणानिद्देसकरे गुरूणमृववायकारए । इंगियागारसंपन्ने से विणीए ति युच्चइ ॥९॥

जह पत्रसाहि ठाणेहि सुविणीए ति वुच्चइ । नीयावित्ती अचवित्र अमाई अनुकहले ॥१०॥

जस्सतिए धन्मपयाह सिवले तस्संतिए वेणहय पउज्जे । सक्कारए सिरसापंजलीओ कायग्गिराभो! मणसाय निच्चं। ॥ ११॥

यंभा व कोहा व मयप्पमाया गुवस्तगासे विणयं न सिवले स्रो चेव उ तस्स अमुद्दमायो फलं व कीयस्स यहाय होइ । ॥१२॥

> विवसी अविषीयस्म संपत्ती विणीयस्स य । जस्सेवं दुर्शी माय मिनलं से अभिगष्ट्य ॥१३॥

तुर की भारत के अनुवार कार्य करने कावा, नुरक्षों के संकीय रहने वाला, और उनके इति की (केट्याओं को) समाने

कासा दिनोत "हा लाण है ( गवीर ) । ९ निस्त पहुर स्थानों से मुक्तिन कहा जाता है- नम्मवृत्ति,

श्रवारा, श्रवाची (तरात) श्रदुतुरुती : १० श्रवार ठोडी सी मून की भी दूर करने बाला, कीय की

कृष्टि म करने बाता धवाय (पराय-मेंद) नहीं करने बाता, सब के साथ विजता करने बाता, साहज पहुंचर महिमान नहीं करने बाता,

हिनों के दोवों का घडा कोड़ करने वाले नित्रों पर कोप नहीं करने काला, शश्चि नित्रों के नित्र एकाला में भी कस्याणकारी कोलने काला.

क्षातन चाना, शतह प्रोर तागडा-चमांद को छोडमें वाला तामी भूमोम, सटम को राज्या दोला और एकाव स्पर्दन मुदिभीत कप्रकास है २० ।

जिनके सभीप धर्मशास्त्रीं का सम्मास करें जनके धरित सदा विजय का प्रयोग करना काहिए। हे शिष्यां कामें, कामो धीर मन के द्वारा, निग्य अर्जीत और कर मस्तक शुका कर जनका सरकार करना चाहिए। ११

लो प्रतिमान के बारेंगे, कींग्र, के कारण, यह के कारण प्रोर प्रमाद के कारण गुरू के सभीप दिनय की तिशा शहण नहीं बंदता है। (दिनय नहीं करता है) अवाद शहू कांग्र उसी तरह उसके आहित के निष्ठ होता है जिस प्रकार कींच्या युद्ध का क्रम

इसने हो विनास के लिए होता है। इर जीवनीत को होने चाली विचलि सोर विनीत को मिसने बाली सम्पत्ति (मुत्त) को इन दोनों को जिसने जान लिया है यही सिला प्रस्त करता है। इह

महाबीर बाणी ४६-५४

तं वयं वृत माहण

जो न मज्जह भागन्तुं, पद्ययंतो न सीपई।

रमइ अञ्जबयणमि, तं यय युम माहणं ॥२०॥

जायस्य जहामद्र, निद्धतमल-पावगः। राग-दोस-भवाईय, तं वर्ष ग्रम माहण ॥२१॥ तवस्तियं किसं देतं, अवधियमत-सोणिय । मुख्यय वत्तनिख्याणं, तं वय यम माहण ॥२२॥ समयाणे विद्याणिता, सगहैण य धावरे । जो न हिसइ तिबिहेणं, त वय यूम गार्ण । २३ कोहा वा ऋड वा हासा, लोहा वा गई वा भवा मुलं न वयद् जो उतं वर्ष युग माहण । रिक्षा चिरामतमधिरा या, अप्य या जड वा बहु। स विकार अवसंजे, त वर्षे ब्रम मार्ड्स । ३५॥ हिन्त्र मान्त्र-तेरिस्ट, जो म रोवह मेहन । मगना कार-बारेग, त यह बुध माहण ॥२६॥ त्रश पोप्त की कथ, तीवजिल्ला बाहिसा। एवं सन्तिन कामेरि, त वर्ष बुन माहणे ॥२०॥

### तं वयं चूम माहण

( हम उसे बाह्मण कहते हैं। )

को श्वाजनादि में बासबत नहीं होता है, प्रवजित होकर (कटरादि के बाने पर) शोक नहीं करता है, तथा जो प्रशापुरवीं के वधनों में रामण करता है वसे हम बाह्मण वहते हैं - द० जिस प्रकार शुद्ध किया हुआ सीना मेंक परित होता है इस प्रकार जो मन और पाप में परित होता है तथा रागों य

और मध से परे होता है. जसे हम बाह्यन कहते हैं १२१ को तरस्वी कुत-सरीरबाला, जिल्लीहम, तब के द्वारा मांत शेर सून की मुझा देनें यागा, मदाचारी और क्यांचों को सद्ध करने से शासित में मान करने बाला होता है. वसे हम बाह्यन

कहते हैं। २२

को हलन-चलन करने चाले जीवों और स्वायर ( पृथ्वों ध्या, तेन, बायू और दनश्वति) जीवों को आनस्य मन, वध्य और कामा में जनकी हिता नहीं करते हैं, उने हम आहाण कहते हैं। जो जीवा के बना, गांच के बना, कोस के बना, वा सब के बन होक्स मिथान मायण नहीं करता है, उने हम बाहाण कहते हैं। स्वित्वत्त ( वेतना बाले पन, आदि ) या अधिन, भोड़ा या बहुत जी विना विद्या हुमा (दिना हुक का) मुझे हेता है उने

हमें बाह्मण कहते हैं। रें ५ को देव मनुष्य और तिसंध सम्बन्धी मैन्द्रन का मन, यदन और काया के द्वारा सेवन नहीं करता है उसे हम बाह्मण कहते

और काया के द्वारा सेयन नहीं करता है उसे हम ब्राह्मण कहते हैं। २६ जिम प्रकार कमल जल में उत्पन्न ब्रोकर भी जल से लिख

ाजन प्रकार कमल जल में अपने हाकर या जल सा जिल्ल नहीं होता है इसी सरह जो काम भीगों में लिप्त नहीं होता है, उसे इस बाह्यण कहते हैं २७ चन्त्री पूर्व मुख्यक्षित्, अभवत्त्र भौतन्त्री । अनंतर्भ सिहत्पन्, न वत् युन भारणे । १८)

म'रन्स प्रवस्ता सं नार्मन व अधी । हा न पन्तर मन्त्र च चप्रसम् धात्रण ०२९)

म वि मृत्रिन्त सवगा, म ध(सारेल धनगर। म मूर्नी क्याचारीच कृत भीरण म माद्या ॥३१ ममयागु मनभी श्रोद, यनवेरेण बनभी।

मार्चेन मुनी होड, तवेग होड मावमी (१३२)।

बन्धमुना सनयो होइ, बन्धुया होइ लश्सियो । बहसी बाह्युया हाइ, मुद्दी हवह बाह्युया ।[३३]]

एवं गुणसमाउता, जे भवति दिअसमा । ते समस्या समुद्धनुं, परमध्याणशेय स । ३५०

बसरा० अ० २५ में से

1

को लोलुपी न हो, निर्दोष चृत्ति से जीवन निर्दोह बाला हो, जो गृहस्यों में आसदत न हो ऐसे अकिञ्चन ( रिग्रही ) स्वामी को हम क्राह्मण कहते हैं २८

त्री हत्री पुरुष आदि के स्तेह पैदा करनेवाले पूर्व सम्बन्धें सो, जाति-पिरावरों के सेल-जोल को तथा वग्य-जोर् को एक बार स्थाग देने क बाद फिर उनमें किसी प्रकार को आसिवत नहीं रखता वोवारा काय भोगों में नहीं फैसता उसे हम ब्राह्मण कहते हैं। २९

सिर मुंडा लेने मान से कोई समय नहीं होता, ' कोम् ' का जाव कर लेने मात्र से कोई बाह्मण नहीं होता, जिसेन यन में रहने मात्र से कोई पान नी होता, जीर न कुछा को बने हुए सहत्र पत्रन लेने मात्र से कोई सपस्ची ही ही सकता है। ३१

समता से श्रमण होता है;बहाचर्च से बाह्मण होता है; ज्ञान से मुनि होता है; और तन से तनस्वी बना जाता है। ३२

मनुष्य कर्म से ही ब्राह्मण होता है, कर्म से ही दात्रिय होता है कर्म से होर्थम्य होता है, और शह भी अपने हतकर्मी से ही होता है। ( अर्थात वर्ष-भेद अपन से नहीं होता। जो जैता अपना या बुगा वर्ष करता है, यह यैसा ही ऊँचा नीचा हो खाता है)। ३३

इस माति पवित्र गुणों से गुश्त जो द्विजीत्तम (शेष्ठत्राह्मण) है, बारतव में वे ही क्षपना तथा दूसरों का उद्धार कर सकने में समय है। ३५

# माणुस्सए भवे

माजुरसए भवे मणेग जाइ-जरा-मरण-रोत्-सारी माणसप्याम-दुवल-येयण-यसणसतीयद्वामिमूए, आ अणितिए, असासए, संशन्भरागसरिसे, जलबुख्यसम क्रसम्मजलबिंदुसिन्नमें, सुविणगर्दसणीवमें, विकाल्या सं अणिक्चे सङ्ग-प्रश्म-पिद्धंसणधामे, प्रा

माणुस्सम सरीरं

माणस्यम सरीरं दुवसायमणं, केत. अद्विषकट्टद्वियं.

अवस्त विष्पजहियाचे भविस्सा ।

महिषमदं व

### मनुष्य भव

मनुष्यमञ्जलकं जन्म, जरा, घरण, रोग; शारीतिक-मानितिक अत्यत दुःल, बेदना, सक्ट, उपद्रवादि से स्थाप्त, अझ्ब, अनित्य, अतारद्वत, संघ्याकास में आकारा के रण के स्थान, यानी क बुल्युले जेगा, कुशायपर स्थिर जलविन्दु लेसा स्थान दर्शन के उपयायांग्य, विद्युत्ना क्वल, अनित्य, एक्न गलन विध्यसन स्ववाद वाला;ऐसा यह मनुष्यमञ्ज यहिले या पीछे अवस्थित छोडने योग्य होगा, ( छोडना पदेगा ) ।

## मनुष्य-शरीर

मनुष्य दारीर हु, बाधतन है, विविध व्याधियों का स्थान है, । हुई। रूप काठ से निमित, नसे और स्नायु जाल से बैटित विट्ठी के वर्तन अंगा दुवंच, अद्युधि से विरुद्धणे, जिसका काव कभी पूर्णन हो ऐसा, युद्धस्यपुत्रत, बीर्णयर जैसा सहन-ससन विज्यान स्वभाव बाला, युधे या यस्त्रात् अवस्य छोडने योग्य होगा, ( छोड़ना पडेगा )।

### मनुष्य के कामभोग

सामृत्य कावनीम अपवित्र. अझारबत, जिसमें से समन् वित्त, रलेंदम, राक (योध), लोडु यवता है; ऐसे झरीरमें सल, मूत्र, रलेंद्रम, सेडा (त्राक का मंत्र). के वित्त वीच योध और लोडू से उत्पन्न होने वाले अमनीम दुगेंद्रों मूल और सडे हुए वीचे पूरित, मूर्वे के गण्य सा उच्छ्वास और अर्जून निश्वास से लोगों के जिल्ला करने वासा, स्रोमत्या, अप्यकातिया, लहुमारा, कलमलाहियास-युक्तवहुजणसाहारणा, परिकिल्स-क्रिट्ट्युक्सारुझा, अपूर्वानिने विद्या, सद्यासहुगरहिण्डा, अर्णतसंसार-सद्याः क्र्युक्तलियाराः स्ट्रान्स्य अपूर्वसाणदृश्या-पर्वाधार्म निद्धमार्गयाराः ।

> -मगयतोसूत्र शतक **९** जमालो अधिकार-

जयन्ती-मनणोतानियाण् वण्होत्तराणि

त्रम् वा मा त्रवनी मानगाथां गया समजन्म भगवासे बहार्वाण्टम अत्रय अन्य सीरचा निगम्म हरु गुरु शामा बाग्य महायोरं वरहः नमगर। धीरता, नमनि । सुनं

क्यामी: -सुनसं भने । साहः जागस्यका साहः ?

अपनी । जनगढ्या व भीवाण मुसम मारू, अन्ये •

स्याः जनसम्बद्धाः जायाम् मुख्यं सार्ट्र, अय्यः द्वयाम् सोदाम् अस्तरियम् सार्ट्रः ।

से केमई क चते ! तृत बुश्चद ! प्रश्तेतस्थाण आर्थ

## -**डि**ट्री-भाग )

**उद्विग्त करते बाला, घोमरस, अल्पकालीन,** झरीर की अञ्चिहीने से इ.सक्य और अब्धा परिधम और इस से प्राप्त होने बाला, कड़फ

बले घासको पूलीको तरह दृख बन्य वाला, म रूप ये काम सीग है।

उस काल में बह जयाती श्राहिका श्रंम

श्रीर से धर्म मुनकर, दिल में धार कर, हॉयत-सन धगवान महाबीर की धग्दन-- नगस्त्रार करते स्कार करके इस प्रकार योजती है --

प्र० -- हे भगवन् ! होना अच्छा व

जवन्ती आविका के प्रश्ने

च० ∽जपन्ती! कितने∉ सीवी का

कितनेक जीवो का जगना 3 प्रव -हे भगवत्। ऐसा वयों फरमा

का सोना अब्छा और विसरी

जयती । जे इमे जीवा अहाम्मया अहामाणुषा अह-हिमद्वा अहम्मवत्याई अहम्मवतोई अहम्मवत्यज्ञसाणा अह-हमसमुदायारा अहम्मेण येथ विक्ति कर्षमाणा विहर्षति, एएति ण जीवाण मुक्तत साह । एएण जीवा मुना समाणा नी बहूल पाणाण भूवाण जीवाणी सत्ताणं हुबन-णयाए सीवणयाए जाव परियायणयाए बहुति, एए णं जीवा सुना समाणा अत्याणं वा पर वा तदुमयं या नो बहुहि अहिम्मयाहि संजीवणाहि संजीएतारी भवंति, एएति जीवाण सुन्त साह ।

जपती ! जे इमे जीवा धिम्मया धम्माणुवा जाव धम्मेणं चेव विति करपेमाणा विहरंति एएति णं जाव जीवाणं जागरियत साह । एए णं जीवा जागरा समाणा सहणं पाणाणं जाव सत्ताण अदुबलण्याए जाव अविर-यावण्याए यद्देति ते ण जीवा जागरमाणा अप्पाण चा पर वा तद्भय वा बहुहि धिम्मयाहि संजीयणाहि संजीय-णारो भवति । एए ण जीवा जागरमाणा धम्मजागरियाए अप्पाण जागरइतारो भयंति, एएति णं जीवाणं जागरियासं साह। – जबस्ती! जो जीव क्षधर्मी, ब्रधर्मीचग्ण वाले, जिनको अधर्म ही इप्ट है, अधर्म कहने बाले, अधर्म देखने वाले. अधर्म में दिन रहने वाले. अधर्म में स्रानन्द मानने वाले और स्रष्टर्मसे जीशिका करने बाले जीवों का सोना ही अच्छा है। ऐसे जीव सोवे रहते पर बहुत से प्राणी मृत, जीव, सस्य की इ न नहीं देते हैं, शोक नहीं कराते हैं यावत सताप महीं पहुँचारे हैं। एसे जीव अधते होने से अपने को दसरों को और उमय को अधर्म के विविध कार्वों में नहीं लगाने हैं अतः ऐसे (अधर्मी) अधि का जंधना (मीये रहना) अच्छा है। जयन्ती! जो जीव धर्मी हों, धृत रूप धर्म मार्ग में चलने वाले हों, यावन धर्म नीति से आजीविका चलाने वाले हो, ऐसे जीवों का जातृह रहना अच्छा है। ऐसे (धर्मी) जीव जागृत रहने हे यावत सरवीं को दु.स-संताप नहीं देते है। हं (धर्मी) जीव जागृत रहते निज को, पर की सब उमप (दोनों) को अनेक धर्म साधनों में जोइते है ऐसे (धर्मी) जीव जागृत होने से धर्म जागरिकः द्वारा अपनी आत्माको जामृत रखते है। ऐसे

जीबो का जागृत रहना अच्छा है।

## निग्हं दूरपहियारं

तिण्हं दृष्णिदयार ममणाउमा ! तं महा :--

२ महिस्म ३ धम्मायरियम्स

१ संपाओ वि य ण केह पुरिते अन्वावियरं सवयागः महस्तवागिति तेलेहि अवगोता सुरिमणा गंग्रहुव्यं उथ्यः द्विता उदगैति मञ्जावेता साथालंकारविष्मायं करेता मुगीण्यं वालीवागगृद्धं अहारस यतणाउलं भोषणं भोजा-

मणीणं वाजीवागमुद्धं अट्रारस यतणाउलं मोअणं भोआ-वेसा जायज्ञीयं चिद्वितिश्वसिया से पश्चिट्टंडजा सेणार्थि सस्य अम्माण्डिस्स हुर्जाश्चमार मथह। अहे ण से तं अम्मा

पियरं भैवलिपन्नते धन्मे आवयहना पन्नवहत्ता परूपहत्तां ठायहत्ता भयहतेणामेव तस्य अन्मापिउस्स मुपडियारं मयह। २ समगाउत्तो। भेड महत्त्व दरिहं समुपक्तेण्याः तएणी

से बरिहे सम्बिक्त समाणे पराग्य पुरं च णं विजलभोगम-निए समन्नागत् यात्रि विहरेजना तए ण से महत्त्वे अप्रया-क्याइ बरिहे हुए समाणे तस्य वरिहरस अंतियं हृद्य-मागरुष्ठेजना तत् णं से बरिहे तस्स महिस्स सध्यस्स वि

वलयमाणे सेणावि तस्त बुष्विधारं मध्द । अहं णं से भट्टि केचिविवमते धम्मे आध्यदता पर्यवस्ता ठायदत्ता हें आयुष्यमन्तं थानतो तिनं प्रकारं के दुष्प्रतिकार (जिसके उपकारया बदला देवर उर्देश न हो तक) हैं ये इस प्रकार ---

१ माता-विता का ∽

२ स्वामी (मालिक) का 🕶

। धर्माश्रापं का -

प्रभात काल म हो कोई पुरव अपने माता-रिता को दात-पाक सहरवण होत से माहिस करके मुगन्धी योडी हता कर तीन प्रकार के पानी से हमान करा कर सब प्रकार के बहुन. अलंडार में विन्दित करें और मनीत मुश्दर गुद्ध पर्याखित पानी भेपनाये हुए रृद्ध प्रकार के साथ पाला मोजन लोगा कर आली-वन अपनी योड पर बंडा कर किरें जनमें भी यह माता दिता का व्यापन न हो सके, परमु प्रदि यह माता-पिता को के यहने प्रक-तित धर्म कहें, बताबे, मन्दें और जन (धर्म) में स्पाप (सामुख करें) तो वह माता-पिता का गुवनिकार (जन्मण) हो सहसा हो।

इन्हिं आवृद्यमान समर्थों । कोई महावृद्य किती विद्या निर्मा विद्या निर्मा विद्या निर्मा विद्या निर्मा विद्या निर्मा विद्या निर्मा निरम निर्मा निरम निर्मा नि

३ केंद्र तबाक्यममणस्य या माहणस्य वा अंतियमेर मिव आरियं घरमं सोउत्ता निमस्य कालमासे कार्ल अन्नयरेमु वेवलीएमु वेवलाए उपवन्ने । तए णं ते वेवे प्रस्मापरियं कुम्मिक्नाओं या वेताओं मुक्तिकार्ल साहरेज्या कताराओं वा निकत्तारं करेज्या बोहकार्लि बा रोगातकेण अनिमूचं ममाण विमोइज्या नेलायि ... घरमावरियस्स ब्लाइयारं प्रय । अहे ण से सं ... यारिय केवलिवण्याओं घरमाओं मह समाणं मुज्जों केवलिवम्नते घरमे आयबदत्ता जाव ठायदत्ता मयद तेणां मेव तस्स प्रस्मापरियस्स सुप्याद्वियार मयद ।

-धीस्थानांग सूत्र सतीयस्थान १६३-१६४

## जा राणइ सो पडड़

इह आति सतंतपुरे परोपपर नेह.निश्मश निसा लित्तय-महिण-वाणिय सुष्पण्यार ति चत्तार ॥ १ ते अत्यविद्यविणत्य चिल्या देततर नियपुराशो पत्ता परिष्ममंता भूमिपइट्टाम नवर्राम ॥ २॥ रयणोए तस्त याहि उज्जाणे तहतलाम पातता ॥

3-- कोई तथात्य के स्थमन या मूनि से बार्च धर्म का दूत भी वधन मुन कर हुदय में धार कर, सूख समय काल रुसे कोई जिल्ला देवतीक में देव बना। तरदर्धात् मुह देव धर्मा-बार्च को दुसिस वाले देता से मुमिश्त प्रदेश में छादे, धोर बरुवी में पार उनारे, रोर्च काल को रागना से छुदावे तश्वि धर्मावार्च में उपकार का यहना मुक्ते नहीं, पम्मु यो धर्मावार्च केत्रली-स्वित धर्म में कदाधिन, भ्रष्ट हुए हों तो उनको पुतः केस्ली-स्वित धर्म महे, धावत् धर्म पर स्वापे-स्थित करे तसी धर्मावार्च हा मुख्तिकार (उपकार का बरला) हो सके।

ठाणांग सुच ठाणा ३

# जो खोदना है सो गिरता है।

यसन्तपुर नगर में परस्पर स्तेह से घरै हुए द्यात्रिय, ब्राह्मण, क्षणिक् और स्मर्णकार (सुनार) ये चार मित्र रहते ये ।

षेधन कमाने के लिए अपने नगर से देशान्तर में जाने के लिए निकले और पूमते २ मूमिप्रतिष्ठित नगर में आगे।

बंदात्रि में उस नगर के शहर उद्यान में वृक्ष के मीचे सोवें। उनमें में प्रथम प्रहुद में अधिय जायता रहा। पैच्छइ तहमाहाए पलवमाण म्यण्यप्रिमं मी ।

विस्तिमणेण भणिपं अर्थण मी एम अत्योति ।' ४ कणमपुन्तिण गलरामस्यि अत्था पर अणस्यजुओ ।

तासित्प य्राज्य एव ताअल अम्ह॥५॥ बील नाम जम्पद माहणा मो वि विच्छद तहेव तड्यमि वाणिजी त दृग न ल्यम् तिमि ॥६॥ जागइ चउत्य जामे सुवण्ययारी सुवण्यप्रसितं।

दरूण विस्टियमणी मणइ इम एम अत्यो लि ॥७॥ पुरिमेण जीवयं एस अतिय अत्यो परं अणत्याजओ। जंबद्द सुवण्यवारी न होड अत्थी अणम्धामधी । ८॥ पुरिसो जवद तो कि वटामि ?वडसुसि जंबद कलाओ

परिओ मुबण्णपुरिसो छिदद सी अगुलि तस्स ॥ ९॥ सद्राए पविषत्तो सुवण्यप्रीरसो मदण्यपारेण ! गोमंनि परियम ते मुबण्णयारेण तो भणिया ॥१०॥ कि देमतरमन्णेण अस्य गृत्यावि इसी कणयपुरिसी खड़ाइ मए खिसो त गिण्हह विमित्रित्र सब्बे ॥११ तो सब्दे <sup>वि</sup> नियसा अंगुलिकणगेण भरामाणेउ ।

धणियो मुख्यमधारी य दोवि पत्ता नवरमञ्जे ॥१२॥ चितियमिमिहि हणिमी वितियमाहणमृत् उचात्ल । अस्ह विय दुण्हि जणे होइ एमी कणयपुरिसी ॥१३॥ **छ्हाभाग)** (२५

उत्त क्षत्रिय ने युश को शाया में लटकते हुए स्वर्ण पुरुष को देखा। आदवर्य-विकत मन से यह बोला-' यही घन हैं"। उत्त स्वर्ण पुरुष ने कहा कि घन तो है लेकिन अनर्पपुकत

हैं। तय क्षत्रिय ने कहा कि यदि ऐसा है तो हमें नहीं चाहिये। दूसरे प्रहर में याह्मण जागा। उसने भी उसी तरह स्वर्ण-पुरुष को देखा। तीसरे प्रहर में यणिक् जागा। यह भी उस स्वर्ण-

पुरुष को देख कर उसमें लुब्ध नहीं हुवा।

चीयं प्रहर में मुनार जागा। उसने स्वर्ण-पुश्य को वेला। यह उसे देश कर आदवर्षयकित होकर योला कि पही धन है। उस स्वर्ण-पुश्य ने कहा धन तो है मगर अनर्थयक्त है।

उस स्वण-पुरुष न कहा धन ता ह भगर अन्यपुरत है। तब मुनार कहता है कि धन अन्यपुरत नही होता।

तय अस स्वर्ण पुरुष ने कहा- तो क्या गिकं? सुनार ने कहा-हो गिरो । स्वर्ण-पुरुष नीचे गिरा । यह सुनार उसकी

क्रान्तियों की काटता है। स्वर्णकार ने उस स्वर्ण-पुरुष को बाद्वे में (सुरक्षित) रक्ष

स्थापकार ने देस स्थान पुरासत) रहा दिया। प्रातःकाल जय मित्र आगे जाने रूपे तब मुनार ने कहर-

अब देशान्तरों में पूपने से बया लान ? यही पर स्वर्ण पुरुष प्राप्त हो गया है। भैने उसे कहुं में रस दिया है। उसे क्षर सब जायस में बोट लें।

तब वे सब सीट गये। उस करी हुई अंगुली के स्वर्ण से बीजन साने के लिए बिनक् और सुनार बोनी नगर में गये। उन्होंने सीचा कि यदि किसी उपाय से हम स्वत्रिय और

उत्ता साथा का याद किसा उपाय संहम क्षत्रिय और बाह्मण पुत्र को मार ढार्के तो वह स्वर्णे पुरुष हम दोनो काही हो जायेगा। भूनूण सय मण्डो सनात्या गहित्रमुमुसंबीला । प्रांत्तय-माहणभूगा विशिवस्य भीवण येतुं १११४। माहि हित्हि त येत्र चितियं कि चिरं दिवा मासे । मुक्ते ति भवतिहि दुन्निव लागेण निगाहिता । १५॥ विश्वितस्स मत्ते भूजिक्षण दिय-कृतिया विश्वाबद्धा । इस एसा पाविष्ट्री पाविष्ण वावस्तरेणं ॥१६॥

श्री जिनागमकवासंवह ९५-९७

## पण्होत्तराणि

सामाइएण भंते १ जीवे कि जणवड़ ? सामाइएणं सावज्जनोगविष्ठं जणवड़ । चडवीसस्थएण भते ! जीपे कि जणवड़ ?

धउयोसत्यएण दंसणित्रसीहि जनपः ।

बरणपूर्ण भतं ! जीवे कि ज्लामह ? बरणपूर्ण नीवागीयं कम्मं प्रवेद । उच्चा गोय कम्म विभव्यह । सीहार्ग च णं अविहित्यं आणाकलं निकासेह बाहिजमार्थं च ण जलपह । 33

11

ĮΥ

,

11

उन दोनों में बोच में ही घोजन कर लिया। श्रांत्रय और बाह्मण दोनों के लिए विविधित घोजन और पूज-साम्बुल शांकि केकर बापस आये।

नगर से बाहर रहें हुए बाह्मण और शक्तिय में सी उसी प्रकार का विवार दिया। इसलिए (उनके आते ही ) सुमने नगर में इतनी वे॰ क्यों लगाई ? थीं वह कर योगों को तत्वार से सार होते। विपानिश्वत भोजन काकर बाह्मण और शांत्रिय भी मर गर्म। इस सरह वार्चों के विस्तार भें यह पायमण व्यक्ति प्रास्त की।

### थी जिनाममक्यासंघह ६५-६७ नोत्तर

प्रश्नीत्तर्
है समयन् । सामाविक से जीव को बया कर प्राप्त होता है ? सामाविक सामें से मान-पान और काव के त्यातर में निवृत्ति मिलतो है ? सिच्या विशास-प्राप्तकेसीय प्राप्त होता ?)। हे पूत्रम । चीक्षीत तीर्थेच्यों की स्तृति से जीव को बचा कार मिलता है ? से जीन से ने पूर्ण को स्तृति करीन से दर्शन-विश्वादि (कार्यकारण की दियाद प्राप्त और जगर-रांग की विश्वादि (कार्यकारण की दियाद प्राप्त और जगर-रांग की विश्वादि (कार्यकारण की दियाद कार्यकारण की व्याह्म होना है?

करन वरने से भोष सोज वा सब होता है सीर उस्ता गोज वा बंध होता है। सीभाष्य और सामा वा रूपन सामर्थ्य सास करता है (सनेद जोगों का नेता करता है) सीर दाशिष्य माद (विस्वस्तमता) प्राप्त करता है। पडिस्तमणेणं मंते ! जीवे कि जलपड ? पडिस्तमणेण ययाष्ट्राणि पिहेड । पिहिययपण्डि जीवे निरद्धासये असम्बद्धस्य अहुसु पथम उथन्ते अपुरुत्ते सुरुपणिहिल् बिहरड ।

काउसरगेणं मंते ! जीवे कि जणबह ? काउसरगेणं तीयविष्ठपुत्र वार्याच्छत विसीहंड । विष् द्वपायन्छिले व जीवे निष्युमहिष्य ओहरियमंद्रस्य भारत पत्रस्यक्षाणीयगय सुद्दं सुदेणं विहरद !

प्सत्यक्षाणावययः सुह सुहण ग्वहरइ । पच्चवखाणेणं भंते ! जीवे कि जलम**इ** ? पच्चवखाणेणं आसवदाराहं <sup>(</sup>सरुंभड़ः | पच्चवखाणे<sup>वं</sup>

इच्छानिरोहं गए णं जीये सव्यवस्थेसु विणीयतण्हे सीइमूण विहरइ।

यय-पृद्दमंगलेणं मंते ! जीये कि जणयद्व ? यय-पृद्द-मंगलेणं नाण-संगण-धारिराखोहिलामं जणयद्व | नाण-संगण-सारिराखोहिलामं संगते य ण जीये

कणयद् । माण-दसण-पार-सार्थनियाहलाम सपन्न ये ण ज अंतिकित्तियं करपविमाणीययत्तिमं आशाहणं आराहेद्र ।

धम्मसद्वाए ण भते ! जीवे कि जनसङ्घ ? धम्मसद्धाए जंसायासोबरोस् रजनमाणे धरजनङ्गाजा-सारधम्मंच जंस्दह। अणनाहिए ए जीवे सारीरमाणसाणे d

ष्ट्रा भाग )

हे प्रावत ! प्रतिक्रमण करने से लीय को किस फल की स्थित होता है? प्रतिकरण करने से (स्वीकृत) कर्तों के छिट्टों (बीव-अतिवार) को दोक देना है। यहाँ के छिट्टों को द्वीक देना है। यहाँ के छिट्टों को द्वीक देन से क्षीत आखद को रोग कर निर्मल घोषित यादा होता है। वह आछ प्रवचन माता में साध्यात रहता है, संदम्मीण से अलग न होता हुआ (संदम में) साध्यात है संदम्मण से अलग न होता हुआ (संदम में) साध्यात्रक की बचा प्राप्त होता है?

क्रायोव्या से जीव भत तथा वर्षमान काल के दीवों का प्रांप-रिवल कर विदाद करना है। जैसे भारवाहक भार को उतार कर सामित्रहें के विवस्ता है। इसी नरह प्रावस्थित से विदाद कर हुआ जीव साम्सचित होकर प्रशस्त स्थान में सुलपूर्वक विवस्य करत है।

है भगवन । प्रत्याश्यान से त्रीय को किस कल की प्राप्ति होती है? प्रत्याश्यान से जीव नशेन पायों को रोक कर दृश्या का निरोध करता है। इश्छा का निरोध करने से सब पदार्थों में तुरुवारहित होकर यह परम द्वान्ति का अनुभव करता हुआ विधरता है।

है भावत । स्वय-मुनि मान से जीव की बाप फल निकता है र तब-स्तृति भगल से सान, दर्धन और चारित्र क्य भीतिक व पान वनता जीन जान वर्धन, पारित्र बोधिकाम से मध्यम त्रीय सकल कर्णें का अन्त कर मोश प्राप्त करता है स्वयम करन विमानों बाला उच्च देव गति की आराधना करता है

हे पुरस ! धर्म बदा से जीव को क्या फल प्राप्त होता है? धर्म श्रद्धा से जीव साता वेदनीय से प्राप्त सुर्कों के मिलने वर भी सुनमें सामकत नहीं होता है। यह गहस्यात्रम की छोड देता

क्षाराहेंद्र ।

fatius i

दुबलाण छेवण-भेयण-संयोगाईणं बोच्छेमं फरेड । अस बाहं च सुहं निव्यक्ते हु।

पायच्छित्करणेणं भंते ! जीवे कि जणयद ? यायच्छितकरणेगं पायकम्मविसोहि जणमङ । निर इयारे थावि भावद् । सम्बं च ण पायच्छित पडिवज्तनार्वे पर्गा च पगकलं च विताहित। आयारं आयारकलं ब

ल मावणाए में भेते ! जीवे कि जणवह ? लमावणाए पहहायणमार्थं जनपदः। पहहायणमायमुवग य सस्य-पाण-भूप-जीव-सत्तेषु विश्लीभावमुखाएइ | विश्ली भावम्बग्र या वि भावविसाहि काळण निश्मा भवड । राजमाएणं मंते ! जीवे कि जलपड़ ? सन्माएण नाणाप्रराजिक कम्मं खवेड । धस्मकहाए र्णभने ! जीवे कि जलबड़ ? द्यान्त्रकार् निरतरं जनपद्व । द्यमक्तृत् मंप्रद्यक बमाबहा वत्रपंत्रमायेण जीवे आगमेतसा महलाए करन

> सुपरम आराहणाए में भने ! जीवे कि अध्यक्ष ? स्परम आराजणाएँ अन्नाण गवेड न य संकित्तिकाड व्यागानजन निवेगणमाद य भने ! जीथे कि जयपद ? एमरामनसंतिदेशनपाए जिस्तितरोह करेरू ।

### 20)

हट्टा भाग ) ""और अनगार (माणु) यन कर द्वारीर के और मानसिक दुक्तों का श्तीतया छेदन मेदन संयोग वियाग आदि के दुखो का विष्टिद करता है और अव्याबाध मोक्ष गुर्खों को प्राप्त करता है । हे भगवन् ! प्रोयश्चिस फरने में जीव क्या फल प्राप्त गरी करता है। प्रायोद्धित करने से जीय बाव कर्म की विद्याद्धि करता

ह्या है : अनिचार (दोष) रहित होता है बुद्ध मन से प्रायश्चित प्रहेण करने से करवाण मार्ग और उसके कहा की विशुद्ध करता है और बह नारित्र और उसके फल मोझ को आराधना करता है। हेमावन्! क्षमापना करने से जीव की क्या फल मिलता है? क्षमापना करने से चित्त में आहलाद (प्रमीद) उत्पन्न होता है। बाहुलाद भाव को प्राप्त जीव सब प्राण-मृत-जीव और

सत्त्वों के प्रति मित्रता प्राप्त करता है। सब जीवों के प्रति मैत्री माव रखने बाला जीव अपने माबों की विश्व कर निर्मय हो जाता है।

हे भगवन ! स्वाध्याय से जीय को क्या लाम होता है ? 31 स्वाध्याय से जीव ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय करता है। हे भगवन ! धर्मकया से जीव को किस फल की प्राप्ति होती है। धर्मकथा स जीव कर्मों की निशंदा करता है। धर्मकथा

से प्रवचन की प्रमावना करता है। प्रवचन की प्रमावना करने से जीव भविष्य के लिए शुभ कर्मों का बन्ध करता है । हे भगवन् ! धृत की आराधना करने से जीवको क्या फल बिलता है? श्रुसको आराधचासे अज्ञानका क्षय होता है इसलिए यह जीव कहीं भी बलेश प्राप्त नहीं करता है। हे भगवन ! जीव चित्त की एकाप्रता से बया फल प्राप्त करता है ? मन की एकापता से जीव मन का निरोध करता है।

(चंद्र सराश की ओर प्रयुत्त नहीं होता) ।

33)

देवतागमंत करेड 1

farras i

सजमएणं मंते ! जीये कि जनयह ?. संजमएणं अगण्हयत्त जणवह ।

तवेग योदाण जनपड ।

बोराणेणं अहिरियं जनयः । अकिरियाए भवित तत्रो पण्टा निग्नाइ, युग्नाइ, मुख्यह, परिनिच्यायह, सार

क्रमाय-पब्धश्याणेणं भने ! जीवे हि जनपर क्रमाय-पत्रत्र स्थायम बीयरागमाव जनवर । बीयर गमायपडियमे वियाण जीवे समगुरद्दको भवड । वीवरागवार ण भरे ! जीवे कि जगवर ? बीवशायवाएं नैहाणुढं बचाचि सप्हाणुबयनाणि के किन्द्रह । मणुद्रायणुद्रेम् नद्र-कृति कय-रत-गंधेत् व

अपनीत् संघते । सोवे कि अनयप्त ? स्रमीतस बरियह जिल्हा बर्माण वं भने ! बोदे हि अगवद ? सर्वेष्ट्र म सर्वेद्यम अनगर । श्रीवयने स से य प्रत्यस

नदेण भने 'जीये कि जलबह?

योदाणेणं भते । जीवे कि जगवड ?

इंडिशाग)

हे समय्म् ! संग्रम से जीय को किस फल की प्राप्ता होती है ? संग्रम से जीय जनाल घार (न्यंन दर्भों से पहित होना) प्राप्त करता है

......6

हे मगवन् ! जीय को सद से क्या लाम होता है ? तप से कर्मका क्षय होता है।

हे भावन् । समेक्षय से जीव को क्या छात्र है ? कर्स-रहित से जीव कय प्रकार की क्रियाओं से रहित हो जाता है। अध्यय हो जाने के परचात् यह नित होता है, युद्ध होता है, सुक्त

ें अद्भिष्य हो जाने के परचात् यह नित होता है, युद्ध होता है, मृक्त हैं होता है, निवांग प्राप्त करता है और सब दुनों से छूटता है। हे एडय ! औद पचामों के स्थाग से बया कल प्राप्त करता-

ह पूच्य ! जाद प्वाचा का त्याग संबंध कर प्रान्त करता-हाँ है ? य्वाय के त्याग से जोव बीतरावता प्राप्त करता है । बीत--हिंदागुक्त के प्राप्त हुआ और सुग दुवों में सममाव स्वते

बाला होता है। हेपूज्य ! बोतराग से जीव को बयाफल विस्तता है? क्षा बोतराग से जीव राग के बन्धनों और सुप्ला के बन्धनों को

ि शिक्षां सं जीव राग के बन्धना आर तृष्णा के बन्धना का है। डिज्ञ-मिम कर देता है और मनोज या अमनोज बादद-स्पर्ध-क्य-रस और गन्ध में बिरक्तमाय धारण करता है।

हे शायवन् ! दामा (सहनतीलता) से जीवको क्या साम होता है ? दामा ने जीव परिषहों को जीतता है।

हे भगवन् ! निर्मोमता से जीव को बचा फल मिलना है ? तिलोमता से जीव अध्यय (अर्थापही) बनता है अप्रि-पही जीव पननीत्वी पुरुषों के अप्रीनीय हाता है, अर्थान् प करदों व पराधीनताओं से बच जाता है।

अन्त्रवयाए ण भंते ! जीवे कि जणबह ? अञ्जवपाए काउञ्जूषय मामुक्त्वर्य अविसवाद<sup>र्य</sup> जणयद् । अविसंवायणसंपन्नवार् ण जीवे धम्मस्स आराहर

भवह ।

महययात् ण भते ! जीवे कि जणयह ? मद्दयाए अणुस्मियत जणयङ । अणस्मियतेण <sup>जीहे</sup>

मिलमहबसंबक्षे अहमवद्वाणाइ निद्वाबह । माजसच्चेण मते ! जीवे कि जणयह ?

भायसच्चेण भावविसोहि जणयह । माविसोहि<sup>ए</sup>

यहुमाने जीवे अरहंनपत्रतस्त धम्मस्त आराहणयाए अन्मुई इ । अरहतनम्मत्तस्य धन्मस्य आराहणयात् अन्मुः

द्विता परलीगधम्महत आराहए भवड । करणसच्चेणं भते ! जीवे कि जणयह ? करणसच्चेणं करणसन्ति जणयइ । करणसच्चे बट्ट-

माणे जीवे जहावाई तहाफारी यावि भवद्दा जीवसच्चेणं भेते ! जीचे कि जणयह ? जीगसञ्चेणं जीमं विसीहेड ।

मणगुत्तवाए णं मंते! जीवे कि जणमइ? मणगृतपाए जीवे गुगमां जणबद् । गुगमाचिले ण जीवे मणगृत संजमाराहए मयह ।

हे पुत्रव । सरलता (निष्कपटता) में श्रीव की पया फल ं प्राप्त होता है ? सरलता से जीव काया की सम्लता, भाव की त सरलता माया की सरलता और एकक्ष्यता से जीय धर्म का

साराधक होता है।

٠,

हेपूरव ! मृदुतामें जीव बया फल प्राप्त करना है ? मं महता से जीव अभिमान से पहित होता है। मिश्मिमानी जीव कांमल मदता प्राप्त कर बाठ प्रकार के मद स्थानों की दुर करता है।

करता है ? भाषीं की सत्यता से माबों की विवाद होती है। शाबों की विश्व द्वि होने पर जीव अरिहन्त प्रकृति धर्म की क्षाराध्रमा करमें के लिए उद्यत होता है और अर्धन्त प्रकृतित शर्म की आराधना में सत्पर हुआ जीव परलोक धर्म का आराधक होता है।

हे पुत्रम ! जीव भावों की सत्यता से नमा फल प्राप्त

हे बच्च ! करण सस्य से जीव को क्या फल सिलता है ? करण संस्य (सहय प्रवृत्ति करने ) से सहय त्रिया करने की दावित पैदा होता है। करण सत्य में रहता हुआ जाय जैसा बोखता है बैसा करने चाला होता है।

हे पुत्रय ! योगों की सत्यता से की यको बया फल जिल्ला है ? चीतों की सत्यता में मन, मचन और काया के स्पादार कर योगों को विश्ववि होती है।

है पूज्य मिनीसुस्ति से उत्था को वधा काभ्य होता है ? मनोगु प्त से मन को एकापना प्राप्त होती है। एकाप रूम दाला कीव संपम का साराधक होता है।

11)

सवगुष्याए में मते ' जीवे कि जनमई ? बयगुस्तवार निश्चिमार जनवड । निश्चिमी क्षीवे बद्दगुरी अञ्चालजोतमाहणज्ञते या वि विहरह । कावगुसवाए ण भते ! जीने कि जणवह ? काषगुत्तवाए संदर जणबङ्ग । सबरेन काषगुत्ते ३ वाबागवनिरोहं करेइ। नामसंबन्नवाए णं मते ! जीवे दि जणपर ? भागसंबन्नवार् जीवे सब्द्रमावाहितम गणयह । संपन्ने णं जीवे चाउरते समारकतारे न विणस्स जहां सुई समुत्ता पश्चिमा थि न विणहर सहा बीचे समुते संगारे न वि विणस्सइ माण-विषय तब-चारित भोगे सपाउण्ड स समय

समयविसारत् य असंवायणिजने छवड् )

क अगगारे चतारि केविकस्में से सबेह । तभी प

सिक्झाइ, युक्झाइ, मुक्चइ, परिनिक्झायइ, सरवद्वयाण

सौईदियनिग्गहेणं चंते ! और्थे नि जलमह ? सीइंदियनिग्गहणं मणुझामणुमेसु सदेसु रागवी

करेइ ।

दंसणसंपन्नयाए णं मंते ! जीवे कि जनपट ? दमणसं ।स्वाए सेतेशीभाव जणबह । सेलेसि पडि

हे पुरुष ! यसनगरित (बचन संयम) से जीव की दया लाभा होता है ? वचन गृष्ति से जीव विकाररहित होता है। निविकार जीव आध्यात्मिक योग के साधनों से युक्त (बचन सिद्धि वाला)

हो कर विचरता है। हे पुत्रम ! शरीर-संयम (कायगुष्ति ) से जीव की क्या फल निलता है ? कायगुष्त से सबर (यापों का वकना) होता है। सबर (काय विश्व उरपन्न होती है तया) पान के प्रवाह का निरोध करने धाला होता है।

हे भगवन ! ज्ञान-सम्पन्नता से जीव को क्या लाम होता हं ? ज्ञान-सम्बद्धता से जीय सब पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करता है। शानसम्बन्न जीव चतुर्गति रूप संसार-यन में नहीं भटकता है । जिस प्रकार डोरे वाली सुई नहीं गुनती है इसी सरह सुत्र वाला शानी पुद्रय संसार में युक्षी नहीं होता, नहीं भटकता । यह शान. विनय-सप-सारित्र और योग को प्राप्त करता है, अपने दर्शन और अन्य के बर्शन में विशास्य होता है और परवादियों के द्वारा वरामुल नहीं होता है या असत्य मार्ग में फंसने बाला

महीं होता है। हेमगवन् ! दर्शन सम्पन्नता से जीव क्या फल प्राप्त करता है ? वर्शन सम्पन्न से जीव संसार के मलका अज्ञान का छेदन क'ता है। उसके झान का प्रकाश विलुप्त नहीं होता। दम प्रकाश में शान-दर्शन से अवनी आत्मा की पावित करता

ष्ट्रवा विचरता है। हे भगवन् ! चारित्र-सम्पन्नता से घोव बया फल प्राप्त करता है ? चारित्र-सम्पद्मता से ओव शैकेशी (मेर के समान

(नदश्य) माव को प्राप्त करता है। शैतेशी माव को प्राप्त अनुनार

निशाह जनपद । तथ्यवयद्भयं बाग्मं न संग्रह पुश्ववर्षे हैं निज्यदेश ।

कोहविजयेणं भते ! श्रीये कि जणपर ? कोहविजयेण सींत जणपर । मायावैयणिग्जं काम न षंधर, पुरवयद स निग्तरेर ।

मंग्रह, पुरवयद्ध च निजनरेह | माणयिजयेणं मंते ! जीवे कि जलवह?

माणविजयोणं अञ्जय जलयद्व । माणवेयणि<sup>उर्ज</sup> कम्भं न संघ**र,** पुष्यसद्धं च निउजरेद्व ।

मायाधिजयेणं भंते ! जीये कि जणयइ ?
मायाधिजयेणं अजनय जलयइ । भायायेयणिज्यं न
यश्चद्र, पुरुद्यश्चरं च निज्जरेड ।
सोभविजयेणं भंते ! जीवे कि जणयह ?

लोमविजएणं सतीसं जलया । लोभवेयणिवजं करमं

– केवलों के बोब रहे हुए चार कर्मों को क्षय करता है और उसके चुपत्रचार सिद्ध-सुद्ध, सुबत और शान्त होकर सब दु:कों का अन्त फरता है।

है पुत्रम<sup>ा</sup> श्रोत्रेन्द्रिय के निग्रह से जीव को क्या फल मिलता है <sup>7</sup> श्रोत्रेन्द्रिय के निषह से मुन्दर या असुन्दर शरदों में राग-द्रेष रहित होता है। अन रागद्रेष से होने वाले कमें का ह बन्ध नहीं कन्ता है और पहले बांधे हुए कमी की निनंता

मारता है। हे पुत्रव ! क्रोध पर विजय पाने से जीव को क्या फल मिलता है ? को छ पर वित्रय पाने में जीय क्षमा गण को प्रकट करता है और कोध से उत्पन्न होने याले कर्मों को सांधशा है और

पूर्वयद्भ कर्नों की नित्ररा करता है। है मगदन ! मान पर विजय पाने से जीय को क्या लाब होता है ? मान पर विजय पाने से मुद्ता प्राप्त होती है। अबि-

मान से ग्रंधने वाले कमी का यह बन्धन नहीं करता और पूर्व-सद्ध कर्म की निजंश करता है।

है भगवन ! भाषा पर विजय पाने से जीय की क्या फल

मिलता है ? मापा पर विजय पाने से जीव सरलता गण को प्रकट करता है। माया से यद्यने वाले कर्नी को नही बांधता है और पूर्ववद्ध कर्मी की निजरा करता है।

हे भगवन् ! स्रोभ विजय से जीव को क्या फल मिसता है ? लोग विजय से जीव को संतोष गुण की प्राप्ति होती है। लोप में बधने वाले कर्मों को वह नहीं बोधता और पूर्वबद्ध कर्मी की निर्जश करता है।

विज्ञादीम-निक्छावंसणविज्ञवेंणं संते ! जीवे हि नणबहु ?

विज्ञवांस-विच्छादसणिवज्ञवेण नाण-बंसण-विद् त्ताराहणवाए अम्मुद्रेड । अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मनांदिर्व-मोवगवाए लप्यद्वनवाए जहाण्युदःगोए अट्ठाव्यव्यक्षित्रं मोहिणिश्त कम्म उपवार्द्दः चंबविह नाणावरणिञ्ज, मर्व-विह स्सणावरणिञ्ज, चंबविह अतराइच । एए तिर्वित वि कम्मसे जुगवं त्यवेद । तथा पच्छा अणुत्तरं किसणं परि-पुण्ण निरावरणं वितिष्तरं विसर्खं लीगालोग्रपमार्व

हैरियायहियं चन्मं निवन्यह सुन्तरितं बुसमयिह्यं। त अडमयमए बद्ध विदयसमए विद्वयं, तद्वयसमए निटिजणां, सं बद्धं पुद्र उदीरियं वेद्वयं निटिजणा सेपाले थ अकन्मया य मबद्ध ।

केवलवरमाणदम्णं सम्पादेइ | जान सजीगी सवद, ताब |

-जीवनश्रेयस्कर पाठमाला १७५-१८३

## मंघत्युई

गुणमधन-गहण मुपरयण मरिय वंतण-विमुद्धश्यागा । संध-नगर ? मह ते अवस्थ-धरित्तपातारा ।। ु छहा भाग ) -----है भगवन ! राग द्वेष और मिथ्यादर्शन के विजय से जीव को पया फल मिलता है ? राग-द्वेव और मिय्यावर्शन के विजय से ज्ञान, बर्गन और चारित्र को आराधना में वह जीवात्मा उद्यमी बनता है और बाद में बाठ प्रकार के कर्मों की गांठ से मुक्त होने के लिए सर्वप्रयम यवात्रम अद्वाबीन प्रकार के मोह— नीम कर्म का क्षय करता है। इसके बाद पाँच प्रकार के शाना-वरणीय कर्नका, नो प्रकार के दर्शनावरणीय कर्मका और पांच प्रकार के अन्तराथ कर्मका इन तीनों कर्मों का क्षय करता है। इसके बाद श्रेटठ, सम्पूर्ण, आवरण--रहित, अध्यकार रहित, विज्ञुद्ध और लोकालोक को प्रकाशित करने वाला केवल ज्ञान. केवल दर्शन उरपन्न करता है ( प्राप्त करता है ) । वह जीव जब तक सयोगी होता है तय तक ईर्याप्यिक कर्म बीधता है। उस कमं का स्वर्शमात्र दो समय की स्थिति बाला और सुलकर होता है। यह कर्म प्रयम समय में नांधता है। दूसरे समय में बेदन किया जाता है और तीसरे समय में नव्द हो जाता है। इस तरह असके बद्ध, स्पृष्ट, उदोरित, बेदित और निर्जरित होने पर बह जीवारमा कर्नरहित हो जाता है।

# संघ-स्त्रति

उत्तर गुण रूप भवन से गहन, धृत–रत्नो से भरा क्रजा सम्मन दर्शन दोहरी याला, तथा असद चारित्रस्य अल्लान (किल्ला) वाला है सधनगर ! तेरा कल्याण हो ।

संतम् तन-स्वारपरम् सभी सदयम्गरिष्टम्ब तत्र्वादयक्तरक् भन्नी भागः स्वाः स्वयक्तरम्

घर् मो काकाम्पन्यस्य स्वत्यवनुरुषःभूगत्तः । सदरहरतः भवनभः सरक्षावनुरुषःभगततः ।।

कडमरमञ्जोहविकागमस्य नुपरमणप्रीहरा<sup>लाम</sup> । यचमह्यप्रविदक्तिमस्य गुणसारालस्य ।।

सावगत्रणमहुअरिपश्चिद्रस्य त्रिणमूररोपसुद्धस्य । संघवजनस्य चर्चसमणमणसहस्यपणस्य ॥

वरतिश्वियगहपहुनासगस्य सबसेयविश्लवेगस्य । जाणुक्रभोयस्य जषु भद्र बुमसंप्रमुरस्य ॥

षद् धिद्ववैलाविश्गयस्य सञ्झायजोगमगरस्य । अवकोहस्य मगवओ सध्यसमुद्दस्य ठदःगः ॥ -भो नवीधूत्रम् संघ को सक की उपमाः--

संपन और तद रूप नामि ( चक्र का मध्य भाग ) और आरों से संयुक्त सम्पन्ध्य रूपी धो (पाटा ) बाला तथा

प्रतिचक रहित (विरोध पक्ष रहित ) अत्रतिहत गति बाला ऐसे

सप-धक को नमस्कार हो तया उसकी सदा जब हो ।

संघ को रथ की उपमाःदोल क्य पताका-ध्वता जिस पर उद्य रही है तप,

नियम क्य घोडे जुड़े हैं तथा स्वाध्याय क्य आनन्द व मंगल ध्यनि करते हें ऐसे ऐड्यम युवत समक्ष्य रम का कत्यान हो।

कामभीग से अलिस्तता के कारण संघ की कमल की उपसा:-जो कमं रूप रज-काइव और जलप्रवाह से बाहर

निकला है अर्थात् निजेंब है तथा धून-साम्त्र रस्त रूपी समझे नास (इंडी वाला, पत्त महावन रूप स्वित करिया (बीज कीप) वाला है। जलर गण स्वया आदि जिसहा पराग-वेशन है तथा ध्यावक

हो । तर पान जान जान का का का का हा हा हा हा है। जन रूप समुद्र में से दिशा हुआ है, जिनेदबर रूप सुद्र के तान-प्रकास से विकसित है, असवगण रूप सहस्य पत्र बाला संघ-रूपी पद्य-रूपस का करनाण हो।

रांघ को सूर्य की उपमा:-

अन्य सीर्यंक्त यहीं को प्रमा को नगर-मंद करने वाला. तर-तेज रूप चमकती कान्तिवाचा, जान कर प्रकास वाला. होने उप-शास दमनसील मंघ-मूर्यं का विश्व में बाल्याण हो :

गम को समुद्र को उपमा:-

धेर्य रूप प्रवार वाला, स्वास्थाय प्रवृत्ति रूप समार-धाह-बाला वयसमें असीर से सुराय व होने याता. समबान, यरब विज्ञात भी संप-समुद्र का कत्याल हो । त्यम्बद्धान्यम् । १०१८ व्याप्तस्य । त्रम्भ क्षणस्य स्थाप्तः । १९४४ व्याप्तस्यः ।

है क्या स्थाप के स्थाप कर कर कर के कि एक दे तहीं साद साम समस्याप कर कुछी है के उन्हों के अस्तर कर है

स्रोत्रक्षास्य काक्षकार्यान्यस्य कार्यक्रम्यः। स्रोत्रक्षास्य कार्यकार्यान्यस्य ।

सवस्यम्यानवर्ताः स्वयः स्वरम्यः वर्गयः (क्र.स्टरम्यः ) स्वयंत्रस्य राजस्य स्वरम्यः स्वरम्यः ।

विज्ञवयायप्रवरस्भा (। कुरुश्चेत्रज्ञात्रक्ष्ण्वी(१४४०) विविष्ट्रमुचनस्वत्रवाधस्यक्षरस्य समुद्रभाषणस्य स्थानः ।)

माणवरस्वणविष्यंनकत्वेद्यतिमाणस्यक्तः । वंदायि विषयपणमाः संवयतस्यक्तिः ॥

-था गरोगुषम् 🛭 🕡

संघ-मेरः~

सम्याददांन रूपी उत्तम, बळामव, हुढ, स्थिर और बहुस गहरो पोठिका आधारशिला वाले, धर्म, इप उत्तम रह्नों से मण्डित, सोने की मेलला वाले, यम-नियम रूप स्वर्णशिला तल पर निमंल व मास्यर चिल रूपी उच्च क्ट वाले, सन्तोप रूप मन्दन वन को मनोहर व सुवन्धित सुवान से भरे हुए, जीव दया रूपो मुन्दर कन्दरामें (कर्मदात्रुओं के प्रति अथवा मिथ्या मत बालों के प्रति वाद-लब्जि सम्मन्न होने से) बलिप्ठ मुनिवर रूप सिहों से युवत, ब्यास्यानशाला रूपो गुहा में सैकडों हेतु रूप धात चन्द्रकान्तादि की तरह झरने हुए श्रुतरत्न और जाज्वस्यमान आमर्वेषिध आदि लब्धि रूप औपधियों से युवत, मंबर रूपी बेट्ड जल के बहते हुए प्रवाह रूपी हार से सुशोधित, स्तुति-स्वाध्याम आदि का पाठ करने वाले शावकान रूप मगुरों के शब्दों से मानो नावत हुए अन्तराल (पर्यंत के गुकादि विवर और संघ के ध्याष्ट्रपानद्याला) बाले, विनय से मम्ब और घेट्ठ मुनिवर रूप बिद्यत (बिजलियों) के द्वारा देवीप्यमान शिवर वाले, विविध मृण्युवत और कल्पवृक्ष के समान साधुओं के , मूलोत्तर गुण रूप) धर्म हव फल व विविध ऋदियाँ रूप फुलों से युवत (गच्छ रूपी) बन बाले और उत्तम ज्ञान रूप रत्नों से देदोप्यमान मनोहर विमल बैडपंत्रय-शिलर वाले संघ रूपी महा मन्दर गिरि (धुमैद) को

विनय से नम्न होकर में वन्दन करता हैं।

## तित्ययग् । वालि

(यदे) उत्तम अजिय समयमित्रनंडण-मुनई-सुत्पमन्धुर्गः सिति-पुरफदत-सीयल-तिउजमं वासुपुरज स विसलमणंतयधम्मं मंति कुयं अरं च महिर्ह स मृतिसुटकप-निम्नीम पासं तह यद्धमाणं स।

### गणहरावलि

पडमित्य इंदमूई बीए पुण होइ अगिम्पूई ति । तद्दए य वाउमूई तओ वियत्ते सुहम्मे य ॥ मंडिय मोरियपुर्त अकंपिए चेव अयलमाया य । मेअज्जे य पहाचे गणहरा हृति वोरम्म । निरबुद्दगहसासणय जयह मया सब्वमायदेसणय । कुरामयमयनासणय जिंगिदवरवीरसासणय ॥

# थेस**वा**ळे

मुहम्म अम्तिवेसाणं जंबूनामं च कासय। पमयं कच्चायणं येदै बच्छ निज्जंममं तहा॥ १॥ जसमह सुनिय यदै मंमूग चेव मादर ।

महबाहुं च पादन यूरुभह च गांवम ॥ २॥

### तीः

ऋतमदेवत्री स्वामी, वामी, सामान्यस्यानी, अप्रिनंदन स्वामी, सुमान्यस्यानी, अप्रिनंदन स्वामी, सुमान्यस्यानी, स्वामी, सुप्रवंदन स्वामी, पुण्यस्य (प्रयुक्त) स्वामी, पुण्यस्य (पुण्यस्य (पुण्यस्य स्वामी), प्रयासनाय स्वामी, अप्रेमानाय स्वामी, अप्रेमानाय स्वामी, और बायुज्य स्वामी, की यस्य करता है।

वार वाधुरुव स्वामा, का पर्यक्र करता है। विश्वलताय स्वामी, अनस्त्रनाय स्वामी, धर्ममाय स्वामी, शानितनाय स्वामी, कृत्युनाय स्वामी, अरनाय स्वामी, घरिस-नाय स्वामी, मृनिनुयत स्वामी, नेमिनायत्री को, पार्यनायत्री भीर खद्रमान महाधीर स्वामी को यन्त्रकरता हूँ

## गणधरावली

यहाँ (महाबोर के शासन में प्रथम गणधर भी इन्द्रभूति (गौतम स्थामी) हे दूसरे अन्तिनृति है, तीसरे बायुम्ति है, भीचें ध्यक्त स्थामी और पाँचुर्वे मुखर्मस्वामी, है।

मणिष्ठतपुत्र, मौवेपुत्र, असम्बित, अचलस्ताता मेत्रार्य और प्रमास में रचारह) महाबीर स्वामी के गमधर है।

### स्याविरावली

(महाबोर के प्रथम पट्टंगर ) अनिन बंद्रयायन गोत्र बासे सीतुष्यं रशायी को, काउययगोत्रीय जन्मून्त्रामी की कारवायन गोत्रीय प्रयवस्थानी को बस्तगी त्रीय घोडारयम् व जासाय को बस्बन करता है।

नुनिक तथ बाते (स्वाधानस्य योत्री) बजोबद्ध को, माद्रा योत्री मधून विषय की, प्राचीन योत्री चत्रशहू को, योतम योत्र स्थूलबद्ध को बन्दन करता हूँ :

हारियगुत्त माइ च वदिमा हारिय च मामञ्जा। यदे कासियमोत्त संडिहल अञ्जनीयधर ॥ ४ ॥

तिसमुद्द्यायिकति दीवसमुद्देसु गहिवपेवाल । यदे अजजसमृह अवस्थिमयसमृहगमीरं ॥ ५ ॥

्र झरग पक्ष

अन्जमगं

एलावच्यसगोत्तं यंदामि महागिरि मुहस्यि 🕆 ।

तत्तो कोसिअगोत्त बहुलस्य सरिद्यय यदे ॥ ३ ॥

, घोर ।! ६ ।।

छट्टा भाग )

. एगापस्पतीत्र वाले महागिरि को और गुराली की बस्दन करता हूँ। (स्पूलकः के प्रधान को गिर्म्य-स्मृतिपिर और मुक्तिन। वोनों की अक्षायोक्तनो अन्त न हैं। यहां महागिरि की साधार्यक्ती की गई हैं वर्षों कि मखोनुत्र के संक्तनकर्ता

देववाबत का जनते हो सरकाय है। ) साराबान कीतिकांत्र काले यहन्यांत्र के समान वय वाले मुक्तियह लावार्य की वादन करता है। बहुल और विलसह महाशिदि के प्रधान तिया थे। यहांत्रों से महा सहीवद अरात था। हादिसयोजी स्वाती आवार्य की और हादिसयोज स्थायाय

श्री करता वा स्वार्थ के आर हारता वा स्थाप के स्वार्थ है। वारता वा स्थाप के करता करते हैं। कीराताओं राजियन आधार के तथा सर्वे के तथा स्वार्थ के तथा स्वार्थ के तथा है। इसकी के ति पूर्व, दिस्सा परिचन हिरा में रिक्त समृद्ध पर्यक्त के ती हो। हिरा निर्माण के तथा स्वार्थ के ता स्वार्थ के ति स्वार्थ के तथा स्वार्

सबुद के लवाब सामीर धार्य मध्य को बंधन करता है। कारिकार कुन का तरा दर्भ बाने मुद्रोक्त क्यिन् करने बाते, स्वर्धाः स्थान स्वान काने, सानस्तर्भाद रूपीं को क्याबना करने बाते, कुन-मान्त के सारमानी कीर सीर कार्य सबु को जानकार करना है।

सान दर्शन तय भीर विश्वय में सर्वेद्ध प्रकृत पहने कार्य, राग द्वेच रहिन होने से प्राप्त-स्वक्त सब कार्य सार्वे केरिया शत्या को मानक गुजाबत कारण हूँ ।

भ्यावरमः ( कारूण-प्राप्तः भ्यावरम्य स्वयं प्राय-स्था-करमः) रिचर दिएकि प्राप्तं करमः, भय बहुन (बहुन भेर करिः) पुत्रः विकास सर्वे प्राप्तः को दिशास्य प्रकरण वर्षः से करावः वर्षेत्रस्य हरित प्रार्थ्तः का बावन यशः (कृष्णिनः) स्वाप्तं वश्च वर्षेत्रस्य हरित्रं प्राप्तं का बावनं यशः (कृष्णिनः) स्वाप्तं वश्चः वर्षेत्रस्य वृद्धियन होस्ते।

40) ( जन पाठावुण जन्चंजण- धाउसमप्पहाणम्बियक्वसयनिहाणं । बडहुड वायगयंसी रेवइनक्सलनामाण ॥ ९॥ अयलपुरा नियखंते काल्यिमुयआणुओगिए धीरे । बमहीवगसीहे वायगपयमुत्तम पत्ते । १० ॥ जेति इमो अणुओगो पयरद अन्जावि अञ्चलभरहाम्म । बहुत्त्वरिनग्वजसे से यंदे लदिलावरिये ।। ११।। तत्तो हिमयतमहंतविवकमे धिइपरवक्तममणते । सउद्यापमणतघरे हिमयंते यदिमो सिरसा ॥ १२ ॥ कालियम्यअणुओगस्स धारए धारए य पुरवाणे । हिमयतसमासमणे वदे णागउजुणायरिए ॥ १३ ॥ मिउमहबर्मवरी आणुपुरबी बायगत्तणं वत्ते । ओहम्यसमायारे नागजमुणवायए यह ॥ १४॥ यरफणगत्रविषर्थयगविगः लयरकम्लगरमम्हियन् । भविभागणहियमबद्देष स्वागुणविसारए धीरे ॥ १५ । जाति सम्पत्न अञ्जत चातु के समान बारीर की कृष्ण प्रभा बाल, पकी हुई बान व नीले कमल के समान कातिवाले रेवती नवाम नामक आचार्य का याचक यहा नृद्धिगत होओ।

अचलपुर में दीशा लेने बाले, कालिक धुन के द्याख्यान में नियुक्त, घोर और उत्तम वाचकपद को प्राप्त तथा बहादीयिक साला से उपलक्षित सिंहनामक आचार्य की बन्दन करता हूँ।

जिनका बर्तमान में उपलब्ध यह अनुयोग आज सो साथे सरत क्षेत्र में (इक्षिण गरत में) प्रवस्तित है और बहुत से नगरों में जिनका यदा व्याप्त है उन स्कन्दिलावार्य को में दग्दन करता हूँ।

हिमवान की तरह महा विकार आले ( सहु कोत्र ध्यादी विकार करने वाले) अवरिमिल ग्रेपेंत्रशान वराक्षप वाले, और अनत्तु अर्थ याले पूर्वों के स्वाध्याय को ग्रारण करना स्वा हिमवान नामक आवार्य की निर सुदा कर बदन करते हैं।

कालिक खुत के अनुवोग को धारणा करने वाले, उत्ताह काहि पूर्वों के धारक क्षमाध्यमण हिमबन्त को तथा इनहें शिष्य नगरार्जुनावार्ध की बन्दन करता हूँ।

मृहु (कोमक) भार्यन आदि गुर्जों से युक्त, अनुकान से (प्रम और दोशा से) बाबक तह को प्राप्त और औपपुत्र (उपसर्ध मार्ग का) समाधाण करने बाले नागार्जुन बाबक को सन्दन करता है।

त्रापे हुए उत्तम स्वर्ण, मुबर्ण बायक पूरा और तिले हुए क्मल के गर्भ के समान गीर वर्ण वाले, मध्य अंबो के विक्त में मैंच पैदी करते बोले, दया करने-कराने में बुसल गीर तथा अड्डभरहष्पहाणे बहुविह– सज्झायसुमुणियपहाणे | अणुओगिययरवसभे नाइलकुलयंसनदियरे ।| १६ ||

जगमूअहिअपगरमे वदेऽह मूद्रविन्नमायरिए । भवमयवच्छेयकरे सीसे नागञ्जूणरिसीणं ।। १७ ।।

सुमुणियनिष्वानिष्वे सुमूणियसुत्तत्थधारय यंदे । सन्मायुक्तावणया तत्य लोहिष्वणामाणं ॥१८ ॥

अत्यमहत्यवताणि सुसमणयवलाण-कहणनिध्वाणि । यमईइ महुरयाणि पयओ वलमामि दूसगणि ॥ १६ ॥

सुकुमालकोमलतले तेसि पणमामि लवलणपसत्ये । पाए पावयणीणं पडिच्छ्यसएहि परिवद्दए ॥ २० ॥

जे असे भागवंते कालियमुत्र-अणुओगिए धीरे | ते पर्णामकण सिरसा नाणस्त परवणं योष्टं ॥३० ॥ सकल अर्ध भरत में युषप्रधान, बहुषिव स्वाध्याय के बेलाओं में प्रधान, अनेक श्रेंट साधुओं को बयोधित स्वाध्याय-वैद्यावृत्य आर्थि में रुपाने बाले, नार्षारकुल बया को आनिस्त करफें बाले, प्राणी मान का द्वित करने में प्रशब्ध वर्षात निक्षेत्रता-पूर्वक प्राणिशित करने का उपदेश करने बाले, मंसार-मध का विक्षेत्र करने बाले, नापानुंन कृषि के शिष्य श्री भूतिका आवार्ष को में नेमस्कार करता हैं।

िनियानिस्य क्व से बह्यु को कही प्रकार जानने बासे, पूत्राम को सम्प्रकृषकार से जान कर धारण करने बाठे, और अस्तु तस्व का सस्य प्रतिपादन करने बाठे, छीहिस्य नामक आजार्य को नामकार करता है।

अयं और महायं के खान स्वस्त, सुमायुओं को सास्त्रार्ध का व्याव्यान और पूछे हुए प्रश्नों का उत्तर देने में सभागि अनुसब करने वाले, प्रकृति से मधुरमायों जो हुय्य गणि को सम्मानुष्क ममस्कार करता हैं।

प्रधान प्रवचन करने वाले उन दूध्यं गणि के जुझ लक्षण सम्पन्न, सुन्दर-सुकु शर तल बाले तवा संकडों जिल्लों के द्वारा नमलून चरनों की प्रथाप करता हैं।

अन्य जो भी कालिक धृत अनुधीन वाले, घीर, विशेष-यूतवारी आचार्य मगवान् हें उन्हें मस्तक से प्रणाव करके सान को प्ररुपण करनार।

## वरुणे णागणतुण्

तेणं कालेण तेणं गमत्ण वेनातो नामं नर्घरी होत्। सत्व वरणे नाम नागनत्तृ परिवाह, अब्दे जाब मर्वार भूष, प्रमणोवासए, अधिगत-श्रोवाजीवे जाव प्रतिहरी माणे छट्टे छट्टेण अणिविलसेणं तथोकस्मेणं प्रांती सावेमाणे विहुद्ह ।

तए णं से यहणे नामनत्त् अन्नया कवाई रांवारि ओगेणे गणाभिओगेणे बलाभिओगेणे रहमुसले संपर्व आणते समाणे छट्टभतिए अट्टममत्तं अणुबट्टीत अर्ण् बट्टिता कोईविष्युरिसे सहावेद, सहावित्ता एवं वयासी।

' खिप्पामेव भो देवाणृष्पिया ! चाउनसंट आसार्ष जुनामेव उबद्वायेह, हम-गय-रह० जाव सन्नाहेत्ता <sup>सब</sup> एयं आणत्तियं वच्चप्पिणह '।

सए मं ते पोड्ड विय पुरिता जाय पश्चिमुणेता जिल्ला सेव सेन्द्रस्त सरमायं जाय उपहायिति, ह्य गय-रह० जाव संद्राहिति सप्ताहिसा जेणेय वहचे नासम्बुए जाव वर्ण्ड चित्रति ।

### वरूण नाग नटुआ

उस काल, उस समय में येशाली नाग की नगरी यो। इस नगरों में पदल नाम का एक नाग नदुषा रहता या। वह बहुत श्रीमन्त याओर अनेक पुरुषों से में अवशालित था। वह भावक था। उसने जीज, अजीव आदि नवतरवे की जाने ये। और यावत तदा साधुजनों को देने सीम्य निर्दोग वस्तुओं को, देने की माजनासहित निरन्तर वेले २ का तप करते अपना आस्म चिन्दना सुकत जीवन सायन करता था।

त्तव बहु बदल नाग नद्धा एकदा राजा की आता थे, एको आता से, सल ( सेनापति ) की आता से, प्यमुसल प्राम में युद्ध करने को आता होने से, येदे के कामा परतेला रासाई ने सिंध (अदुस उदयास) करके अपने कोट्टीसक पुरवो हो बुलाता है। बुलाकर इसप्रकार कहता है.—

''हेदेशानृप्रिय! सीघ्र चार घटेवाले अदवरघको जोडकर हाजिरकरो । घोडे, हावी, रम, आदि तैसार करके यह मेरी आज्ञामृतेपीछीदो ( यह सव तैसार करके मृते बात करी।'')

त्तरपद्भात् वे कोटुन्थिक पुत्रव उस आज्ञाको सुनकर शीध्र ही छत्र वाला, स्वजा वाला सावत् आज्ञानुसार अद्य रव को सैयार करके हाजिर करते हैं। यो है, हायी रचको भूद्वार कर के सेवार करते हैं। तैयार करके वहाँ वरुण नाग नदुआ है यावत् (यहां सन्दम्न करने की सबर देते हैं)। गण्य मे वनने मान-नाण् चर्णव मननापरि हेरे जवामकारि नहा क्रिया मान पाण्डित्हां मानावहर्गि विश्वािण् मान्य स्वार्थित हार्य स्वार्थित कार्य गाँगि भागेय असेन गणभावतः आत्र दूव-संविधात स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वर

त्तव ज से बहुण नागनमूत् कृतमूम् सुताम औद्यार् समाज अवमेयाह्य अभिगाह अभिगाहह:~

"करपड में रहमुगल मनास संतासेमाजस्त जे पु<sup>र्टिंड</sup> प्रजाह से पष्टिहणितए अवसेसे न फल्पई लि"।

अग्रमेयारुवं ऑमगाहं अभिगेण्हदः अभिगण्हितः पृष्टमुससं संगामं संगामीत । ता व वह बहब बाग नद्या बहीं न्नानगृह है यही जाता है घोष राजा क्रेजिक को ताबू स्तान करन, अब्छे बहन परिधान करता है, तब पानवा में सारों रक्त कि बागियत करता है। सारायि के सुनित कर तहीं शासिय के सारे अने के सुनित कर तहीं शासिय के सारे अने के सेनाधित सावयू दूर, संधियाल आदि से परिषृत होन र निकलता है। निकल कर जहां आयुध्याला है, नहीं बार घण्टे बाले अस्वस्य नेयार है, यहां आराष्ट्र है। अकर के बार पण्डे बाले अस्वस्य नेयार है, यहां अराष्ट्र है। अकर के बार पण्डे बाले अस्वस्य में बेटता है, धेठकर पावन् घोषा हाथे प्रका अस्वस्य में बेटता है, धेठकर पावन् घोषा हाथे प्रका सुरे सह है बार अस्वस्य के बेटन हमा करने प्रका सुरे सह है। आहर के स्व-मुसल सुद्धान हो रहा है बही आता है। आहर के स्व-मुसल युद्ध में कर बाता है।

षदण नाम सद्या रथ-मुसल युद्ध में लगने से पहिले इस प्रकार अमिग्रह चरता है:-

''रच-मुसल संग्राम में युद्ध करते हुए मुझे जो प्रथम प्रहार करेगा उसो को प्रहार करना मृत कल्पता है। दूसरो को मारना मुझे कल्पता नहीं हैं '।

ऐसा अभिप्रह करके रय-मुसल संप्राम में युद्ध करता है।

रथ-मुसल संग्राम में मुद्ध करते २ उस वरण भाग नदुआ के रच के सामने एक पुरुष समान शक्ति याला, समान रूपवाला समान शक्कबाला स्टाम कार्यकारा व्यक्तिराज्य मार्च अस्त्र नए णं से तस्स बष्टगस्य नागवलुबस्स रह्<sup>तुतं</sup> सनामं सगामेमाणस्स एमे पुरिसे सरिसए सरिमतए साँ सत्तए सरिसच्यए सरिसमडमतोबगरणे रहेणं पश्चित्हं हुर्व आगए।

तर ण मे पुरिसे वरण नाणनतुए एव वयासी

'पहण मो बरणा ! नागवतुषा !' तए णंसे बरणे नागनतुष् तं पुरिसं एवं वर्षा<sup>नीत</sup> नो सक् मे कप्पइ देवाणुष्पिया ! पुब्बि अह्<sup>यान</sup>

पहिलहाए, तुमं चेव प पुष्यि पहिलाहि । तए ण से पुरिसे वरले नागनसूर्ण एवं वृते<sup>र</sup> समाणे अपुरते जाव निनिमितिमाणे धर्णु परामु<sup>ता</sup> धर्णु परामुतिस्ता ठाण ठाति, ठाणं ठिच्छा. आवयक्<sup>त्रा</sup>

धर्णु परामुसिसा ठाण ठाति, ठाणं ठिक्चा, आयमक्त्राः मम उत्तुं करेह, आयमक्त्रामयं उत्तुं करेहा। यहणं ना<sup>तः</sup> नसुत्रं एगाहच्चं कडाहच्च जीवियाओ ववरोवेह । तए जंसे यहमं नागनसूर तेणं पुरिसेण गाडापहारी

कण् समाणे अत्यामे अयले अयोरिण् अपुरिसण्कारण्यः वक्तमे, अधाराजाकानित कट्ट तुरण् निर्मण्हद, तुरण् तिर्माण्हद, तुरण् तिर्माण्हद, तुरण् तिर्माण्हद, तुरण् तिर्माण्हद, तुरण् तिर्माण्हद, तुरण् तिर्माण्याचे स्वाप्ताचे स्वाप्ताच

٠.

ि उस पुरुष ने यरुण नाम शरुक्षा को ऐसा कहा-हे बदण नाम सरुक्षा प्रहार करो ।

तथ वहण नाग नद्भा ने उस पुरुष को ऐसा कहा-है देवानुप्रिय ! मुझे पहिले नहीं मारे उसको भारता मुझे करपता नहीं है। अत. आप ही प्रथम प्रहार करें।

त्र वस पुत्र में बकत नाग नद्भा के ऐसे बोलने से कीयित होकर और रस्त नेत्र करके. दांत पीन कर धन्य हाथ में किया। धन्य वडा कर प्रत्येचा आदि ठीक करके योग्य स्थान पर रस्ता। बाण सद्दा कर कान तक बाण को सीया। का तक कींब कर यहण नाग नद्भा को एकदम याण मारता है।

सरनत्वर कृष्ण नात महुझा, बात पुरत से द्वारा याद्र महार करने पर तांत्रतहोन, निर्वेल, निर्वोधं क्या पुरतकार-पर कम से हीन हो गया। अब जीवन नहीं रह सकता, ऐसा सोक कर वह पोड़ों को रोकता है, जोड़ों को रोक कर रथ कीटाता है। एक को कीटा कर रथ-मुनल गयाम से बाहर निकल जाता है। किल्म कर एकाल में जाता है। एकात में जाकर धोड़ों को होस्ता है। के कर रथ को सड़ा करता है। एस को घड़ा करके एक से भीचे उताताहै।

# विजये चेरि

तए णंसा महा सत्यवाही अन्नया क्याई देविष दारयं पहायं कपयिनिकत्मं कवको उपमालपाधिक सत्यालंकारम्सिमं करेति पंचमस्स दामचेडयस्त हुत् यात दलयति । तए णंसे पंचल वासचेडण महाल सत्यवा

तए णं से पंयए बासचेदए महाए सर्ववाध हस्याओ देवदिलं बारगं कदिए गिरुहति, गिणि सवातो गिहातो परिनिश्चमति, पर्विनश्वक्रमाता देव हिश्यहि म दिसियाहि म कुमारमाहि म सर्वि सेपी केमेब राममगे सेमेब उद्यागछ्द्द, ज्वागिष्ठ्रणा देव सर्गं एगते ठादेति, ठाविसा महोई डिगएहि म कुन

याहि य तदि संवरित्ये पमले बाबि होत्या विहरति

द्दर्भ च णं विज्ञल् तरकरे शावितहरूस नगरस्य । बाराणि य अववाशाणि य सहेव आशोल्माणे मार्ग गवेतेमाणे जेणेय वेवदिन्ने बारल् तेलेख जवाताच्छा , मच्छिता देवदिन्ने बारलं सम्यालेकारिकमूमियं प

#### विजय चोर

किसी समय प्रदानामक सार्थवाह-परनी ने अपने 'देव-दस' दुमार (पुत्र) को स्तान करा कर, विलयने (देव पुत्रन) करा कर, प्रनिद्ध निवारण के लिए तिलक आदि समा कर और सम्प्रमुद्धारों में जिब्बायन कर प्रयक्त जामक नीकर के हाथ में दिया।

उस पषक नानक नीकर ने भहा सार्यवाही के हाब से बत वेयरसङ्गार की गोद में लिया और अपने घर से निकल बर अनेक बातक-वालिका और कुनारों को साथ लेकर जनते विराहुआ राजमान पर आया और उस वेयस्त बातक को एक और बेटा कर बहुत से बातक और बातिकाओं के साथ सेल कर में गांकिक हो गया।

हार विश्वस नामक चौर राजगृह नगर के बहुत से हार, परवार ( विड्रोकवां या गुमाइरर) को देशता हुआ, को तता हुआ, और गदेशमा करता हुमा जहीं देशदा कुमार देश सा, वहीं आया। उसने देशदत कुमार को सब शर्मकारों से विज्ञ्यित देया और उस साकत के महनों में मूछित, गुढ़, आससत एव सब-कीन हो गया। उसने पत्रस्त नोकर को सामाध्यान देशा और वारों सरक देखकर इस देशदम सानक को बड़ाकर गोद में दिवा ण्हाम जाय सम हृत्यति दलवति । तए वं श्रे वेबदिन्न दारम कडी र मिश्हानि निष्हिता स्थापनायेमणं करेमि, त म णजनति णं सामी देवी

वारए केणइ हते वा अवहिए वा अविसते द्या !" सए ण से घण्णे मत्यवाहे पंचयदासचेडवस्स ए<sup>ण्यु</sup> सोडवा णिसम्न तेण य महया पुतसोएणामिमूने तसी

परसुणियत्ते चनगरायवे धसति धरणोगर्वति तार्वते सित्रदर्ग । तए म से धन्ने सत्यवाहे ततो मृहुत्तंतरस्स नार्वते परान्तमाणे वेववित्रस्य वार्तारस्य स्थानित स

गयेसणं करेति । वेबवित्रस्त दारगस्त मस्वय मुद्र वा र् मा पर्जात या अलमागणं जेलेय सार गिह तेथेब उवार् चटड, जवागच्छद्दा महत्य पाहुं गेल्हित, गीर्ष्ट जेलेब नगरगृत्तिया नेलेब जवागच्छति, जवागच्छिता महत्यं पाहुदं जवलयति, जवानित्ता एवं वयासी:

अत्तर देवदिमे नाम दारए इहे जंबरपुर्का विव उ<sup>हर</sup> सवणवार किमंग पुण पासणवार । तर जं सा <sup>ह</sup> दर्भ रहाय सध्यालंकारविभूतियं यंवगस्स हस्ये <sup>दहर</sup>

"एवं सल् देवाणुष्यिया ! मम पुने भद्दार भारिय

मार्ग पर ले गया इत्यादि याधत् मेने सूब तलाझ की लेकिन कहें। दैवदत्त कुमार का पता नहीं चला । न जाने किसने देवदत्त कुमार का अपहरण किया ? कौन उसे उठा लेगवा ?

मीकर पत्यक के ऐसे शब्दों को सुनकर-समझ कर धन्ना सर्पवाह पुत्र के शोक से अत्यान व्याहुल होकर कुरहाई से कार्दे हुए सन्यक वृक्ष की सरह धन से सर्वोद्ध से पुत्री पर गिरपड

थोडे समय के बदबात ग्रम्ना सार्थवाह कुछ स्वस्य हुए और रव्यासाय करते हुए देवदल छुमार की सब तरफ सलाम करते हैं। परन्तु कहीं से भी उस बातक के कुछ समाबार, निमान और बदर ने बिलते से के अपने पर आये और बहुसूस मेंट लेकर गाररसकों (कोतबाल आदि) के वास गर्य और मेंट सामने स्वकर इस ग्रकार थोल-

"हे देवानुप्रिय! मेरा पुत्र, मदा भार्या का आस्मन्न देवदल प्रमक कुमार जो हमें आसि एटर है और उद्दावर पुर्प के समाद पुत्रने में भी दुर्जम तो देसने को तो बात हो क्या? उसे मदा मर्माने करा कर और एक आनुमानी देविप्रित कर पक्र के हाथ में दिया था यावत उसे कोई उठा है गया हूं इस-

युत्ता समाणा सम्रद्भवद्भविम्मयन्यमा गहिया<sup>उह्दह्</sup>री धन्नेनं सत्यवाहेण गाँउ राषागृहस्स नगरस्स बार स्रतिनमणाणि या जाय प्रयासु स मध्यत्वावेतर

42 1 वेयविद्यवारगस्य सञ्दर्भा सम्मता संगणगयेमणं करेई। तए ज ते नगरगोत्तिया शब्जेण सध्याहेर्ण हो समाजा सम्बद्धाः

करेमाणा रायगिहाओ नगराओ पडिनिवसमिति, विर्हत बलमित्ता जेणेव त्रिणुक्जाणे जेणेय भग्गक्षण तेर्द खवागच्छति, खवागच्छिता देवदिसस्म वारमस्स सरीर्ष निष्पाणं निच्चेह जीवविष्यज्ञदं पासंति, पासिता हा शि अहो अकज्जिमिति कट्ट देवविसं दारग भागकृषाओ उत्ता रैति, उत्तारिता धण्णस्स सत्यवाहस्म हत्येणं दलवित तए णंते नगरगृतिया विजयस्म तवकास्स व मागमणुगच्छमाणा जेणेव मालुयाकच्छपं तेणेव उत्री च्छति, उवागच्छिता मालुवाकच्छ्य अण्यविसति, अ पविमित्ता विजयतनकरं सत्तवल सहोड मगेवेडज, जी ग्गाह गिण्हति गिण्हिता अद्विमुद्विजाणुकोष्परवहारह गमहिम्मत करेंति, करिता अवउडाबंधणं करेंति, करि देयदिसगस्य दारगस्य आभरण गेण्हति, गेण्हिसा वि स्स सक्करस्स गीवाए बधति, बधित्ता मालुगा<sup>हर</sup> गाओ पडिनियसमिति, पडिनियसमिता जेणेव राम

्र देश भाग 13

निए में चारता हूं ति है देवातृत्रिय ! देवरत कुमार का सब तुरुक मोध और तताम हो ।

यप्रा सार्चवाह के द्वारा वैसा कहे जाने पर वे मगरराज्य

, इंडेच जाहि बांब कर, तास्त्र-अस्त्र सेकर ग्रमा सार्यवाह के साथ राष्ट्राह नगर के बहुत में मावन पानी के स्पानों में सलाहा करते

, हैंए शबगृह मगर से बाहर निकलने हैं और जहाँ जीर्च उद्यान और वह मान कृप था, अग्रर जाते हैं और देवदत कुमार के निस्त्राण निरमेन्द्र और जीव रहित प्रारीर की देगते हैं। 'हा ! हा ! अकाम

हीं गया ऐसा कप्रकर देशदत कुमार की मलकूर से बाहर निकालने हैं और प्रश्ना मार्चशह के हाव में देते हैं।

तब वे नगररक्षक विश्य सस्वर के पर-चिन्हों का अनू-सरण करते हुए जिल्ला मानुकाहण्य या उत्तर जाते हैं और मालुकाबच्छ में प्रदेश करके विजय चोर को पकरते हैं और वन्डों, पृष्टियों, घटनों, और कोनियों के प्रहार उसके शरीर की

हरू को चूर-चूर कर देते हैं। यधन से बांधते हैं और देवदल क्रार के सब सामयण है। होते हैं। तरपृत्यास विजय कोर की

( क्षेत्र बाडासरी 14)

मगरे तेनेच जवागक्छति, जवागविक्तना रागणित वर्ष अमृत्रविवर्शन रायशिक समारे कवरतकारे य तथानारे इ

छियातहारे म निवाल्यामा निवाल्यामा छारं ब<sup>शूद</sup> य क्यापरं च प्रवृति प्रतिकरमाणाः महत्ता महत्ता ह<sup>हूद</sup> बन्धानेमाणा त्य वद्धाः-"एम ण वैवाण्षिया ! विजाए नामं तवतरे जा

गिन्ने विष आमिसभक्ती सालघायम् सालगारम्, ते हे कल देवाणुलिया ! एयरम केति शया वा रार्ड या रायगच्छे या अवरणाति, तृत्यहु अध्वणो स्वा

करमाई अवरम्बति" ति कट्ट जेगानेय चारमसाला तेडी मैय उवागच्छति उवागच्छिता हाडियग्रणं करेंति, केरि भसपाणनिरोह करेंति, सरित्ता तिसंश कसप्पहारे म अ

निवाएमाणा निवाएमाणा विहरति । तए णं से धण्णे सत्यवाहे मिलनातिनियगस्य संबंधिपरिपणेणं सद्धि रोयमाणे विलयमाणे देविहर्म

बारगस्त सरीरस्स महमा इड्डीसक्कारममुदएणं निहर करेति, करित्ता यहुई छोलियाति मयगकिच्चाई करे

करिता केणइ कालंतरेणं अवगयसीए जाए यावि होत्म तए णं से विभए तक्करे चारगतालाए तेहि संवे वधेहि मामध्यहारेहि य तण्हाए य छहाए य परस्मवम कालमासे कालं किच्छा नरएस नेरहयसाए उदवसे । ोघ से बांबते हैं और मालुकाश्च्छ ने निकल कर राजगृह गपर में मदेश करते हैं और चाबुक के यहार से लता के प्रहार में मारते हुए गूला काब्ब और कचरा ऊपर डालते हुए जोर-बोर में बढ़योपणा करते हुए बोलने हैं किल-

"है देवान्त्रिय! यह विजय नामक चोर यावत् गिद्ध की नाह नांसवक्षी टालक की हंग्या करने पाता है, दालक का धात-करने पाला है इसलिए है देवान्त्रिय! इसे कोई राझा, राजपुन या राज्य प्रत्यो दण्डित नहीं करते हैं किन्तु इमके अपने कर्मे हैं। इसे दण्ड दे रहे हैं ऐसा कह कर जिस और जेल खाना था, उपर के जाते हैं और बेंड्यों से जकदते हैं तथा आहार-पाती का निरोध करते हैं और अतिदिन तीन समय चावक के प्रहार करते हैं।

जयर घमा सार्थवाह भित्र-जाति स्वजन-सम्बन्धियों और पेरिकां के साथ रोते हुए, विलाय करते हुए, वैयवत कुमार के सरीर का बड़ी व्यक्ति हार सारा-जम्मद्रयत (समृद्धि) के साथ अस्तिम संस्कार करते हैं और बहुत-कोनिक मृग्य-कार्य करते हैं और कालाकर यें बोक रहित हो जाते हैं। त देहद निवापुत्ते, विदृश्चि अणिनिसाए छ ।

कहिमझेरिस रूब, विदुष्ट्यं मए पुरा ॥६॥ साहुत्स वरिसणं सत्स,अज्ञायनाणंमि सोहणं।

मोह गयस्स सतस्त, जाइसरण समुत्यक्रं गणा जाइसरणे समृत्यक्रं, मियायुते महिश्रिडए । सर्द्र पोराणिय जाई, सामदण च पुराक्त्यं ॥८॥

यिसएहि अरज्जेतो, रज्जतो संजर्मीम म । अस्माविमरम्बागस्म, इम ययणमःवयो ॥९॥

सुवाणि मे पच महर्यवाणि. नरएसु दुश्सं च तिरिवलजोणिसु १ निध्यण्णकामो मि महण्णवाओ, अणुनाणह पथ्यक्षसामि अम्मो ॥१०॥

अम्म ताय ! मए भोगा, भुता विभक्तलोवमा । पष्छा मञ्च्यवियामा, अणुबधबुहायहा ।।११॥

इमं सरीरं अणिक्चं, अमुद्दे अमुद्देसंभवं | अमासवावार्मामणं, दुक्तं केसाणभावणं ।।१२।| पृगापुत्र सींस की पलक गिराये जिला एक हस्टि से उन योगोदवर को देगता या ओर विकार करता है कि ऐसा रूप (वैस) पहुले मैंने अवदय कहीं देखा है।

जन भागूनी के दर्शन होने के बाद इश्वयकार विचार करने हुए मु अरब्याबनाय जगान हुए और मोहनीय कर्य के उपमान्त .होने से उसे बही अनि-स्पष्ण ज्ञान उत्परा हो गया।

जातिसमस्य क्षान उपया होने यह महान् ऋदिमान भूगा-पुत्र अपने पूर्व काम का स्मरण करता है। पूर्व जाम स्मरण करते हुए जैसे पूर्वयम में स्वीकार किया हुमा नाग्यमन भी याव आया।

हैं होसे) विषयों से विश्वित और समय के प्रति प्रीति उत्पत्त हैं और यह माता-पिता के गायी व साकर इस प्रकार केले लगा-है! माता-पिता के गायी व साकर इस प्रकार केले लगा-है! माता-पिता! में में पूर्वकाल में यां सहायत रूप मर्ग मुग है (यालम किया है), नरक और नियंद सीति के दुलों सो में में जाता है इविलय सासक्यों गमूद से में निय्त होना कारता है जा साम मुद्दे साम प्रति प्रतः आप मुद्दे साझ वीजिए। में प्रकार साम करीन

हैमाता पिता! किपाक फुट के समान प्रारम में अपछे रुपने बाले परन्तु परिचार में अति कट्क भीर एकात दुझ की परस्तरा बटाने बाले भीगों को सेने (सहते और समी) भीग लिए हैं।

महदारीर श्रमुचि (शुक्ररजा ) से बस्तम हुआ होने में अपवित्र शीर अनिया है। यह दुक्त और बसेश का साजन है और सशाहबत बमा बाला है। मसागए गरीरस्मि, रहं नोवलमामही पच्छा पुरा व सङ्घरवे, केणबुरबुवमनिः । ११

माणुमते अमारंमि वाहीरोगाण आलए। जरामरणघत्यनि राण वि न रमामह ॥१४॥ जन्मं दुवल जरा दुवल रोगाणि मरणाणि मः।

अही दुश्यो हु संमारी जत्म कीमंति जतवी ॥१५॥ षेतं यत्य हिरण्यं चपुत्तदार च बंधवा ! चइत्ताणं इम देह गतस्यमयमस्य मे ।।१६।। जहा कियागकलाण परिणामो न सुंदरो।

एव मुताण मोगाणं परिणामी न मुंबरी ॥१७॥ अद्धाणं जो महंतं तु अप्पाहेओ पब्यज्जद । गच्छतो सो दुही होइ छुहा-तण्हाए पीडिओ ॥१८॥ एय धम्म अकाळण जो गच्छड्ड पर भयं ! गच्छतो सो दुही होइ बाहीरोगेहि पीडिओ ॥१९॥ अद्भाणं जो महतं तु सपाहेओ पवज्जइ ।

गच्छतो सो सुहो होइ छुहा-सण्हाविवज्जिओ ॥२०॥

एबं धम्मं पिकाऊ ण जो गच्छइ परंभव । गण्छतो सो मुही होइ अप्पक्तम्मे अवेयणे ॥२१॥

पानी के शान और युद्धु के समान शाणिक शरीन में भ भानाद नहीं पाता है। यह दारीर तो पहले या बाद में आगे पीछ अब्दय ही छोड़ना है। (तो इम्में बया आगवित राग्नो चाहिए?)

ध्याधि और रोग के घर सथा जरा एवं भरत से प्रसित इस प्रसार मनत्य बेह में (अब) में शण भरने लिए मी आनन्द

न्ही पासकता है।

मही। यह सारा समार सचन्य इ.लमय है। इसमें रहे ए प्राणी जन्म, जरा, रोग और मरण के दःत्र से पीटित हो

रहे हैं।

क्षेत्र, बस्तु (घर) सोना, पुत्र, स्त्री और बन्धुओं को तथा सि दारीर की छोड़कर भी पराधीन रूप में मही अवदय जाना ही है ( अर्थात् आपे पीछे मरण हो होने बाला ही है । ) जिस प्रकार कियाक फल का परिकास अक्ला नहीं होता है इसी तरह भीगे हुए भीगों का परिवास भी अच्छा नहीं

ोता है । जो ध्यक्ति पार्थय (मार्गके लिए कीजन) लिए बिना ही

तम्बे मार्ग में प्रयाण करता दे वह क्या-त्या से पीदित होकर राएं में आता हुआ दुखी होता है।

इसी प्रकार जो ध्यक्ति धर्म का आचरण किये दिना ही । रमव में जाता है यह स्पाधि और रोग में पीडित होता हुआ (की हीता है।

जो स्पक्तिसीयं भागे पर प्रयाण करते हुए साथ में पायेस रे आता है यह शुधान्त्वा मे पीडित नहीं होता और मार्ग में गता हुआ सुको होता है।

इसी प्रकार जो जीव धर्म का आचरण कर परलोक सं शना है यह अल्प कार्स बाला और वेदना-रहित होता ।

इकी होसा है।

त्रज्ञः स्टेन्दित्व तरत्त तत्रण की बहुँ। सारभगाण भीगेदः अवारं अवगण्त शिर्शे एवं लीत् निल्वां करात् वर्णेल यः। सर्वाण तारद्रगाति नृथीत् अणुवित्रभे शर्थे। -जतराह्ययम सत्र अध्यक्ष ह

# संदष् परिव्वायगे

तस्य र्ण तायत्यीष् नवरीष् गहमानस्त अंतेशनी संवय जामं कष्णायणस्त गोशं वरिष्वासमी वरिवर्द रिज्युवेर-जामवेय-अन्दवज्येद-एतिहासप्यासः निर्माद्ध्याणः, चाउष्ट्र वेदाणः सामावाणं-साहरसार्वः सारप्, बारप्, धारप्, वारप्, सहमायो, छत्ने, निवसं, जोशः सामयणे, असेमु य बहुमु कम्महण्णपमु परिव्यापम् मुमेषु मुवरिनिद्विष् या वि होस्या ।

तत्त्व णं सावस्थीए नमरीए विगलए आमं निवंडे वेसालियसावए परियसइ | तए ण से विगलए नाम निवंडे वेसालियसावए अग्नया कयाइ जेनेय संबए कच्चाय<sup>धन</sup> गोले तेनेय उपागच्छह, उपागच्छिता संबए कच्चाय<sup>धन</sup> इनानक्षेत्र पुच्छह-मागहा ! कि सअंते लोए अणते जैसे घरमें जागलगरे परधन घर का स्वामी मारमूत भौजों को साहर निकालता है और निस्सार चीओं को छोड़ देता है ]

कताह। इसीतरहमहलोक (मंसार) जराजीर मरण में जल (रड़ाहै इसलिए में आपकी आजा प्राप्त कर (असार मोगों की) ओड़ कर) इस संसार में अपने आपकी तालंगा।

--- उत्तराध्ययमसूत्र अ. १६

### स्कन्दक पारीवाजक

स्वायस्तो नगरी ये गहेबाल जावक दिखामक का शिद्य, कात्यायनगोत्रीय स्कटक नाम का परिवाजक रहता था। वह स्व्येद प्रमुखें, प्रमुखें, सामवेद, समर्थवं, समर्थवं, सामवेद, समर्थवं से सो यो वेदों का, शिव्य इतिहास, पुराण का तथा छट्टा निर्मट का सांगोपांग और रहस्य महित प्रवसंक-याव कान्य छात्र, उनमें होने वालो मूर्जों को रोकने वाला (वेदादि साल्यों को) धारण करने घाना काल्य पायना कोर एड अर्जों का आता था। यह परिवानम् (कालिकोय साल्य) में विद्यास्य सांगोप गितत, शिक्षाकार्य सायाराव्य, स्वाकरन, छात्र क्यास्वर, स्वाकरन, स्वावर सामव्य भीर अर्था वहुत से जाह्मण और परिवाजक सम्बद्धी नीति और वर्षान सहस्वी नीति और वर्षान सावर से से में बहुत कुला था।

<sup>&</sup>quot; महावीर स्थामी के बचर्ती की सुनने बाला अतः माबक

लोए ? स-अने जीवे अजने जीवे ? समता निद्धी प्रतंती सिद्धी ? सअन्त निद्धे अजने निद्धे ? केण वा मार्दे मरमाणे जीवे वहदति वा हायित वा ? एतावं ताव प्रतं वा लाहि । वृष्यमाणे एवं तए जं से खंदए कष्टवायणीं विमल्हणे नियंदेणे वैसालियसायएणे इणमवलेयं वृष्टि समाणे संकिए, कांतिए, वितिचिष्टिहण् मेदं ममावसं बहुत ममावसं वा लाहि मावसं वा लाहि समाणे संकिए, कांतिए, वितिचिष्टिहण् मेदं ममावसं वा लाहि ममावसं को लाहि समाणे संकिए, कांतिए, वितिचिष्टिहण् मेदं ममावसं विष्टे ममावसं वा लाहि समाणे संकिए, कांतिए, वितिचिष्टिहण् मेदं ममावसं वा लाहि समाणे संकिए, कांतिए, वितिचिष्टिहण् मेदं ममावसं वेसांतिर समावसं वा लाहि समावसं समावसं समावसं वा लाहि समावसं स

पिगल्लूणं नियंद्रेणं येसालियसायएणं इणामवर्थेयं पुष्टिः
समाणे संकिए, कंत्रिष्, वितिगिन्छिए भेदं नमावये कृत्रेन
ममायमे जो णं चाएइ पिगलयहस नियंद्रस वेसालियः
सायपस्स किचि व पमोवलमक्ताइउ, नुसिणोए तंत्रे
हह, तए णं से पिगलए नियदे वेसालियसावए तंद्रे
करूचायणगोर्स द्वीरचं वि तस्चं पि इणामवर्षेयं पुर्छे।
मागहा ! कि मागते लोग्- जाव-केण वा मर्गेणं मान
माणे जीये बहुद्दित वा हायति वा ? एतावता व आर

क्लाहि । बुच्चमाणे एवं, तए णं से खंडए कच्चा<sup>वर्ष</sup> सगोसे विगलत्यं निवंडेण वेमालियसावर्णं दोड्डे तच्च वि डणमक्लेयं पुष्टित् ममाणे संवित्, कं<sup>तिर</sup> वितिगिष्टिए, भेदगमायसे कल्नसमायसे णो सं<sup>वादी</sup> विगलस्म नियंडरम नेमालिय-माज्यस्म कि चि वि वरी<sup>र</sup>

ं मुहिणीए सध्यह । सत वां जानवरीए नप

1 5%

हैट्टा भाग ) र् है या अनन्त है ? जीव सान्त है या अनन्त है ? सिद्धि सान्त

ार्हें या अनन्त है ? सिद्ध सान्त है या अनन्त है ? किस भरण से र्भा <sup>भरने</sup> परं जीव बद्धता है या घटता है-- अर्थात् किस तरह मरने

भी जीव का मंसार बढता था घटता है देन प्रदर्गों का तो उत्तर दो।" (ऐसा विगलक साधुन स्कादक तापस को पूछा।) K जब वैज्ञालिक-धावक निर्यन्य पिगलक ने कारदायन-

<sub>वर्ग</sub> गैत्रीय स्वन्दकको आक्षेपपूर्वक इस प्रकार पूछातो बहस्कन्दक तीपस "इन प्रश्नों का यह उत्तर होगा या दूसरा "इस प्रकार <sup>कृति</sup> का उत्तरमझे कैसे आवे ? ऐसी कांक्षा बाला हुआ, मैं उत्तर र्देगा, उससे प्रत्नकर्ताको प्रतीति होगीया नही इस प्रकार

र्श विश्वासी हुआ तथा उसकी बुद्धि में भेद हो गया (बुद्धि कृष्टित हो गई ) । यह कलुपता (शलेश) को प्राप्त हुआ परंतु बैशासिक र्<sup>ही</sup> आवक विगलक निर्पत्य के प्रश्नों का कुछ भी उत्तर न दे सका हीं और चुपचाप रह गया। तब वैशालिक भावक पिगलक निर्पन्य

अ ने कारपायनगोत्री स्कन्दक को दो-तीन बार मी पूर्वरीति है अपनेप पूर्वक पूछाकि है मागछ ! लोक क्या सास्त है यावन किस प्रकार के भरण से जीव का ससार बडता है या घटता है ? र्नि इन प्रश्नों का उत्तर दो। जब पुनरपि बैद्यालिक-आवक पिगलक 😝 निर्पत्य ने दो-सीन बार कात्यायनगोत्री स्वन्दक की इस प्रकार पूछा तो भी वह स्कारक शहा वाला, काला वाला और बहुत स्तेश को प्राप्त हुआ, परस्तु वंशालिक-धावक विगलक निर्माण र्तको पुछ भी उत्तर न दे सका और खुपचाप बंठा रहा।

उस समय आबस्ती सगरी के तीन कोने वाले मार्ग में हें पानत् महा पर में, बड़ी मारो मोड़के रूप में या मनुष्यों र ब्यूट्ट के राज्य जाना कर्य अनुवाद । परिवास पार्मित्याकी के राज्य जाना कर्य अनुवाद । परिवास पार्मित्याकी काना वार्मित क्योरि

का न्यान्यान्त्रे सारायां गायित्यं स्वित्यां स्वयं । शायां गायित्यं स्वयं स्वयं । वित्यां वित्यां क्षेत्रं । स्वयं स्वयं स्वयं । स्वयं स्

वानी नित्य में सावत्यां निवास परिवास वर्षः वानी चरित् नाम कर्ण्यायाका गांशे परिवास वर्षः सबद । त वेष, माक-केंगेय नम भतिए नेवेण वहारे गमनाए, से अनुरागते, कहुनगते, महागाविष्ठां अर्थे वहे बहुद्द, अग्नव ण बच्हांन गीयमा । सेते। ति. प्रश् गीयमे सम्म भगवं महावीद चव्द, नमगद, वर्षिता, नर्म मिला एवं थयासी: वहूं म सने । त्यत् क्ष्याया

गांसे देवाणांत्वाण आंतर मुझे स्विसान आतारा अणगारिअ वश्वद्रस्त ? हता, यस ( जाद स ज स मार्थ महावीरे भगवजी जोयमस्य एयनहें वरिकहेंहैं, य स ज स स्वयुक्त क्षाणसमाने त देस हस्य आग तर थीर पूर्व प्रार्थ कर, गेंद-ब्बत बस्प्रवृत्त कर बहुन्दावर तायस ्यायत्वी नगरी के सदय में होकर जिस्त्या है तया जिस और इत्त्राह्म नगरी, छत्रपत्नाशक चेंग्य और जहां था पा नगयान् पहिलोर विराजधान थे बही जाने का संशत्य करता है।

( 63

है महावार दिराज्यान ये बहु जान का संकरण करता है।

इयर 'गीनम' इस प्रकार आसावण का ध्रमण भगवान्

महावार वे गीनम' इस प्रकार आसावण का ध्रमण भगवान्

महावार ने गीनम' इस प्रकार आसावण का ध्रमण भगवान्

है महावार ने वे स्वान्धार्थ के। देखोगे। गीनम ने कहा- है सवस् है महावार के वे ने वे स्वान्धार्थ के। देखोगे। गीनम ने कहा- है सवस् है में किस की वे ने वे माण माणान्धा से रूप कर कारण की। है साम है वह भगवान् ने कहा- है गीनम । उस काल अस समय में प्रवान का असेवानी (श्राप्त) कारणान्धार्थ स्वान्ध ने ति से प्रवान का असेवानी (श्राप्त) कारणान्धार्थ स्वान्ध कर कर कर साम स्वान्ध के आरेव का अस्त अस असने से प्यास्त आने का सक्त किसा है और यह अस असने से प्यास्त दूर कही है, गीनम ( उसे सु आज हो देखाग ।

पित मावन !! ऐसा कह कर भावतान गीनम ने द्रभण मावतान महावीर को सदसा-तमहार करने पूछा कि-है धर-बन् ! चया कारणायन गोभीय करना-तमहार करने दे कहा किन्द्रिय के पास बन् ! चया कारणायन गोभीय करना आग दे कहा निर्माण करना में मावता होकर, आगार (घर) को छोड़ कर अनगार बनने में समर्थ है ! मावतान कोले-हाँ, समर्थ है। क्य बमण सरवान् महाभीर, गीतम को यह कात कह कहे वे कि दूतने में कारणायन गोभीय क्षावस्क कहीं सीप्त सा गर्थ। कच्चायणस्य गोल्लेण गाँद जेनेच समणे भगव महात्रीरे तेणेव पहारित्य गमणाए । तेणं कालेणं तेणं भागणं समणे मगवं महावीरे विषट्टमोई या वि होत्या । तए स समणस्य मगवओ महाबोरस्य विषट्टमोद्देश हारीर ओरालं सिगारं कल्लाणं सियं छद्रं मंगल्लं अ<sup>जालं इ.ज.</sup> विम्सियं लक्षण यंज्ञण-गुणोववेअं सिरीए अईव अर्ध उबसोमेमाणं चिट्टइ । तए णं से खंदए करचायणस गोत्तं समगरस भगवओ महाबोरस्स विषठ् मोइस्स सरी रयं औरालं जाव-अईव अईव उक्सोर्ममाणं पार पासित्ता हडतुद्व-चित्तमाणंदिए, णंदिए, पीडमणे, परा सोमण मेर् हरिसवसांबसप्पमाण हियद जेणेव सम भगवं महाबीरे तेणेव उवागच्छ३ उवागच्छिता सम भगवं महावीरं तिक्लुक्तो आयाहिणवयाहिणं करेड, जार पण्जवासद्ध ।

अह जाणानि संदया ितए णंरी तंदए कच्दायमसी गोत्ते भगवं गोयमं एव वयासी:-गरुछामी णं गोवमा तव धम्मायरियं, धम्मोवएसयं, समणं भगवं महावेरी यंदामी नमनामी जाव पत्रजुवासामी । अहामुहं देवाणु विषया ! मा पडियंग्रं करेह | तए मं से मगर्व गोपमें लंडएब

'र्लदमा !' ति समणे भगवं महावीरं खदम करा

उनको पर्युशासना करता है।

त्रव कात्यायम गोत्रीय स्कन्दक परिवाजक ने भगवान् गौतम से इस प्रकार कहा-हे गौतम ! तुम्हारे धर्माचार्य, धर्मी-परेशक अभग मगधान महाबीर के पास चले और उन्हें बन्दना-नमस्कार करें यावत उनको पर्युपामना करें। गौतम स्वामी ने कहा-हे देवानुत्रिय ! जैसा सुन्हे ठोक लगे वैसा करो, विलम्ब न करो । तत्पद्रचात सगवान गौतम ने उस कारवायन गोश्रीय स्कन्दक परिवाजक के साथ जहाँ भमण मगवान महावीर विराज-मान ये वहां जाने का संकल्प किया । उस काल, उस समय भमण भगवान् महाचीर प्रतिदिन भोजन करने बाले ये। उम प्रतिदिन मोजन करने वाले भगवानु महावीर का उदार भूगार किये हुए के समान, कल्यांग रूप, द्वाव रूप, धन्य, मगल रूप असंकारों के बिना हो विम्पित, शुध स्थण-व्यञ्जन और गुणों से युक्त शारीर शीमा से अत्यन्त सुशीमित था। तब वह कारवा-यन गोत्रीय स्कन्दक प्रतिदिश्त भोजी भगवान महावीर के दशर यावत द्योमा से अति सुत्तीमित शरीर देलकर हवित इमा, संतुष्ट हुमा, आनिवत बित बाला हुआ, आनिवत हुआ, प्रोसि युक्त मन वाला हुआ, धरम सौमनस्य ( विस्त की परुपता ) को प्राप्त हुआ, तथा हुवं से प्रफुल्स हुदय बाला होकर वहाँ श्रमण मयवान् महाबीर विराजमान है उस बीर बाकर भमन भगवान महाबीर को तीन शर प्रश्निका करता है यावत्

'हेस्कन्यक !' इस प्रकार सम्बोधन कर समझ कायवान महाव र में कारमायनगोश्रीय स्कन्यक परिवालक की इस प्रकार

( भैम पाडायका 4. ) के थि स ते सामा ! जाय गर्जी जीये, अणंते जीवे तह

विय ण अय अट्टे-एवं कार्यु जात-वश्वओं में एमें ब्रीहे सजते, खंतात्रो ण जाये असलोजन-वर्गात्रं, असंतेज्ञ-

पएतोनाढे, बरिय पुत्र से अस्ते, मातजी व बीवे न कमाइ न शासी, जाय-निष्ये, महिस पुण से अले! मायजो ण जीये अणता णाणवज्ज्ञया, अर्णता इत्रवर परजया, अर्णता चारित्तपरज्ञया, अर्णता अगुरुल्हु वर्डज्ञा, नहिष पुग से अन्ते, से स दश्यओ जीवे समन्ते, खंदग्रे

जीवे सअन्ते कालओ जीवे अगते, मायओ जीवे अगते। ने वि य ते लंदवा! (पुच्छा) इमेवाहचे चितिए जात. कि सअन्ता सिद्धी, अणता सिद्धी, तस्स वि म म अर्थ

अट्टे-मए संबंधा ! एवं सलु चउव्विहा सिद्धी प्रवित्ती तंत्रहा:-दब्बओ, क्षेत्रजो, कालओ, मायओ । दश्यप्री णं एना सिद्धी सअन्ता संत्रशो णं सिद्धी पणयातीमं जीयणसयसहरसाई तीस च जीयणसहरसाई वी विण व अञ्चापम-जीवनसए कि चि विसेसाहिए परिवर्तवेत, अस्यि पुण से अन्तें । कालओ णं सिद्धीन कवा<sup>ह न</sup>

आसी, मायओ य जहां लीयस्स तहा भाणियद्वा। स्व

बब्दओ सिद्धी सअन्ता, श्रेत्तओ सिद्धी सअन्ता, कास्त्री सिद्धी भगेताः माथमो सिद्धी भगताः | जे वि ध

कहुं नाय)

है एकरक ! तुन्हें जो मह विवाद हुआ था कि जोव सत वाला है या अन्यन है उसका थी अर्थ यह है कि यावत इस से जीव एक है और अरत वाला है, टॉन से जोय अर्थ या प्रदेश वाला है और अर्थवप प्रदेश में अव्याद है इसलिए प्रदेश वाला है और अर्थवप प्रदेश में अर्थाद है इसलिए तका भी अर्थ है। बाल से जोव किसी दिन स्था एसा वहीं, पावत् निवार है और उसका अरत नहीं है। पाय के जोव नहीं, पावत् निवार है और उसका अरत नहीं है। वाल से अर्थन

वकता भी अपय है। काल से आप नहीं है। शाव के जीव कहीं, यादत निरश है और उसका अपत नहीं है। शाव के जीव करता सात पर्याय क्य है, अनता दर्शन वर्धीय क्य है, अनता अनुरुष्ण्य पर्याय क्य है और उसका अपत मही है। है हकत्व है इस प्रकार इस जीव आपत बाला है, क्षा जीव सात्त है, शाल-क्षेत्र अपत है और शाव-बीव भी अपत है। है हक्ष्यक । तुम्हें जो यह विकत्य हुआ या कि सिर्फिट

ह इश्यक । तुम्ह जा यह 1940 - 20 - अलर यह है किस्तत बाको है या अन्त रहिन है इसका को उत्तर यह है किस्वा को है या अन्त रहिन है इसका को उत्तर यह है किइस से छेर है, बान से और भाव का इस से विद्ध एक है,
और प्रन्य वालो है, खेन से लिडि को सम्बाई-बीडाई चेनालिय
स्वा योवन को है और उनको परिण्य एक कोइ यवानिस
स्वा योवन को है और उनको परिण्य एक कोइ यवानिस
है तथा उनका अन्त है, बान में लिडि किसो समय नहीं
पूर्ण नहीं, किसी क्या हमीं है तेना भी नहीं, किसी समय नहीं
रूपो पूर्ण महीं, किसी क्षा मार्थ हों। योवी किस साम से
केसा चित्र प्रमुख से साम से
केसा चित्र । इसमें इस्म सिडि अन्त याली है लेन सिड अन्त पानी है, काल से सिडि अन्त पहित्त है हो दाव से लिडि

सनत्त है। हे स्कारन दिन्हें जो संस्त्य हुआ या कि मिद्ध अन होते हैं या अन्तरहित हैं उसका स्पाटी करण जम प्रकार हैं.⊸ दिन बाते हैं या अन्तरहित हैं उसका स्पाटी करण जम प्रकार हैं.⊸ 1 to made

\*41 ने संबाध्यक्त । वे हिने नाववनकी ? पंडियारी कुनिहें वन्यमं, स, प्रष्टाः नाओवावयमं य, अस्तर्यन-क्ताणे स । में हि म वाभावणवर्षे कुर्वि, दस्ते, ह जहाः-मोहास्ति व अमोहास्ति व निवास अविद्यामे से सं पामीयापने । में कि स भागा कत कतार्थ ? मत-मक्यवत्ताणे बुविहे एमले, तः महाः मोहार्वि म प्रती-हारिमे य निषमा नगडिकामी, हो ते भनगडिणवत्राणी इच्छेतेण शंदवर ! दुविहेश वंडियमरगेण मरमाणे केंवे अणंतेहि नेरद्दयमयस्मत्याहि अल्याणं विवंतीएइ, अव-

बीहवयड । से सं मरपाणेण हायड । से ल पंडिवमर्थे इच्चेएनं शंदवा ! बुविहेनं मरणेनं गरमारे जीवे बर्डे वा हायह वा, एत्य ण में शंदर्व कल्वायणसगीत मन्द्रे गमणं मगव महाबोरं यंद्रइ, ममंगइ, खदिला, नर्मितना

एव वयासी: इच्छामि व भते ! तुत्र्या अंतिए केविं वन्नते धन्म विसामितत् । अहामुह्यं देवाणुरिवया ! द्वा वंडबध करेडू । तर णं समणे भगय महायोरे संदयस्य कडवायणे ्रे...., तीसे य महद्दवहालयाए परिसाए धम्मं धरिक

हेड । धममकहा माणिअस्या । तए जंसे संवर कडवार्य णसगीले समगस्स भगवको महाबीदस्स अस्तिए ध का भाग ( ईंं भ्रम्म के बात मरण से मरता हुआ जीव व्यवना ग्रंसर बहाता है। यह साठ अरण की बात है। प्रत्नात करण वहाता है। यह साठ अरण की बात है। प्रतन्त परिद्रत मरण प्रया है ? जतर-विद्रत मरण दो प्रकार का कहा गया है यथा—व्यवनावान ना स्वतप्रद्राध्यान । प्रतन्त प्रवास का कहा है ?

परिष्पाप्टत सर्वा हो प्रकार कर कहा गया है यथा—
परविश्वमक की मसतप्रदेशास्त्राम ।
प्रम्त— वादपोपतमक ने प्रकार का होता है- निहासि
करा- पादपोपतमम ने प्रकार का होता है- निहासि
(जिसके मस्ते पर अतिस सरकार दिया जाय ) और अतिहाँरिस (प्रित्ते मस्ते पर कोई संस्कार नहों ) । यह दोनों प्रकार
का वादपोपतमस मरण (यहां को तसह स्थित होकर मरना)
नियम से प्रति कर्स रिकत हो होता है। यह वादपोपतमम कर

क्षित हुआ।

प्रतिकार राहत हो होता है। यह पारवापामन का

प्रतिक हुआ।

प्रति-मक्तप्रसादपान किसे कहते हैं।

प्रति- मक्तप्रसादपान मरण दो प्रकार है बचा निर्हरिक सी

प्रतिहारिस यह दोनों प्रकार का मरण शतिक से वाला हो

तार- पर्यवप्रधायस्थान परण दो प्रकार है यथा निर्हितिस भीर क्षेत्रिहीं पर पर दोनों प्रकार का परण शिकस्य बाता हो हैं। यह भाग-प्रधायम्य परण है स्वान-पान का स्वाम कर है मरमा) का वर्णन हुआ। है हस्त्य है इस दोनों प्रवार के परिद्रत सरका से पर्या सामा जीव नेर्रायक के अनस्त अयो को नहीं पाता है। प्रायव नेपार-बन को पार कर काता है। इस प्रकार मरता हुआ जीव स्वार-बन को पार कर काता है। इस प्रकार मरता हुआ जीव स्वार-विश्व है। यह परिद्रत सरका की बात है। है इस्पर [ युवाँक वा प्रकार के मरण से घरता हुआ जीव सरना

करन । पूर्वेक दा प्रकार के मरण से मरता हुआ अबि अवना int बहाता है और पटाता है। पर पुनकर यह कात्यापनोत्रीय क्लाउक सम्बद्ध हो या (यसे तक्वा कान हो गया) । यह श्रम्य भगवान पहानीर को उद्विता समय भगवं महायीर तिषखुता आवाहिण वर्षाः हिण यारेह, करिता एवं बयासी:-सहहामि वं मते निग्गंथं पावयणं पतियामि ण मंते ! जिस्मंथं पावयणं रोएमि ण मते ! जिन्मयं पावयण, अन्मुहुँ मि ण मते ! णिमां चाववणं, एवमेश मंते ! तहमेशं मंते ! क्रि

तहमें मंते ! असंदिद्धमें मंते ! इन्छिप्रमें मंते ! इच्छिमपर्शिच्छभमेश मंती से जहें सुरमें वह ति कट्टू सम्पर्ण भगवं महाबीरं बंबह, ममसह, बंबिती, हर्ने सिता, उत्तरपुरत्यिम विसीभागं अववकमह, अववकिति

तिवहं च, कुहिशं च, नायच्याउरलाओं म एगंते एहीं एहिता जेणेय समने भाव महाबोरे तेनेव उद्यापक

उधारिकता समर्ण माथं महाबीरं आयाहिण वर्षाहि करेड, करिला जाय-नमंतिला एवं घमासी:-प्रार्ट ण भते ! सोए, पलिसे ण मंते ! स्रोए, आस्तित्वित

ण भते ! लोए जराए, मण्णेण म । से जहाणामए

श्चिष स्ट्राए, खेवाए, निस्सेयसाए, आणुगाविष

गाहायई अगारीस जिल्लाबमाणीम, ज से सं<sup>ख</sup>े मयइ, अप्पमारे, मोल्लग्दर त गहाय आयाए एतंन अवश्क्तमङ । एम में निरमारिए समाणे पर्दा, पुर

बन्दना-नमस्कार कर इस प्रकार बोला-हे भगवन् । में आपके समीन (सापके मुझ से) केवलिप्रकृतित धर्म मुनना बाहता हैं। (महाबोर भनवान् ने कहा) हे देवान्त्रिय ! असा ठाक मालूम हो वंशा करो, विसम्ब म करो । सरपद्रचात् अन्नव भगवान् सहावीर ने कारयायनगीत्रीय स्कारक को और वहाँ एकतित गडी मारी समाको धर्मीपदेश दिया। यहाँ धर्म-क्यां का वर्णन करना चाहिए । सब यह कारवायनगोत्रीय स्वत्यक स्थमण सगवान महाबीर के मुख से धर्म धरण कर उसे हृदय में धारण कर हवित हुआ, सहुध्द हुजा, यावत विकसित हुदथ बाला हुआ । वह बाडा हो जाता है और सबे होकर अमण भगवान महाबीर की तीन प्रवासणः देकर इम प्रकार बोला-हे कगवन् । निर्मृत्य प्रवयन में में अदा रकता हूँ, हे मगदन् ! में निर्याय प्रवचन में प्रीति रक्षता हूँ, है भगवन् । में निग्रन्य प्रयचन में रुखि रहाता हूँ, हे भगवन् । में नियंत्य प्रवचन को स्वीकार वरसाहै। हे भगवन् ! यह इसी सरह का है है मनवन् । यह सत्य है, हे भगवन । यह अवि-तम (मिथ्या नहीं ) है, हे भगधन ! यह असदिन्छ है। है भग-वन् । यह इच्छित-इस्ट है, हे भगवन् । यह यार-वार अभिरुध-षीय है, हे भगवन्। यह इच्छित और प्रतीब्छन है, ! जो आप कहते हैं। ऐसा करके वह धमण भगवन महाबीर की वन्दना-स्महकार करता है और फिर उत्तर पूर्व के दिशा माग में (ईशान कीन में ) जाकर जित्रक, कुरबी यावत् वातु-गेर से रेंगे हुए बस्त्रों को एकान्त में रक्ष कर श्रमण सगवान महायार के पान आता है और धमण मातान महसीर को तीम बार प्रद-शिया करके यावत् मयस्कार करके इस प्रकार शीलता है,-

भविस्सई । एवामेंच वेदाणुरियद्या 1 मदझ कि ह्यादा एवं भंडे, इहें, कंते, विष, मणुष्णे, मणामे, पेउजे, बेह्माविष् संमर, अणुम्य, बहुमय, भंडकरंडमसमाणे, मा बं सीओ, मा ण उप्ह मा जं सूहा, मा णं पिवासा, मा बं चौरा, मा णं बाला मा जं देसा, मा णं महमा, मा बं बादय, वित्तिय, समिय, सिन्नबाइय, विविहा रोगावेही परोसहोबसन्मा जुम्बु ति कहु एस में निस्मारिष समा

यरलीयन्स हियाए, धुहार, शमाय, जीसेताए, आणुगिव शत्ताव मधिनतद्व । तं इच्छानि जो येवाणुष्या ! स्वर्मे यरवावित्रः, सवसेय मुंडाविश्वः, सवसेव सेहाविशः, सव सेव तिवशावित्रं, सवसेव आयार-गोधरं विणय-वेणवि वरण करण-जाया माधावित्तयं धन्ममाइविणये । सर् य सम्ते अस्य सहावीरे सवसं बास्यवाजन

सयमेव परवावेड. साच-एम्समाइबनाइ एसं देवाण्विय एक वि<sup>प्</sup>ट्रारव, एवं निसीद्द्रभरण, एवं तुर्ण्ड मंजित्राम्बं, एवं मानिसार्थं एक चहाएं उहाव <sup>वा</sup> ुर्हि, भोवेहि, ससोहि, ससमेगे सत्रमिसार्थं समि ह्या प्राप ) ( 55

है मगदन्। जरा और मृत्यू के दुःख से यह संसार कल रहा है, विभेव कल रहा है और आबीरत-प्रवीप्त हो रहा है। जैसे कोई गृहाय अपने घर में आग लग जाने पर उस घर में जो अस्य मार बालो और बहुनूत्य बासुर होती है उन्हें लेकर एकान्त में बला जाता है। स्पाकि वह गृहस्य विधारता है कि इस घर में से ऐसा सामान निकाला आवे तो वह आगे या पीछ मुझे हित-हर, मुलहर, बुदालहर और बस्याणस्य तथा पुन्य वरम्परा बाला होगा। इसी सबह है देवान प्रया मेरी अपना भी एक मेरार का सामाग्यक्षप है और यह इंट, बाग्त, प्रिय, सुन्दर मनोहर, स्थिरता वाला विश्वामधात्र, सम्मत, अनुमत सहमत बार्यमों के कार्डिये के सरान है इसलिए उसे सहीं. गर्मी, म्स, प्याम, फोर बाध टा सर्व देंग-म्ब्डिंग, संत-विस-वक्त भीर सिप्रयान वर्गेग्ह अनेक प्रकार के रोग, प्राणधानक पंडाह तथा परीयह और उपसर्ग हामि न पहुँचावे ऐहा बरके यदि में निमे उसे बचा सूंता मेरी आत्मा नृहा परलीक में हितकप, सुन्न हर कुराल कप, बस्यायाक्षय और पुष्प प्रश्नवर। हप, होना सिल्ए हे देवानुप्रिया में बाहता हूँ कि में आवर वास प्रयोजत कि पृथ्यत हो अ प्रतिलेखनादि कियाएँ मील स्वादि व्ह. भीर भे यह चारता हूँ कि आप स्वय मुझ हादार-नीवर दिनय, कि स का फल, साका ( सारम ) (दाइकि इति आदि कार्य सहायमें कहें।

स्यम वाला और संयम के रियों का शाहार का फिर्ट्स करने तद समेत्र मगवान महाबीर में बात्यादनारे में स स्वरहत ही स्वयमेव बीसा है और ग्रमंत्र अपदेश दिया कि है देशान-प्रया इत्र प्रकार कालमा चाहिए, इस प्रकार राष्ट्रा रहना बाहिए, इस प्रकार बैठमा चाहिए, इस प्रकार सीना बाहिए

## दस वंभचेरसमाहिठाणा

सुर्य मे आउर्त सेणं भगवया एयमवसाय । इह सहै चेरेहि भगवतेहि वस सभछेर~समाङ्ठाणा पद्मता (वे मिनम् सोषया निसन्य संज्ञमयहुले समाहियहुले गुनै गुतिबिए गुलयंभयारी समा अध्यमते विष्टरेणता । संग्री विवित्ताई मयणाराषाई मेदिला हटह से किलावे । ती इन्थी-पंतु-पंडगसासाह स्थणस्यवस्य सेविका हुट है निर्मार्थ । स कहमिति चे । आयरियाह । निर्मादर्म चलु इतिय-ममु-पद्मा संगलाई गयकामकाई शेडमाक्त बमयारिस्स समधेरे सन्। या कला वा विद्रान्तिका वी मयुष्पवित्रामा वा, शर्व, वा समोवना, उदमाय दो वार्ट सिंगता, बीट्ड किय या र सार्यक का हतेंद्रमा, देवेंत-बद्धभाओं धन्माओं भूगेत्रज्ञा । संस्त्र की श्रुत्य वर्ग वंडा महलाई स्वनाननाइ सेव्यसा हुन्यू से निम्मने छर्।

मी इंग्लीम कर्त्र कहिला। हच्छ से तिससी । से क्री मि क्षे । घार्याच्याह । तिस्तनसम् कुसु इस्सीसी क्री र्व्हा भाग 🕽 1 404

न्यवर्ध-समाधि के दस स्थान

1.

ابر

n E

Ħ.

H

(ď

أعاج

, ié

G¢.

ηħ

मुधर्मस्वाभी से अस्थरवामी से इस प्रकार कहा-हे आयु-भन् ! सुना है उन भगवान् ने ऐसा कहा-- जिन शासन में स्यविर मगवन्ती ने बह्यचर्य समाधि के दस स्यान कहे हे जिन्हें नुनकर और हृदय में धारण कर मृति, संग्रमपुष्ट, सबरपुष्ट, समाधिपुष्ट, गुस्त्यों, से गुस्त, जिलेदिय, आरश ग्रहाबारी अन

कर अवसत होकर विचरण करे। वे इस प्रकार है-१) स्रो, पशु और नपु-सक रहित उपाथम तथा स्थानक का सेवन करने बालाही निर्फश्य कहा जाता है। जो स्त्री पश् और मर्नुसक सहित उपाधव और स्थानक का सेवन करना है यह

निग्रेग्य नहीं कहला सकता है।

शिष्य ने यूछा-ऐसा वयों कहा जाता है ?

आवार्व क्रोने-स्त्री-पशु-नपुंतक सहित उपाम्य तथा स्यानक का सेवन करने बाले ब्रह्मचारी साधु के ब्रह्मचयं में शका (ब्रह्मचयं पालूं पान पालूं?) उत्पन्न होती है, ( अथवा दूसरी

की शंका हो सकती है कि यह बहुपचारी है या नहीं ?) आकांशा (मैपून सेवन की इच्छा) आगृत होती है, विविकित्ता ( ब्रह्मचर्य के फल में समय) होने लगती है, एकारत होने से पतन होने का मम रहता है, मैथून लालसा से अन्मत्त सी दशा हो जाती है,

दीर्यकालीन रोग उत्पन्न हो सकता है और वह केवलिमस्थित धर्म से भ्राप्ट हो सकता है। इमलिए स्वी-पशु और नपूंचक महित उपाधन, स्थानक, आसम आबि का सेवन मही करने वाला निर्यन्य होता है। (२) स्त्रियोको कथा (शृतार कथा। मही करने बासा

ı, हो निर्मन्य होता है। शिष्य ने पूछा-ऐसा 1

मतेज्ञा । तम्हा दालु नो निगाये इत्योणं इत्यिषः मणीन हराई नणोरनाई आसोएउजा निज्ञाएउजा ॥४ । नो इत्योणं कुलुतरति या बूमंतरंति या बिनंतरंति

या बाइयसई वा दहयसई या गीयसई वा हिसयहई वी र्याणयसदं या, कवियसदं या, विलवियसदं वा, मुनेती हबद से निगाय । तं गहिमति चे । आयरियाह। निगीन यश्त बलु इत्यीण कुटुनरसि वा दूमंतरेसि वा मितंतर्ति पा मूहयसई या श्रामदं या गीयसई या ह सियसई बा यगिनसद् या फोदिवसद् या विलवियसद् या सुनेवाणस चनगरिस्न बाबेरे संका या कंता या विविधिका सन्दर्गनितनता, भेदं या लमेजता, जम्मामं या पाउ<sup>हिन्ती,</sup> दोहकालियं या दोगायंकं हवेश्जा, केबलियम्हामी घम्माओं भतेनता। तम्हा पालु नो निगांचे इत्यीणं हुई-तरीत या यूनंतरीत या जिलंनरीत या कृत्यसहं या कृत्य ताइ वा गोपसई या हतियमई या धीजयतई वा कंडिंग-सदं वा विलिधियसदं या सुणेनाणे विहरेण्या ॥५॥

नी निगरंड पुत्रस्य पुत्रकोलियं समृतिरसाहरी मी निगरंड पुत्रस्य पुत्रकोलियं समृतिरसाहरी मे निगरंथे ।त फहिनिति चे । स्यादिवाह । निर्मार्थीर पुत्रक्षरयं पुटवदीलियं श्रमुसरमाणस्य सम्मास्ति सम्बेरे पंत्रा या पाँसा या सिद्दान्दिल्ला था समृत्यक्षित्रकी हैंद्री सार्थ ) ( १०७ आर हो स्करत है । इसकिंग निर्यासों की दिवसों की सजीहर और

भार हो स्करा है। इसलिए निर्मुग्यों की हिट्ट घों की मनीहर और भनीरम इन्ट्रियों को सो ने देखना चाहिए और संउनका दिवार इरता चाहिए अधा

हता पाहिए IIVII

(५) लक्को को रही की थोट से सहन के वर्षे को तोट से
या दीत को ओट में हिन्दों के कुन्नित (कोटल के कमान) रास्त्र, पीने के साब, पीत के शका, हैमने के साथ कता प्रकार के सार,

रोनें के ब्राय, मोश के अवड, हेंसने के ब्राय पति प्रशंग ने ब्राय, अध्यक्ष बाद और विकास के ब्राय नहीं सुनने बाला किसंस्य होता हैं।

सिल्य ने पूछा⊶ऐसा क्यों ? आ घार्य वे ले ⊷रही की औट से, सम्ब्र के ल्यें नी ओंट या भीत को ओट में स्थियों से कृष्त रस्त, रोने ने रस्त ग

है उच्च, हैसने के बाद कि प्रश्न वं कृतर, बर्ग्डर क्रिट के दियात के बारवी की गुनने बाले बहावारों के सहत्वयों में बा क्रांत, विश्वविक्सा उटका होती है, इह्स्पूर्ण क्रांत्र के हैं। कारा बताद प्राप्त हो जाता है, दोर्घक होन को गो। हो क्वार है। पढ़ केविल प्रश्न विभाग है से स्वार हो सकता है। इसिंग्ट हो। मीट से पर्वे की ओंट से सा भीत की औंट से कृत्ति दस्त, की

वेलाप के ब्राइडेंकों सुने ११५। (६) पूर्व (गुरुष्य कोवज में) जो भोग मोगे हीं, या हमें गाम को दिसकों बार्य को हों उतका हम मान कर ने सावा किया

गय को रतिक हाएँ की हो उनका स्वाध मान काने बाक निर्देश गिता है। जिप्य ने पूछा-ऐसा स्वर्गे ? आचार्य डोलें- पूर्व भीर पूर्व के काली का समस्य व्यक्ति दहित्यारी हालु के इह

स्ट, गैस इस्ट, हसिन शब्द, इसमिस दाय्द, आऋस्टन अ

लागजनाणस्य समयारिस्य संभवेरे गंका वा कंबो में विद्यानपण वा समुप्यांजगजना भेषं वा लगेजना, उम्मार्थ बा पाजिणजना, बोहकालिय वा रोगायक हुवेजना। कंबीक यससाबी धमनाभी भरीजना। सन्हा बालु नो निर्मार्थ विमुनामुनाबी हावजना।।९॥

मो सह कव-रत-तंप फामाणुवाबो हवा से निर्मार्थ । तं कार्यनित् ये। आयरियाह । सिर्मायस्य राजु सह-कर्व-रत-नय-कामाणुवावित्व यथयरित्व संविदे संत्र वे कंला या विद्यानस्टा वा समुत्यिजनना, मेरं वा लगेको उपमापं या पार्याणज्ञा, श्रीकृतित्य रोगार्मकं वे ह्वेबमा। केवजियस्याओ ध्रमाओ भीतेष्मा। तर्ही राजु तो सर्कर रत-तंप-कामाणुवाबी महेचना से निर्मार्थ वस्तु तो सर्कर रत-तंप-कामाणुवाबी महेचना से निर्मार्थ वस्तु तो सर्कर रत-तंप-कामाणुवाबी महेचना से निर्मार्थ वस्तु यो सम्बरसमाहिकाणे हवड ॥१०॥

हवंति इत्य सिलोगा । तं जहाःजं विधित्तसमनाइन्नं, रहिदं इत्तिद्वनेन म ।
यंभवेरस्त रक्षद्वा, जिलेदं तु नितेवए ॥१॥
मण्डन्हाप-जननी, कामराग-विबद्धनी ।
यभवेरस्थी सिन्दल्, यो-कहं तु विवज्त्वए ॥२॥
समें प संययं वीहि, संकह स अधिवक्षणं ।
यमपेरस्यो किवल्त्, विद्वता परिवज्नए ॥३॥

( 989

है बहुतार्थ में तांका, क्षीता, व्यिविक्ताता जायम होती है, बहुतावर्ध हा पेंद हो सकता है, जामार प्रत्यत हो गवका है, बेंधंकातीन रोव देता ही जाता हैं भीर वह केवलि-प्रश्चित धर्म में स्वटट हो करता है। इसमिए साधु को तारीर की विजया (टाय-टोप) मही बदता वाहिए।

न्द्री भीव है

(१) बद्रा बारों को बहुत्युयं की रता के लिए रत्री, गता और पर्पुक्तर रहित एकान्त स्वान का तेवन करना चाहिए। ९) बहुत्वयं में रत कहने बाला मिश्रु मन में सीम यंवा करने वाली और काय-बातना को बहाने बाली स्त्री-कथा का बागकरे।

(१) पदाययं मे रह रहने वाला मिशु स्त्रियों के परिवय हो सपा पुन. पुन: म्हेंगारवर्धक स्त्री-स्पाप्नों को (या स्त्रियों के हे साय पुन: पुन: क्याकार्ता प्रसंग को ) सदा के सिए छोड़ मुद्देय नद्दयं शीय, हाम-मुशागियाणि मः वणीय श्रमवाण च, अइमार्य पाण-मोयणे ॥१३०

गराभूगणयोद्वं च, कातभोगा म दुवनया । गरस्सक्तमधीसस्य, विस तालउई महा ॥१३॥

बुज्जाए कामभीगे स. निष्यसी परियज्जए। सकाठाणाणि सब्दाणि, यज्ञेज्ञा वणिहाण्य ॥१४॥

धम्मारामे चरे भिष्यु, धिइमं धम्मतारही। घम्मारामे रते वते, संशवंदममाहिए ॥१५॥

देय-दाणय-संधाद्या, जावस-रवसस्म-विज्ञरा येभयारि नमेसंति, दूपकरं जे करंति ते ॥१६॥

एस धम्मे धुवे निच्चे, सासए जिल-वेमिए। सिदा सिन्दान्ति चाणेण, सिन्सिस्ति सहायरे । १७॥

--- जसराध्यपन १६ अ० १<sup>५५</sup>



## मोनस-मगो

बह गरे ? कह गहे ? बलगारे ? कहें तए ? ! कह भुगतो भारती पाव मध्य मध्य । ॥१॥

जयं जरे जय चिद्रे जयमति जयं सए। जय भुंजती भासती वाव महम्मं न बग्रह ।२॥

सम्बन्धाः स्वाति स् पिहियासबस्स बजस्त पार्व कम्बं म महरू ॥३॥

'पदमं नाणं तओ दया' एवं चिट्टंड सम्बसंजए।

मोच्या जाणह कल्लामं, सोच्या जाणह पार्यो। उभवं रि जागई सीच्या ज छेयं त तमायरे ॥५॥

अञाणी कि काही ? कि या नाहिइ छेव वावने ।।४।)

को जीवे पिन जाणइ, अजीवे जिन जाणइ। र्भामाऽत्रीयो स्थाणंती कहं सी नाहीइ संजम ॥६॥

## मोध-मार्ग

किया पूछना है:--कैसे बसना चाहिए ? क्षेत्रे साजा रहना चाहिए ? कीसे

ठना चाहिए ? केरो संभा चाहिए ? केसे सामा चाहिए और से बोन्सा चाहिए ? उक्स त्रिया। किस प्रकार करता हुआ ींद पादकर्य का बाध मुझे करता है ? आचार्य बाले-

ट्रसा के साथ (उपयोग-विटेक पूर्वक ) चलना चाहिए. तमा के काय खड़ा रहना चाहिए, यसना के साथ बैठमा गहित, रतन के साथ से ना साहिए। इसना के साथ काता मा और यतनापूर्वक शोल्ता हुआ जीव वापकर्म का बन्छ हीं काता है।

सम जीवों की अपनी आरमा के समाम समझने वाले. , प्वीकाय आदि कृतों को (अं। यों को ) सम्यक प्रकार से देखने ाले, कर्म स्रोत (आसव ) को रोक्त बाले और जितेन्द्रिय जीव

ो पाय कर्म या बन्ध नहीं होता है। 'यहने ज्ञान और फिर दया' इस विद्वान्त पर ही सारा विम वर्ग रहा हुआ है। अज्ञानी बया करेगा ? वह कल्याण

मीर पाप को बचा समझेगर ? शास्त्रों को मुनने न ही कल्यान का जान हीता है, बास्त्रों हे सुनने से ही पार का स्थलप मालम हाता है, बह्माण और अवस्याण वे में का ज्ञान आन्त्र सुनने से होता है इमलिए बोनों

की मुनकर जाने और जो येयस्कर ही उसका आधारण करें। को जियको भी नहीं जानता, जो अजीव को भी नहीं कानता तथा जो जोव और अजीव दोनों को नहीं कानता

114) जो जीये वि यियाणह अजीवे वि वियाणए कीषाऽजीवें विद्याणतो सो ह नाहीइ संजर्म ोशी जमा जीवमजीवे य दो वि एए विद्याण है।

तया गई रहुविहं सध्य-जीवाण जाणह १८॥ जमा गई बहुविहं सत्य-जीवाण जाणहर समा पुरुणं च पाय च बंधं मोयलं च जाण है ॥९॥ जया पुष्णं च पार्थं च बंघं मीवलं च जाण है । प्तया निब्बिटए भोए जे विटवे जे य माणुसे ॥१०॥

जया निव्विदए भीए में विक्वे जे म माणुरी ! तया चयइ सजोगं सहिमतर बाहिरं॥११॥ धयड सजीग सदिमतर बाहिरं। तया मुँडे भविलाणं पडःयह शलगारियं ॥१२॥ जया मुंडे भविताणं परवसद्द अजगारियं।

सथा संवरम्किह धन्मं फामे अण्लरं॥१३॥ जया संवरमुविकट्टं धम्मं फासे अणुन**रं**। सया युगद कम्मरमं असोहिकलुसं कई 11१४।। जया धुणइ वस्मर्यं अवेतिहण्युसं वर्षे ! रवा सराहण नाव इहलं चाश्चिमशहहद ॥१५॥ वैद्वार्थाम्) ( ११९

को जीव को जानता है और अजीवों को जानता है यह वैक्सियों को जानने बाला है। सदम के स्वरूप को जान किता है। अब लीव और अजीव—इन डोनों को जानता है तब हुए होने के कुट की

हर त्रोडों को विविध्र प्रकार को गतियों को जानता है। सब सब जोवों को विविध्य गतियों को जानता है तब पुष्प-पा और काम-मोग को जानका है।

ती मोर बाय-मोस की जानता है। जड-पुष्प पाय-ओर यन्त्र-मोता की जानता है तय विक्य-भीर मानुषिक मोगों से किरकत होता है।

सव दिश्य और मानुविक भीगों से विश्वत होता है सब वाहा और मान्यातर संयोगों का त्याग करता है।

वह बाह्य और आत्मान्तर सचीगों वा त्यान करता है तह पृथ्यत होकर अनगार धर्म में मवजिन होता है ?

वेंच मुश्हित हो बर अनुसार सम्बंधि में प्रविक्त होता है तब रोहरू सबर कप सेस्ट समें बारदर्स काता है (पानन करता है)। कब माहरूट सबर कर सेस्ट समें का पालन करता है तब

महोति (अज्ञान-निभ्यान्य स्त्य ) यात से सबिन कर्मक्यी रज्ञ को एन ठावता है। जन अज्ञान पविषक्ष क्यों रज्ञ को युन डायना है नड

मार्चिक जाम और राजि को प्राप्त करणा है। सर्वान केंद्रजातान और केंद्रम वर्तन करमा है। भाषा मध्यभागे सामा देवने व्यक्तिमामाहरू। तथा कोमसन्तम् च ।तमा भागद केवली ॥१६॥

अया लातमधान च जिले आगड नेवणी तया भाग निकासिता गाउँपि वश्चित्रमा १९१०)।

जया जोगे नियमिता तेलेनि पश्चित्रका ! सवा करमं सविसाम गिक्कि गण्डर मोरमो ॥१८॥

बया करमं सविताण गिद्धि गमछ हे तीरओं। तया कोगमस्यवस्यो विद्धा १४६ सातओ ॥१९॥

गुह्तायगस्य समणस्य सायाजननस्य निमामसाहस्त। वच्छोलणापहाबिश्स इल्लष्टा सोश्यद्व तारिसगस्स ॥

सर्वःगुण ग्हाणस्य उजनमङ्ब्लंतिसंजनरयस्स । परीतहे जिणंतस्य मुलहा सोमाइ सारिसमस्य ॥२१। --महाबीर वाणी १६०-१९८

बर देवलतान और केंदलदर्शन प्राप्त होता है सब जिन हैं। बोकर मोक और बलोक की जानता है।

क्ष्य बहुजिन और केंबली होकर लोकालोक को जानता रेमें वो का रोक कर बोले शी अवस्मा अंगीकार करता है। दीवी की रोप कर शैलेशी दशा अगीकार करता है तब कर्मी शरका के कमेरज में रहित होकर सिद्ध गति में जाता है। , व्यवसी काक्ष्यकाके सर्वया कर्य-रज रहित होकर र में में जाता है, सह लोक के बायमाय पर स्थिर होता भेर शास्त्र किंद्र हो आता है।

बोबापु गुळ (बाह्य मुख) का लोलुपी होता है, साता िए राजावित रहेना है, जो बहुन शयन करता है तथा जी ेर को झोमा के लिए मगोपांती की बादबार छोता है, ऐसे ा को सक्तांत विराश कुलेब है।

को तसीमुण की प्रधानताकाला गरल खुँडवाला,

त्य और संदय में रन रहतेबाना और यशीयहाँ की जीतने त्या श्रेचा है ऐसे शस्य के जिए सहयति मुख्या है। -- महाव र बाना १६०-१६८

क्षो पुत्र संदोगी (माना दिना मादि के सद्योगी) की कोड़ का पूर्व इन क्यांन श्लीन बालकनी के समय की छोडवर बाद में जनमें का कोशों से शासकर मही होता है हमें हम बाह्य स्वाम स्वाम है।

स्थान महात में का कार्र कार्र कार्र में सामा करते हैं की बार के देश्यात्म के बाह्यण करी ही काना, कर में कहने हैं। सूनि नहीं हा बारता, और बश्वार दो अल्डा सन्य शहन शा कार्य है। Perel sal at miril

men mit alle be g bill beide mitten a bei Ren fare beine e tare gille able a fer a Bie fing mi mimig. den tag g nach bin a ...

तरान् भं ते में चन म्यनानके दित भेर दश्र देखाई सर कर परके नहीं मानना । बनारि करावार को सल्बर है सि बैस कोच कार्य करण से त्यमान्य के चंत्र हो उत्तर हैं। मोत्रने भे भी - महाते रेग -

पर, बंदरी करीजे राजा, सरेक्सर के राहण्या में उ

cent a statut a summy amount and द्यी धनार का रात देवरामा महिल्ला अधिनामा भी मर् मा ता । बर्यान प्रमुक्त मन के सुरित अनादिन्यता अधिन बर कथी अपूर्व प्रशास नहीं तुई नवा अब नवसे ही परिवाधन तील हैं।

श्वमानिक ईरनर के अधिरवान की अवेदत अमेर रणापा । दैश्वर को वाली या परण तानत बाल, कर्मभाष वर मीबे

र) घड . मधान साहि छाटो मोटो थोले ग्रीड (दर्ग) जिल तीन रार्धे करणे हे ~ स्वतिल के द्वारा ही निवित्त होती है तो किए सम्पूर्ण जाते. ही कार्यक्षय विश्वाद देशा है, उसका भी उत्पादक, कोई प्रकार शोना बाहिए ।

प्) सभी प्राणी अपने या महे कमें काते हैं, वर की सर्वे कर्ष का क्षत्र तहीं चाहता भीर कर्ष स्वय लड़ होने से दिनी चैतना की प्रेंग्णा के जिला कल देने में असमर्थ है। इसलिय करे वावियों को भी मानवा साहित कि देव्बर की आनियाँ से वर्ष कल स्रोगवासा है।

१) देश्यर एक ऐंगा व्यक्ति श्रोता साहिए कि मी हरी मुनत हो, और मुक्त में यो की अवेशा मी जिसमें कुछ जिलेकरी हीं । इसलिए कर्नवाद बार वर मामनादीका गही कि वर्श से पूर भाने पर समी स्वत अर्थात ई: बरही आहे हैं।

को पहले बाधेय का समाधाम -- मह बातत दिनी बदा नहीं बना, वह सदा दो से दे। हा, इसमें परिवर्तन (ध) दूसरे आक्षेत्र का समाधान-प्राणी जेता कर्म काने हैं, देशा उनकी फा कार्य के द्वारा मिल ही साता है। इसे बर है. और प्राणी शवने विचे बरे कर्म वा फल नहीं बाहते यह हैंद है पर स्थान में रधना चाहिए कि जीव के चेतन के संग रे बर्स में देती प्रावित पैपा को बातों है, कि जिससे बह अपने कराउं-बुरे बियाकों को नियत तमद वर जीय पर प्रकट करता है। रमेशाह यह मही मानता कि चेत्रम के हम्माछ के निवास ही मह बर्म कीय देने में समर्थ है। यह इतना ही बहता है कि. बल हैने के लिए दिवर गय पेल को प्रशासामान की कोई अहरत न्ति की श्री व गयी पीय प्रेम में श्री चीता कर्म का है है हहते स्कित के अपने का मार्ग पीय प्रेम में श्री चीता कर्म का है है जहते सरकार प्रकार करते करियों के सरमार प्रनथी मृति पैनी हो दन सातो है; जिल्ली सहे हम की क्षेत्र की स्थापन करते पर भी में दन सातो है; जिल्ली सहे जिल्ली इस्ता म राने पर भी से रेमा कृष्य कर बेठते हैं कि हर ह क को शबने कर्री तार पा कर के तो है कि है के क को शबने कर्री तार पा किल जाता है। बस बन्त ह कार है और बार की में साम्बन जाता है। बस बार है और या की न बाता दूधरी बात । येवत बाता है। होने हे दिये बर्म का का होने हैं। दिये बर्म का करणा करी। सबता । कहा है हैं। हो भी, दिये कर्म का करणा करी। सबता । कहा है ही भई दिए बार्च पार ही होने हारान है। इंडर्सनार एक सनुष्य पुरु में देश है अपे हारान है। इंडर्सनार एक समुख्य पूर में दश है। यो में माला है। दर्ग है।

(ग) तीसरे आक्षेप का समाधान:- ईडवर चेतम है और जीव भी चेतन, फिर उनमें अन्तर ही क्या है ? हाँ, मनार इतना हो मकता है कि, जीव की शक्तियां आयरणी से विदे हुँई है और ईश्यर की नहीं। पर, जिस ससय जीव अपने आवर्षो की हटा बेता हैं, उस समय तो उसकी समी दावितमा पूर्णहर्प में प्रकाशित हो जाती है। जिर, जॉब और ईश्वर में विश्वमता किंग बात की है विषयता का कारण जी बोशविक करे है, उसके हट जाने पर भी दाँव विषयता ग्रंगी रही सी सिर मुन्ति है क्या है ? वियमता का राज्य संसार सक हो परिमित है आप नहीं । इसलिए शर्मबाद के अगुगार पह मानने में आपति गहीं कि सभी पुरत जीव हैंटबर ही हैं। केवल विश्वास में मन वर यह बहता कि देश्वर एक ही हंता वाहिये, उचित नहीं। मनी अतिमा सारियक हरिट से हैं स्वर ही है। कैयल आजन व कारन व हीरे-मोर्ट जांव रूप में देखे जाने है-यह शिकाल सभी ही भारता देशबरहर प्रकट करने के लिये पूर्ण बल बेला है। कर्मवाद पनुष्य की सृद्धि की स्थित करता है:-

इत कोक सं या परशंक से सम्यन्य रुलने बादे किसी से अब मनुष्य प्रकृति करता है सब यह सो असन्त्रव ही है

( १२७ की मीग ।

क, उपे विशो न किसी विष्टन का सामना म करना पडें। सब भव वे सद को चोडे चहुत प्रमाण में शारीरिक या मान-कि किन बाते ही है। ऐसी दशा में देखा जाता दे कि, सहुत नेन बच्चन हो जाते हैं। घबड़ा कर दूसरों को दूधिन ठहरा

ग उन्हें कोमते हैं। इस सन्ह विपत्ति के समय एक तरफ बाहरी एमन बढ काते हैं, दूसरी सरफ मृद्धि अस्थित होते से अवती

पुनिक्षाई नहीं देती। अन्त में मनुष्य स्थपना के कारण मिने प्रारम्य विषे सब कामी को छोड़ बैठता है और प्रयतन हेवा शांकित के साथ न्याय का भी गला घोटता है। इसालए

स्त समय जम मनुष्य के लिए एक ऐमे गुरु की आवद्यकता है हि, बो उनके बुद्धि-नेत्र को स्थिर कर उसे यह देखन में मदद पुत्रमें, कि उपस्थित का असली दारण बमा है ? जहीं कि बुदिमार्थों में विकार किया है, यही पता चला है कि ऐसा

हि, कम का मिद्धान्त ही है। सनुदय का यह विद्वास करना बाहिए कि, चाहे में जान गर्द्ध या नहीं; लेकिन मेरे बिटन की ्र न्त्र, पात म जान राष्ट्र था नहार राज्य जिस हुइय-भीतरी व अमली कारण मुझ में ही होना चाहिए। जिस हुइय-

मिका पर विध्त-विध-वृक्ष उगता है, उनका बीज मी उसी प्रशास मार्थिय चुक्त उपता हु, उपका आदि बाहरी प्रशास में बोधा हुआ होना चाहिए। वसन, वानी आदि बाहरी विक्रिको ने ---निम्मा हे सम्रान उस विध्न-विध-वृक्ष को अंकुरित होने में कवा-चित्र काय कोई श्यवित निमित्त हो सकती है, पर वह बिग्न का

होत नहीं; ऐसा विश्वास मनुष्य के बृद्धिनंत्र को अस्पिर कर र्था एका । बदबास मनुष्य क मुख्य नि को अपने में देख, हैता है, । जिसमें बहु अड्बन के असली कारण को अपने में देख, म को उसके लिए दूसरे को कोसता है और न धवडाता है। ऐसे म को उसके लिए दूसरे को कोसता है और न धवडाता है। ऐसे विकास के ——

विश्वस से मनुष्य के हृदय में इतना बल प्रकर होता है, कि विश्वस से मनुष्य के हृदय में इतना बल प्रकट होता है, विश्वस साधारण सकट के समय विशिष्त होने बाता बर्

विश्वतियों को कुछ नहीं समझता और झाने

ļ

सिक्द रहुमा है, वेसे हो बाल अनिक्शताओं के समय शासन में सिक्द रहुमा, यही सबचा मनुस्थाय है; जो कि इत बाह अभूमों से प्रिता रक्त मनुष्य को अवर्ता माश्री मनाई के ति सेवार करता है। प्रन्तु मा जिल्ह्या है कि पूर्वा मनुस्यत्त के सिक्काल पर विश्वार दिसे विभाव करी आ नहीं सब्बी बससे यही कहना परसार्थ कि बया स्ययतार, स्वा परसार्थ

जसस यहा कहना पड़ता हो कि वया ध्याना है क्या दे के लिये कहा कर्म का सिद्धांस एक-स्ता उपयोगी है कि की विद् का मेटला के सब्यन्य में दान वेदगन्त्र का दी विदार है जानने बांग्य है। ये बज़्ते हैं-"यह में निर्देश्त है कि कमेलन या उसल मन्द्र्य ने पड़ बेल्ड हुआ है। यदि किसी मन्द्र्य की यह मन्द्रम प

सर्वमान अपराध के सिवाय भी मृत को पाँच हुए भी नेना है है यह मेरे पूर्व जान का हो कल है; तो बहु पुराने कर्न की हैं हो बहु पुराने कर्न की हैं हो बहु पुराने कर्न की हैं हो के मुनुष्प की तरह तात्र कर और कह मनुष्प हनना भी जानता है। कि तहनतीक्ष पुराना कर्म पुराना कर पुरान कर पुर

क्षण कोई भी कमें नाट नहीं होता, यह नीतिशास्त्र का मह , जन का यल-संरक्षण मध्यक्षी यन समान ही हैं। य देनना ही हैं, कि किसी का नात नहीं वें के ब्रिस्तिय के सम्बन्ध में हित्र

( १५५

हों की

ताशों न हो पर यह निविधाद सिद्ध है कि कर्ममत सब से विष क्षाह भाग गया है, उससे कालों मनुष्यों के कट कम १ है बीर उसी मत से मनुदर्धों को बतमान संकट बोलने की ित पेश करने तथा भविष्यत् जोधन को मुधारने में उलंबन रहा है हुए

रमंबाद को आवश्यकता कब और किस लिए हुई? हमंबाद के विषय में दी प्रश्म उठने है-(१) कर्मबाद का

विश्वीव कस हुआ और (२) सह क्यों ?

(१) पहले प्रदत्त का उत्तर--परम्परा और ऐतिहासिक-रिक्नों हे दिया जा सहता है। परम्परा के अनुसार यह कहा ला है कि जैनसमें और कर्मबाद का आवस में सूर्य और श्यका सामेन है। किसी समय, किसी वेशविदाय में जैन में का असाव मले ही देख यहें, लेकिन उसका अभाव सब ीह एक साथ कभी मही होता । अत्तएव सिद्ध है कि क्षमेवार े दबाह कर से जीनधर्म के साथ-साथ अनादि है-अर्थीन् वह

म्तपूर्व मही है।

परस्तु जैनेतर जितानु और इतिहासप्रेमी जैन उदर्व अध्यक्त को बिना नमुन्त्र किये मानने के लिए तैयार नहीं है ाय हो वे लोग ऐतिहासिक प्रमाण के आधार वर क्रिये गर्व ार को मान क्षेत्र में सिनक था नहीं सङ्ख्याते । यह बाल निव-ार नाल लग सं सांगक था नहां सङ्खात । अद् -ातारुप से देतमान है, इस समय जितमा केन सरवज्ञान भीर को विशिष्ट परस्परा है वह सब भगवान महाबीर के का वित्र है। समय के प्रधाव से मूल बरहु में कुछ न बतंत होता रहता है, तबावि धारधारा व

, मं. र त्रपत्तिवहां में, हम्यतियों में और वेशान्यायों किन्द्र कार्नों में ईश्वर-विषयक ऐसी बहनता भी कि निनते सर्वसार्थ रण का यह विश्वान हो गया था कि जनन् का उशास्त्र ईश् हो है, बही अबने मा बुर कमी का फल जीवों से भोगवाता-कर्म जब होने से दिश्वर को प्रेयणा के पिता अनता कि जुला मही सकते, चाहे कितनी हो उच्च कोटि का जीव हो स्व एवं प्रमान बिकास करके ईश्वर हो मही सकता, अस्त को जय जीव हो है ईश्वर नहीं और ईश्वर को अनुबह के सिवाय संसार में निता चो नहीं हो सकता, दश्यावि । इस प्रकार के विश्वान में मनवान् महावीर को तो मूर्ते कान वश्वी:--

(1) इतहत्व ईश्वर का विना प्रयोजन सृष्टि में हस्तक्षेव

। (२) आत्मस्यातन्त्रयः का दव जानाः ।

(१) कमें की दावित का अज्ञान । हिन मूलों को दूर करने के लिए व सवाये बालुस्थिति

है तिए मगवान् महाबीर ने बड़ी झान्ति व शन्मीश्ता-वर्गवार का उपदेश दिया।

(२) यद्यपि उस समय योद्ध धर्म मी प्रचलित था, परन्तु क्षेत्रे ईश्वर कर्नुस्व का नियंध न या वंते स्वोकार सी न

ा प्रमुख का निष्य प्रभाव स्थापित है। उनका जिस उद्देश हिंसा को रोक, समझाब फैलाने का था। जिस उद्देश हिंसा को रोक, समझाब फैलाने का था। जनको तरकालीत उस उद्देश

उनको सरवप्रतिभावनतरणी की तरकालान उस वर्ष-रूप हो थी। बुद्ध सातवान स्वयं १ कर्म और उसका रेवियाक मानते थे, केहिन उनके सिद्धान्त में अणिकवार की स्थान था। इसलिए सातवार सुराबीर के कर्मवाद के उनवेश का

्षक पुरुष प्रभावान प्रश्वाद के वस्तार पुरुष हु भी गृह साध्य था दिन भावित आस्ता की आजिकसात्र मान ित्या जाय तो कर्य-विवाक की विश्वी तरह उपवित ही मही घरती, स्वष्टत कर्म का भीग और वरहत कर्म के कीम का

ण्हा गरतो । स्टब्स्त कमें का भीग और व्यव्हत कर्ण वपाड तभी घट सक्ता है, जब कि आस्मा को न तो एकान्त नित्य मात्रा जाय और न एकान्त सणिक।"

ि कम्मना बनती लोको कमाना बनता पत्रा । कम्मनिवंधना ससा रचस्ताणीव यावता ॥

क स्थानवयना ससा क्यस्साणाव यागतः । (जमानियात, यामेडुपुत, ६१) पुण्य, पाप आदि कई ऐसे शब्द है जो सब दर्शनी है निर साधारण से हैं। जितने दर्शन आसमावारे हैं और दुन्होंज साधारण से हैं। जितने दर्शन आसमावारे हैं और दुन्होंज सातते हैं उनको पुनर्शनम की सिद्धि—उपपति के लिये हवे सातता है। चाहे उन दर्शनों को सिद्ध-सिन्न प्रदान क सारण या चेतन के न्यक्य में मसमेद होने के कारण, वर्ष का स्वरूप पोड़ा यहुत जुदा-जुदा जान पड़े, चरानु इसमें डीर् का स्वरूप पोड़ा यहुत जुदा-जुदा जान पड़े, चरानु इसमें डीर का स्वरूप पोड़ा यहुत जुदा-जुदा जान पड़े, चरानु इसमें डीर का स्वरूप पोड़ा यहुत जुदा-जुदा जान पड़े, चरानु इसमें डीर का स्वरूप से साम आदि दर्पहर्श किसो न किसी गाम से काम सामोकार किया हो है।

निध्मारन, कवाय आदि कारणों से जीन के द्वारा की किया जाना है वहीं कमें कहलाता है। कमें का यह सत्तर अववंदन धानकमें द्वारकमें, दोनों में घटित होना हैं। बाई भानकमें आराम का-बीच का सेवादिक परिणास है। हमी उत्तर उपायक कर करती, जीव ही हो और प्रधानकमें जी दि कार्यण जीन के सूचन सूचराती का दिकार है उसका भी बता, निर्मास कर से जीन हो है। धानकमें के होने में द्वार कमें विश्वत हैं और प्रधानकमें में भानकमें के होने में द्वार कमें निश्वत हैं और प्रधानकमें में भानकमें के होने में द्वार कमें निश्वत हैं और प्रधानमें में भावकमें निश्वता हम प्रकार उन कोनी वो सावन में सोजांदर की तरह वार्यकार साव सम्बाध है। अस्त स्वाधिक स्

नाधारण कोच यह कहा करते हैं हि- जान, यूड़ने सेवा स्मादि कियाओं ने करने से ग्राय कर्स का (नृष्य का) वर्ष होता है और दिक्सों को कर त्रेवाने, हश्छाविष्ठा नाम कर्म स्मादि से अपून कर्स का (बार का) बाद होता है। वरण दुर्ण बाद का निर्णय करने की नृष्य कनोदी कह नहीं है। वशी दिनों को करने की नृष्य कनोदी कह नहीं है। वशी दिनों की करने हैं। वशी

करता हुआ भी मनुष्य, पुष्पं उपार्शन कर सकता है। देनों सरह बान, पुजन खादि करने वाला भी पुष्पं-उपार्शन म हर समी-कमी पाप बांच लेता है । एक परोपकारी चिक्तिसक, वय किसी पर शास्त्र-विद्या करता है तब उस मरीज को वरट विद्या होता है, हिसैथी माता-विता नाममझ स्टब्से को अब उसकी इच्छा के विचय बढाने के लिये यहन बारते हैं तब उस बालक को दुल सा मालूम पडता है, पर इतने ही से न सो यह विक्रित्सक अनुविक काम करने बाला माना जाता है और न हितैयो माता-पिता हो दोयो समझे जाते है। इसके विपरीत जब कोई घोले लोगों को ठगने के ईरादे में या और किसी सुरछ-क्षादाय से बान, यूजन, आबि कियाओं की करता है सब कह पुष्य के बदले पाप बाँधना है। अन्य पुष्य-बन्ध या पाप-बंग्र की सच्ची कसीटी केवल ऊपर-ऊपर की किया नहीं है, किन्तु चसकी घषायें कसीटी कर्ता का शाह्य ही है। अच्छे साध्य से जो काम किया जाता है वह पृथ्य का निमित्त और बरे आशय मे जो काम किया जाता है वह पाप का निमित्त हीता है। यह पुष्य-पाप की कसीटी सब की एक-सी सम्मत है। वयोंकि यह सिद्धांत सर्वमान्य है कि-

> "धाहमी भावना यस्य सिद्धिभवनि ताहशी ।" ५ सञ्ची निर्लेषता

साधारण लीग यह समझ बेटते हैं कि व्यक्त शाम न स्वास करने को पुण्य-पाप का छैप न रूपेगा। इसती वे उस काम को तो छोड़ देने हैं, पर बहुया उनकी मानसिक किया नहीं छटती। इसते वे क्षणा रहने पर भी पुष्य-पाप के तेव से अपने को मुक्त नहीं कर सकते। अवएव विचारमा वाहिए कि सच्ची महत्वेषता क्या हैं? छेप (बच्च), मानखिक सोक्ष की ज्यान कवाय की कहते हैं। यदि कवाय मही है तो उपर की की वी दिया आस्मा को बन्धन में रखने के लिए समये नहीं है। इसते उत्ता यदि कवाय का येग सीतर बर्तमान है सो उपर ते हुआ यान करने पर भी कीई अपने की बन्धन से एड्डा मी सरका। कवाय रहित बीतराम तब काह जक में काम की तहरू निर्देश रहते है यर कवाययान आस्मा योग का स्वांग रखकर भी तिन पर गुद्ध नहीं यह सकसा। इसी से यह बहा जाता है कि शामित छोड़ कर जो काम किया दाता है यह यहाड कही होता। मतक्य सक्यो निर्वेतना मानशिक्त दोग दे न्याप के है। यही शिक्षा क्येशास्त्र से मिस्ती है, और यही बात अस्मा भी कड़ी हई है:—

"मन एवं मनुष्याणां कारणं क्रमामोशयोः । बन्दायं विवयाद्वासीतं मोशे तिक्तियां स्मृतम् ॥" ( संभ्ययनिवदः )

द कर्भ का अनादित्य

विचारक ममूच के मन में ग्राम उठता है कि समें साहि
है या मनावि रे इसके उत्तर में ग्राम उठता है कि समें
स्थान को मनेवा से नाहि मोर व्यान का क्यन है कि वर्ष
स्थान को मनेवा से नाहि मोर व्यान को करेशा से मनाहि
है। यह सब का मनुष्य है कि प्राणी वसते-विद्याते, गोने-सानते,
उठने-से-उति दिस्ती ने कि से तरह को हन्यकल दिया ही कातत है।
हस्तकल का होना ही कर्मबंग्य को कहा है। इससे यह तिब होता
है कि वस्त्रे व्यानगा गार्डि वाने हो है। हिन्तु क्यों वा प्रवात
कह से बचा? यह कोई वानना नहीं सक्ता है।
स्थान कुन्दर्स का गड़ाई मनना नहीं सक्ता हुए समें
स्थान कुन्दर्स का गड़ाई मनना नहीं। समान का समें
स्थान कुन्दर्स स्थान के सिवाय और दिस्ती तरह से होना

बसम्बद्ध । इसल्ये कमै के प्रवाहको अनादि कहे दिना दूसरो गति हो नहीं है। कुछ लोग अनादिस्य को अस्पट्ट व्याह्या की उलग्रन से घयडा कर कर्म-प्रवाह को सादि बतलाने लग जाते हैं, पर वे अपनी बुद्धि की अस्यित्ता से कल्पित दोव की आर्बाहा का के उसे दूर का ने के प्रमान में एक बड़े दोय की स्वोकार कर हेते है। यह यह कि कमंत्रवाह यदि आदिमान है तो बीव पहले ही सामन्त गुड-बुड होना चाहिए, फिर उसे लिप्त होने का क्या कारण ? और यदि सर्वथा गुद्ध-युद्ध जीय भी कर्मलिएत हो जाता है तो मुक्त हुए जीव भी कर्मलिएत होंगे. ऐसी दत्ता में मुक्ति को सोमा हुआ संसार ही कहना चाहिये। कर्म-प्रवाह के अनादित्य की और मुक्त जीव के फिर से संसार में न सीटमें को सब प्रतिरिठत दर्शन मानते हैं, खेहे:-व वर्माऽविमागादिति धेन्नाजादित्वात् ॥ ३५ ॥

उपपद्यते चाध्यपसम्बते च ॥ ३६ ॥ (वहासुव स॰ २ वा॰ १) सनावृत्तिः सध्यान् सनावृत्तिसम्बात् ॥ २ ॥

(दसंस्थ व. ४ वा. ४) · कर्म-बन्ध का कारण

क्षेत्रदर्शन में कर्ष-काब के मिश्यात्व, अधिरति, प्रमाद, कथाय थीर योग में वांच कारण बतनाये पए हैं । इनका संक्षेत्र विक्रि

हो (कवाय और योग) बारमों हे व स्वित सहोव करके कहा आप म क्याय ही दर्भ-दग्य का कार्य है

शनेक प्रकार है पर यन सब क

माध्यारिमक विद्वानों ने उनके शा



## किन किन साधनों की अवेदता है ?

वैनशास्त्र में परम पुरुषार्थ-मोक्ष पाने के तीन साधन वतलाये हुए है:~(१) सम्पर्णदर्शन (२) सम्प्रग्राम और (३) सम्यक्षारित्र । कहीं कहीं ज्ञान और किया दो की ही मोक्ष का साधन कहा है। ऐसे स्थल पर दर्शन को ज्ञान का स्वरूप-क्रान का दिशेष-समक्ष कर उससे जुटा नहीं विनते । परम्बु यह प्रदन होता है कि चेविक दर्शनों में कर्म, जाम, योग और भवित इन चारों को मोक्ष का साधन साना है, फिर जैन दर्शन में तीन या दो हो साधन क्यों कहे गए। इसका समाधान इन प्रकार है कि जैनदर्शन में जिस सम्यक् चारित्र को सम्यक् त्रिया कहा है उसमें कर्म और योग दोनों मार्गी का समावेश हो जाता है। वर्षोक सम्यक् चारित्र में भनोनिग्रह, इन्द्रियवय, वित्तद्याद्धि, सममाय और उनके लिये किये जाने वाले उपायों का समावेश होता है । मनोनियह, इन्द्रियजय आदि सारिवक यश ही कर्म-मार्ग है और विल-शृद्धि तथा उसके लिये की जाने वाली सत्प्र-विस ही योगमार्ग है। इस तरह कर्ममार्ग और योगमार्ग का समिक्षण हो सम्यक् चारित्र है। सम्यक् दर्शन ही भवितमार्ग है, क्योंकि मक्ति में यद्वा का अश प्रधान है और सम्यक दर्शन भी श्रद्धारूव हो है। सन्यम् ज्ञान ही ज्ञान मार्ग है। इस प्रकार जैन-दर्शन में बतलाये हुए मोक्ष के तीन काधन अभ्य दर्शनों के सद साधनों का समृब्द्ध है।



स्राता है प्रहण न होना हो उत्तरा धाछ है। परत्यु इत्तरा स्वायान सहन है। किसी विवय का बाधक नमाण वहां माना बाता है जो धन पियद को बातन के द्वारित रकता है और अरव हामयो भोजूद होने पर उसे प्रहण कर न सके। उदाहरणाएं— अंक, किट्टों के घडे को देख सकतों है, पर जिस समय प्रकार, स्वीरता आदि सामधी रने पर भो यह किट्टों के घडे को न देसे, उस समय उसे उस विवय का बायक समसना स्वाहिए।

हाहियों सभी भौतिक है। उनकी प्रशु-पाषित होते परि-तित है। वे भौतिक पदायों में से भी रम्फ, निक्टवर्सों और नियत विवयों को ही करार-करार से बान सकती है। मुस्पदर्सक पन्य साहि सामनीं की बड़ी दशा है। वे बसी तक भौतिक प्रदेश सेहे कार्यकारी शिंद हुने हैं। हसीराम जनक स्थानिक प्रमूप्त-आता को जान म करना द्यार महीं वहा या सहसा । यन, भीतिक होने पर भी हरियों की सोर्पा अधिक सामर्थयान् है स्कृते, पर कब यह हिन्यों को सोर्पा अधिक सामर्थयान् है, एक इस तरह सनंक रायर्थ मंद्राप्त वे स्वापन की स्व किराती है-तक उनमें भावन कामन्य प्रांची पैदा कार्यकर साम प्रवाद करने सामर्थ

इला० ६७ में भी वही हुई है -'इतिकासां हि बरना कमनावृद्धिने ! तस्य हुर्गन प्रश्ने बादुन बीदवार्मी ।''

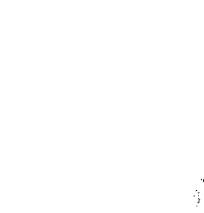
इससिये बज्यान मन में आरमा की भी रहुवता ना यह देशों हुई बात हैं कि अतिशिख स्थान एहण करने व जिस दर्भण में बतान हैं कहा थी जब मिलन हो जाता है। हिसी भी पानु का अतिशिख नहीं होता । इससे सह है कि बाहरी विवयों में बीड़ सराने वाले करियक मन



मानवा उचित है। जिस समय चेतनाय प्रश्निक का विकास होने स्थात है उसकी व्यक्ति होती है—उस समय जहाल प्रवित्त का तिरोमाय रहता है। सभी चेतना-प्रक्ति काले प्राणी कर यहां प्रश्निक के ही परिचास है। वे कह के लातियत स्वता प्रतिक्त काली प्रतिक्ति कहीं। यहां के लातियत स्वता प्रतिक्त कालियत कालियत कालिय काले हैं के लोवापारी कर में दिलाई देते हैं। ऐसा ही मनतम् हैकल साहि जनेक परिचारीय विदारों का भी है। यरायु उस प्रतिकृत तर्क का निवासन स्वता है है।

यह देला जाता है कि किसी बत्तु में जब एक दादित का प्राध्नमंत्र होता है तर उसमें दूसरी विद्योगिय ने शिंद का तिरो- हाता है। तर हो । यर गु को अधित तिरोहित हो जाती है वह सब के लिये नहीं, किसी समय अवकृत्व निमित्त तिरादित तह जाती है वह सब के लिये नहीं, किसी समय अवकृत्व निमित्त मिलने यर किर भी उसका प्राप्नमंत्र हो। इसी प्रकार को दावित आहु- मांच हुई होती है वह भी सबा के लिये नहीं। प्रतिकृत निमित्त मिलने ही) इसका तिरोभाव हो जाता है। उदाहण्यामं पानो के अवक्षां को लीजिये। वे सरमी पाने ही भाव कर में स्वाप्त हो को है, किर तीय आदि निमित्त तिकते ही पानी क्य में वर तक है और अधिक शीवता अध्यापत होने पर दाववक्य को छोड़ बक्ते रूप में यत्तव को प्राप्त कर लिते हैं। इसकाय को प्राप्त कर लिते हैं। इसकाय की प्राप्त कर लिते हैं।

एक मुल तरवात मान के तो विकासवाद हो न ठहर सकेगा। बसीकि वेतताब मानि के विकास के कारण जी आप वेतन (प्राणी) समझे जाते हैं वे ही गय, जहात मानित का विकास होने वर फिर जह ही जायेंगे। जो पायाण आदि प्राणे आज जह कम में दिलाई देते हैं वे पभी चेतन हो जायेंगे और खेतन क्य के पार्ट देने याले जनूब्य, यानु-वारी सार्ट प्राणी कभी



<b>ड</b> हा भाग )	-
m.	ता
वीवग्रारियों के देह की दिल्ला करन	ं में
शीवशास्त्रों के देह की दिनस्य का लिए हर है । सन्त्री । वे और मीतिकवास्त्रों है का	र्का र
शैवशारियों के बेह की दिनस्य के लिए हर का सहती। वे और भौतिकवारियों है के लिए हर का बहु नहीं समझ ने, कि मान के समझ है है कि समझ ने हैं कि समझ ने हैं कि समझ ने समझ है कि सम है कि समझ है कि समझ है कि सम है कि	? भी
alo district at a dia por	14.01
म नाम पाया है, उनको सोबहे हैं है कि उन	→ 1751-
डॉ॰ जारीशायात्र बीत कि है है कि जार है। में नाम पाया है, उनकी बीत है है कि जार है। है जरही जारी में भी स्मार्ट के कि है कि जार है जार में अपने आदिवारों है कि कि जी के तक जार बेतानिक संसार की मतहा कि जार करने	<del>≱</del> में जो
ने अपने आविष्तरारों है कि के हैं कि बात वेतानिक संसार की सत्तराहित का का के कि (छ) पराकृत कि	_ तौरन
वैतानिक संसार को मजबर्क	
पुरा समाधान पुनर्वाम 😜 🌫 =	। उम्रमें
वेतानिक संसार को मतहा है कि किया के कि कि (छ) पुनर्शन्म ।श्रीके पूरा समाधान पुनर्शम्म को किया है किया सारकम से लेकर जामतहा किया करणा	a की उन्नमें
2 2 mm mm mm - ' ' ' ' ' ' ' '	🗻 (में उन्होंने
पिता की कति के ? ५६ है :	ं की अवस्था
परिणाम नहीं कह मध्ये के कि कर के	🗲 वार्यसम्बद्धाः
बराक्छ भी काम भेटी	🖊 दर्घकी श्वस्था
हुव सब अन सामक काही, है है कि काल का पिता की कृति के हैं हैं है कि कार्यक का परिवास नहीं कह सबसे कि कार्यक का परिवास नहीं की कार्यक का का परिवास नहीं की है कि कार्यक का अस्ता सा सुरा, कहा के	्रकात वर्षकी
का परिचास कहें ता है। अच्छा या वर्रा हुंच है। को वर्षों भीगना को यो ही बिना बात कारण है वर्षोंकि कि	हिया कि, इस्मीन
को वर्षो भोगना करे	र कश्मायड्डा, कि
धो हो विमासा	बराबर ज्ञान नहीं
कारत है स्वाहि कि	र कम तेरह गाया
यदि यह कहा का	👡 १२ में जनमी हुई
विचार-वर्तन क	ेया में एक नाटक
1	्या में व्ह-नाटक
क्यांठ मास	ोच 💮
\$ 1800 E	
1 2 1 2	

. .

असर बालक पर गर्नावस्था में ही पड़ना शुरू ।

बालक की योग्यता माता-विता से बिहकल जुदा

होती है। ऐसे अनेक उदाहरण देखे जाते हैं,

विताओं की दिव, जिस बात पर बिलकुल ही मा

की परिस्थिति ही नहीं यानी जा सक्ती। वर्गोनि

बालक के मस्तिष्क में आये कहां से ? कहां कहीं

जाला है कि माता-पिताको ये ग्यता बहुत बढ़ी च जनके सी प्रयन्त करने पर भी एड्का गुँबार ही रह

यह सबको विदित ही है कि एक साथ-मुग हुए ही बासक भी समान नहीं होते । माता-1681 बरा दे होने पर भी एक सामारण हो रहता है जी werd are mint & 1 her mit fower show it men

हो ज्ञानदावित यालक में देशो जाती है हही, पर हैं, कि ऐसा मुप्रीम वर्षी मिला? किसी किसी कम

शीणित से बना होता है, फिर उनमें अधिशान

यह डांका होती है कि मालक का देह माता-

में शिचार व वर्तन की जुबाई देखी जाती है। मां यह परिनाम बालक के सेव्युत साम ततुओं का

स्थिति और बराबर देख भाल होते हुए भी अन

वालक सिद्धहस्त ही जाता है। इसका कारण

विह्कुल अवड् होते है और लड्क पुरा शिक्षित धिराय क्या ? महा तक देखा आता है कि कि

भी सामने बही प्रदम होता है कि बालक की ऐं संयोग नयीं हुआ ? और इसका क्या समाधान

प्रकाश को कोज करने वाले दे० यग वो वर्ष की उन्न में
पूत्तक को बहुत अच्छी तरह बांब सकते थे। बार वर्ष को उन्नमें
वे वो बक्त बाइल यह चुके थे। बात वर्ष को उन्नमें
वे वो बक्त बाइल यह चुके थे। बात वर्ष को उन्नमें
से देहन, पोक: हिंदु केंच, दर्शाध्यम व्यादि काषाएँ सोख लो
वी। वर विलयम रोचन है मिस्ट इन्होंने तीन वर्ष को अवस्था
में हिंदु नाथा नोकन, आरम्भ किया प्राप्त किया वर्ष को अवस्था
में हिंदु नाथा नोकन, आरम्भ किया मेरे को अवस्था
में हिंदु नाथा नोकन, आरम्भ किया मेरे को अवस्था
में हिंदु नोथा नेकन, आरम्भ किया मेरे को अवस्था
में हिंदु नोथा नेकन, अरम्भ की। के स्वाक्त किया हिंदु करान किया है। कि इस्तेश के देव के प्राप्तियों में भी उनसे वराव मान नहीं
है। और तेरह वर्ष को बय में तो उन्होंने कम से कम तेरह माल पर अधिकार जमा किया था। है कम देव स्व कम तेरह माल एक लड्की ईंट हन् १९०२ में देव वर्ष को अवस्था में एक नाटक सही, परम्तु में अपना जहेश्य अवदय सिद्ध करूँगा-महं मार्जनं मंनृष्य के हुदय में जितना यस प्रकार सकती है उतना यस अप कोई पावना नहीं प्रकार सकती । यह भी नहीं कहा जा सकता कि उत्तर का बात निक्या हैं। यहां सकता कि उत्तर का बात निक्या हैं। यहां में हो जहां जा सकता कि उत्तर का बात निक्या गया है। यह जसता विषय सेतन भी मन सकता है। इन सब यातों पर स्थान के से तह माने विया संत्रीय नहीं होता कि सेतन एक स्वतंत्र सर्थ है। यह जानते या अनजानते जो अध्या वृद्ध स्वतं कर स्वतं पर क्यां के सेत हो हो हो हो सेत एक स्वतंत्र सर्थ है। यह जानते या अनजानते जो अध्या वृद्ध स्वतं कर से प्रकार के स्वतं स्वतं कर स्वतं कर से प्रकार वृद्ध से प्रकार में प्रकार वृद्ध से प्रकार है। यह सामान से प्रकार निवास ने भी सुनाम माना है। प्रकार निर्देश कर्म प्रकार निवास ने भी स्वतं से सुनाम से प्रवास ने स्वतं से सुनाम से प्रवास निवास ने भी स्वतं से सुनाम से स्वतं से सुनाम से स्वतं स्वतं स्वतं स्वतं से सुनाम से सुनाम से सुनाम सु

## आहेंसा की कसौटी

कविरान थी अमरकारती महाराष

चाहै सेन धर्म हो, चाहे कोई साय धर्म हो यह नहराई के ताय सन्याम, चिन्तम हो। समन किया जाए तो एक बात स्पष्ट विदित 'होगी कि प्रत्येक धर्म का प्रतान चा हुरत महिना में हो रहा हुमा है। हुनारा शरीर दिलमा ही करावान चानि हो, सब बुत करीन हो जोर साजा-योड़ा भी वर्षों म हो, सब तक उत्तर्ये दिल कान करता पहला है, हुबर उक-टक करताई, सती सकत बहु तरीर बतताई छोर प्रकृत पुर-पुर-पा नरस्ताई अपता कर बहुता हुन-पुर-पा नरस्ताई स्वार प्रकृत पुर-पुर-पा कर प्रताह है। तक बुव वर्षों हो हुब्य को हुरक्त सें बारा सी गढ़बर हुई, हुबर का स्वत्यन कराती हेर के तिम् यो चका सि यह मारी शावकार यहता देश स्वता करा हो हो हु स्व

हृदय, प्रारीर में छोटो- तो जगह रखता है. किर की तारे तरोर का करता होता है। हृदय का करवा होता है। हृदय का करवा होता है। हृदय का करवा रहेता और रचन नो छोन को कर करवा रहेता हो। वह कि का कर रहेता हो प्रारा के जा कर रहेता है। यह र देवा पूर्व हो बाद हो जाय, यह काव करना छोट दे तो हुवा प्रारी र रह को छोगा है का तर हता है। यह तम कर रहता है बाद तम का का का करवा छोट है। यह प्रारा छोर र हता का करवा छोट दे तो हुवा प्रारी र रह का करना छोट दे तो हुवा प्रारी र रह का का कर प्रारी है बाद का स्वारा प्रारी है। यह ता सामा वस का रहता है वह ता सामा वस का स्वारा है का सामा वस का स्वारा है। यह ता सामा वस का सामा वस क

चलते हैं और जिनके कवम देखकर आज हम चलते हैं वे कहते हैं कि जब तक दारीर में आत्मा है तभी तक दारीर, दारीर है। बान्मी जब निकल जाती है तो यह मिट्टो का देर है। मृतपूर्व के हिटकोण से पछ हो स्यूल भाषा में उसे करोर कहते रहें (तो जो बात इस हारोर के स्थान में देखते हैं और सोखते हैं, वही धर्म के सरकाध में भी है। कोई घर्म श्तिना ही कैंचा वर्धों न हो, उसका क्रियाकाण्ड कितना हो उप और घोर वया न हो, तरस्या किननी हो तीव वर्षों न ही और ऐमा जान पड्ता हो कि, दुनियाँ भर का बोझ उस धर्म या व्यक्तिमें अपने अपर ओड लिया है, किन्तु लब तक उसमें अहिंसा की मावना रहेगी, त्रीयों के प्रति दया का झरना बहता रहेगा समी सक वह धर्म वह श्रियाकाण्ड वह सप और बन परीपकार धर्म की क्रोंटि में गिता जायगा । सभी तक नत्य भी धर्म है, दान भी धर्म है नवकारती से लेकर छः महीने तह की तपस्या आदि कियाकाव्य भी धर्भ है। यदि उसमें से अहिमा निकल जायती किर वह धर्म नहीं रहेगा, धर्म की लाज रहेगी। वहाँ एक रूप में अधर्म ही होगा। अहिसा मूल में रहनी चाविए किर चाहे यह बोडी हो वा ज्याबा हो । स्वनाधिक की बाह यहाँ नहीं है । यहाँ तो यह बात है कि अहिसा का जरा भी धंदान रहे तो फिर वहाँ धर्म नहीं रह सकता। हमारा बीवन धर्ममय और विराट तय बनता है अब अहिंसी की माधनाएँ उपमें लहराती हीं, दूमरी पर आत:करण से कदवा की बर्दा होती ही, और रापने कीवन के साथ दूसरों के जीवन की भी देश कर बना हो, अर्थात् जैसे मुत्रे चीने का हक है उसी प्रकार दूसरों की की अपने का हक है. यह महामान्त्र जीवन के कल-कल में गुंजता हो। हृदय से मेल रलने हुए चलना हो; तो सगम को कि पहाँ बहिता है,

हीर जहां वह हाहिना रहेगी वही पर पर्म रहेगा। इस शहिना के अवाद में हर्ष हिंद हो महीं महता। इसी महानस की बाद संबेत अनाव । बरते हुए महबाद महात्रोर में प्रश्तनस्था रण मूत्र के सबरहार में लहीं होति वा वर्षत्र विद्या है, यस भारवसी वशा है। वशा भी है-ऐसा मा भगवती अहिमा जा मा भीवाण विव सर्वा।

सहिमा के पापसी का जो ज्यक दिया है भी सर्देशित नहीं है। व्यक्ति वाजन प्राप्त करते हैं। विश्व हैं। विश्व त्या तुम गणवान के प्राप्त अर्थना करते हैं। विश्व तो प्राप्त करता तीह हैरहार प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त होना है। वह और अप्रदा तापक के मन में प्राप्त के प्राप्त होना है। इस होना है तह की प्राप्त करते के के मन में प्राप्त करते की होने चाहिए। क्ष्रिया हिमारे निष्त कुता की पीज है, यही हमारे निष्य प्रज्ञ की पीज है और प्राप्त के स्थान कर सोगे सभी प्राप्त भी कब होने ? कब दि अहिना के स्थान करते हमें की सहिता के

हा कि देखी नहीं और उसे टुकराने चते, जसकी ओर से पीठ मोइसे चले तो कामकान वे दर्शन की होंगे ? तो सबसे बड़े कामबान अकार में है है और उनके ऊपर विकार-

वाननाओं कर वर्षों वस्तु है। आस-देशत, को सबसे बड़े शावान हैं, अन्दर हो तो बंटे हैं, इपी शापिर के अवदर तो विश्वानमात्र हैं किन्तु दुर्माग्य के अनावि काल से हिंता का यदी पत्रा है। काला कबादा पहिल स्ववाह है और यह वहीं नृष्क से तीज तक पत्र हुआ

है। फिर आस्म-देवसा के दर्मन हों तो की हो ? कत: उस हा हा आस-देवसा के दर्मन हों तो हैं कि ते इस उस हा आस-देवसा के दर्मन करान हैं तो हिंसा के बाठ वर्ष का दसार होगा। जितने अपने में यह कम होता जाया। उतने हो अंती में आसात के दर्मन होते वार्ति को तो उसने हो अंती में असात के दर्मन होते वार्ति को तो उसने हो अंती में किए सामात्र कर करान हो की तो असी की असी के सात्र के स

अहिंसा भगवती कांपुत्रा के लिए कही भटकने की

महीं। किसी स्नास समय की जरूरत नहीं। बुकान में बंठे हो तब भी उतकी पूजा करो, मकान में भी उसी की शामने रक्ली। आखीं मे जरा-सी देर के लिए भी श्रीझल न होने दो। जीवन के प्रत्येक क्षम में स्रोर प्रत्येक व्यापार में अहिसाकी प्रतिस्ठाकरो । अवनी मनीवृत्तियों को, अपने कर्यों को, अहिसा की सराजू पर ही तोली। अहिसा के

प्रतिगहरी और आप्रह-गरी मावना चित्त में उत्पन्न करें। इस प्रकार हर जगह और हर समय उसकी पूजा होती चाहिए। ब्राचार्य समन्त पत्र, जो जैनों में एक बहुत बड़े वार्शनिक हो चुके है और जिनको विवारधाराएँ गम्भीर रूप में हमारे सामने आई है, बोले

सो आत्मा को प्रांकी खोल कर बार्ते की । वे बोले--

अहिंसा भूतानां जगित विवित्तं ब्रह्म परमम् ।

-यूहरस्वयम्पासीत्र यह परमञ्ज्ञा, परमेडवर, परभारमा कौन है ? कहा है ? सी र किस रूप है ? इस प्रशासनी के उत्तर में आचार्य कहते है-इस संसार के प्राणियों के लिए साधारण प्राणियों के लिए भी और सी विशिष्ट साधक है उनके लिए भी साकात परम्बाह्य ता अहिसा है। व्यवि उसकी उपासना नहीं कर राके, रीवा नहीं कर सके तो मगवान् की उवासना या सेवा कामें के लिये जी सुम चले हो सो शवियेक हो शकता है, आग्ति हो सबती है ; किन्तु सब्बी जवासना द्यं सेवा नही

हो सहती।

शहिमा को जब भगवान बहा है भी बहु अवसे आब में इवत: अन्यत हो गई। वसीटि मी भगवान होता है, वह अवस्त होता है। दिसाबा अन्त आभाग वह भगवान केता ? जिमकी सोगा बेठ गई बहु और कुछ कहे हैं। हिंगु भगवान की है। बहुता आराग में अन्यत बुग है। भगवान होने के नियं अगवें में प्रसंब गुग की भी ह्यपने हहाती कद में हानात होना चाहिए। सामा में एक दूव नाम

। बंब यह प्राम्त-गुण अन्तत-असीम बन जाता है तभी काणान् राजा सकता है। इसी प्रकार चारित्र में अब अननता सा जातों है रिजे गृत, बीचें और दूसरे प्रत्येक गृत्य अध्यक्त अन्त जाते हैं है रिजे गृत, बीचें और दूसरे प्रत्येक गृत्य अध्यक्त कि साधक को ग्लावस्थ कि साधक को प्रत्येक कि स्वार्ध के साधक को प्रत्येक कि साधक के प्रत्येक के स्वार्ध के स्वार्ध के स्वार्ध के साधक को प्रत्येक के साधक के प्रत्येक के साधक के साधक

फिर मो अहिला की विराट झोंकी हमारे सामने आई है और कर का कालुंग है कि सकत्य है दूतरों दे सामने म आई हो। बहु इसनी विद्यान और विस्तृत झांकी है, जो हमारे लिए सी बड़ी से वही है। हम जब पदते हैं और शास्त्रों को बातें करते हैं जान परता है बड़ी बारीकी में घूम कर चले गए। मगद जिल्होंने पडता ह बडा वाराज्य है वे बतलाने हैं कि पह ती उस जाना ह जहां नहां गया है। महाममूद में से एक ही बूंब अनलवा भाग है। यह अनलवा भाग ही वहा गया है। यह बाहर फरा मान और एक बूँद बी, बी ज्ञास्त्री में आया है, न्तरात्था में है। बह पूरा पड़ा भी नहीं गया; समझा भी नहीं तबा (बरतार में कुछ बोड़ा-मा पड़ा और समझा मान पट अर विम्तु जो मी कुछ बोड़ा-मा पड़ा और समझा गया है, वह भी त्र गुज्या करी का सबता शिर थी जो कुछ ममार्थित जो हार को समस्याम नहीं का सबता शिर थी जो कुछ ममार्थित जो हार्व के सब जो बहुत बड़ी बार के जी भारतारा विश्व करी दात है और उमे आपको हैं है हार स्थापको हैं उस विशाद महिला है स्वक्त्र को शायको समझा<sup>ता है</sup> अप हर्व HAMAI &

क मा है कि आ को मानव बनना है या दानव बनना है? जब मनुष्य के सामने मानवता और दानवता में से किसी एक को चून केने का सवाल नदा होता है तद अहिमा सामने आ कर खड़ी हो जाते हैं। अगरत-अनरत काल से यह नंकरण ही मन में बराइन नहीं हुआ।

अनादि काल से प्राणी दानयता के कुपच पर भटक रहा है और बही-बही सा दानवता के आवेश में इतनी हिंसा की कि अमीन

को निरोह प्रोणियों के सुन रो तर किया । फिर भी उसे यह शकल्प नहीं आया कि म मानव यनूं या बानव यनूं ? यह जीय एक दिन उस जयस्या में भी पढ प्या कि बाहर से जरा भी हिंसा नहीं का, उस एकेन्द्रिय और नियोद दशा में कि जहाँ अपना रक्षण करना भी अपने किए मुक्तिक हो गया। वहाँ तो यह सकत्व आता ही वया कि मुझे मानव बनना है या दानत ? राक्षस बनना है या इन्सान ? मंसार चक्र में भटकता हुआ यह प्राणी किस-किम गति एवं स्थिति में नहीं रहा है ? इस असीम समार में जितनी भी गति-हियतियाँ योगियाँ है, उन स्थ में एय-एक बार नहीं, अनन्त-अनन्त बार यह गया,रहा,मगर किसी भी स्थिति में यह संकल्प नही जागा कि मही यनना पमा है-मानव या यामव ? जिस दिन आरमा के सानते यह प्रदत्त सदा होता है कि एसे प्या बनता है, उसी समय अहिसा सामने आती है और कहती है-तुशे इन्सान बगना है ती मही ह्यीकर कर मेरा अनुसरण कर, मेरे चरणों की पूजा कर मेरे सर्गो पर भपना जीवन उत्सर्ग कर।

अपनी जिन्दगी को यदि इन्मानियत के महान सांचे में ढालना है और मानवता के महान स्वरूप को प्राप्त करना है तो समझ ले हु और मानवता क गराण रजका का मान्त करना हुं तो समझ छे आहुमा के बिना मानव नहीं यन सकता। इन मिट्टी के बेर को सनन्त बार लिया और छोड़ दिया। इसके हमें और छोड़ बेने से सनन्त भार सानवता नहीं आतो। जब अहिंसा के माय जागेंगे,प्रेम के माब जागेंगे क्षिकार्थ)

नेहो बनान इसरों को किन्दमी को समझने को बिदन चेतना जायेगी विश्वन के समझने को बिदन चेतना जायेगी विश्वन के इसानियन जायेगी और जितना-जितना अहिला विश्वन के उत्तरित जायेगा, उत्तरी जिग्न के उत्तरित जायेगा, उत्तरी जिग्न के उत्तरित जायेगी, जायेगी के बिदे चीत के प्रतिकृति के उत्तरित जायेगी जायेगी। विश्वन के उत्तरित जाये के उत्तरित जायेगी के विश्वन के अहिला के उत्तरित जायेगी के जिल्ला के जिल्ला

सरवम्यप्वमूधस्म, सत्म मूबाड वासळी । विद्विज्ञासबस्स दतस्स, वाबबन्म न स्राप्ट ॥

सुनार घर के प्राणियों को अपनी आत्मा के समान समारे. की सहिता की द्यारण है, यही अहिता का बात्य और कहावास हे और पत्री अहिना की महान बनोटी है । जिन दिन जिन घडी कु मनने आप में भी जीने वा अधिकार लेकर मेंडा है सही जीने का क पान कर का जान कर आधार है के निर्माणी हैगा, तेन झारह हुगाई। के विकास कहत जात है हुगारी है निर्माणी हैगा, तेन झारह हुगाई। के श्रीवन की वरवार करने की सामयता जाएंगी हुगारी की हैंगाई-वी को सवनी जिल्ला के सवान देखना सीर नवार है रह जानी चाच्या अवस्था कर्यात कर्यात क्षाप्त कर्यात बडिट हरी। श्रीर कार्रे से भावता में सेरी अपनी माण्या के समान बडिट हरी। श्रीर कार्रे मार कोनमानहरित्र है हैराने लत्ना आनु और विश्व के है के ला कि ार कारामां की राज कारा प्राप्त की की हम से बाहू स्थितक पुरुषक बादी के ही कदान है, जुराने की हम से बहु स्थितक भारत मही है जो बीज कहा रहाती है बन हमारी व' को नहाती की भारत महा है जा पान का प्रभाव का हमार था का दावर स्नाह स्थाप के स्थाप के स्थाप के स्थाप का हमार है । त्या का मेरा वर्ष स्थाप है , सभी स्थापना हैं अपे के स्थापन का हमार है । त्या का मेरा वर्ष दराहर है , लबा का महत्व की देश में बाद हुए हो हो सही को है जार में कुम्म है दिन होड़े कमते की देश में बाद हुए हो हो सही को है जार में कार्य के 15 जार कर 17 के 17 के 17 के 17 के 17 की की 17 की की 17 की 18 की 1 समितिकार सम्बद्धित कर सहस्र समितिकार की 18 क antiation of at and 2 ever non h fe me on he at ध्यतो धर्मसर्वस्य धृत्या चैवावधार्यताम् । भारमनः प्रतिकुलानि, परेवां न समाचरेत् ॥

धर्म के रहत्य को मुनो और जितने भी महा-महान्तर है, हव की बातें मुनो। कही दूधर-उधर कार्म-काने है धर्म भागहा कही है। दूबरें के धर्म को भी मालूम करो। वर तब धर्मों का नियोद्ध रक है। है के धर्म भागाया के प्रतिकृत्य को बातें मालूम होती हो, बित बातों से सुम्हारे सेन से पीड़ा उराज होती हो, बहु बातें-पासी देना, अवधान करता, नक्सान पहुँचाना, कथ्ट पहुँचाना आदि सुम दूपरों के लिए भी म करो। यही तथ से यहा धर्म है, अहिसा है। जो ध्वासित के सहम् पाय को ध्वासित के प्रतिकृत से निवास कर प्राची भाग में धियोर देवा है, यहिसा है। बातें निवासित के प्रतिकृत के प्रतिकृ

और विशादना भ्यान करता हुआ चलता है और अस्त में जगत के कोने-कोने में उसे फैला देता है वहीं सच्चा धर्म हैं। आद को सब से यही समस्या क्या है रोहार क्यों सकर में पड़ा है ? तिस्य नये नये संख्यों का उत्तर क्यों हो रहा ? वर्गगत संख्य क्यों बेश्य की तरह भयानक होकर वरेशान और अधनीत कर रहे हैं ? इन सब के मूल में एक हो चीज है और वह यह कि हमारे

अन्तर बहु धर्म आन सत्रीय नहीं रह गया है। सनुस्य अपनी बाहना के लिए खाने-पोने के लिए दूसरों को बर्यांट कर रहा है-नेश्तनावूद कर रहा है। उसके लिए कुवली आ रही है दूसरों की जिन्दाियों हो मेले कुवले, किन्तु मेरा घर भर माना चाहिए। सेरी जिन्दाियों ओराम सिक खाना बाहिए। इस मनार मनुस्य अपने अन्दर बंद हो गया है, फततः उसे महीं मानुम कि दूसरों पर कसी गुजर रही है। हो गया है, फततः उसे महीं मानुम कि दूसरों पर कसी गुजर रही है। हो गया है, फततः उसे महीं मानुम कि दूसरों पर कसी गुजर रही है।

सो ऐका प्रेम,अपन अन्दर जागता रूपा गुरुष नहीं, स्वाय हु माह है और अज्ञान अज्ञान की छ। धम नहीं है इसी की फिल लाज संसार को यह दुरंता है। यही प्रेम जब दूसरों के लिए पर में इम करेगा, करणा की धारा में बहेगा और समस्टि के रूप रे केंग्रा जायगा तो वही अधिका के साने में महता आधारा

र्केट्रता जायता हो। वही अहिंसा के सांचे में इसता जायता । जो आदमी अवने शन्दर बन्द हो गया है, स्वार्थी से छिर गया बीर जिसे अपनी ही जरूनतें और चीजें महर पूप मालूप होती हूं बीर उनकी पूर्ति के लिए दूमरों को जिन्दगा की छापर घाही करता है बीर ऐसी लावरवाही करता है जैसी एक नरावाज ड्राइवर । मान मी अए एक ब्राइवर है। उसने मझा कर लिया है वह भीटार में बैठ काता है और पूरी रवनार में मोटार छोड देता है। सब मोटर दोड़ ही है और ड्राइयर की मान नहीं है कि इस राहते पर दूसरे भा बैतने बाले हैं। दूसरों के जीवन भी इस सड़क पर घूम रहे हैं, बे वरी बहीजी में कुचले जा सकते हैं। वह तो नदों की मस्ती में मून रहा है और मोटार उसकी तीवतम वेय के साथ दौडी जा रही है। रेवा यह बुद्दियर सच्चा और दीमानदार बृद्दियर है ? नहीं, कमी नहीं। इसी प्रकार की मन्ध्य अपने लिए स्वार्य या बासना का पाला चढ़ा हेता है और अपनी जो न-गाडी की उन्मुक्त एवं ते ह पित में छोड़ देता है कि दूसरे जीवन कुचले जारहे हैं,मर रहे हैं. रिस्तां उसे सन्तर मी चिता नहीं है वह मन्त्य भी सब्धा मनाव महों हैं। माडी की के प्रवार में छीड़ने पर कोई दुर्बटनाया खतरा हो

रक्षा है और दिमाग को तरोताजा ग्रम कर चला पहा है और मोटार को असे संसे मरते-मारते ठिकाने पहुँचा देगा मात्र ही उसका स्थ्य नहीं है, किन्तु सडक यर किसी को किसी प्रकार का नुकसान भी मही होने देता और समुझल ठिकाने पर्नुच जाना है तो वही सच्चा और दोशियार ड्राइवर है। फिर भी मन्द्य-मन्द्रव है, कभी मूल हो बाती है, अस्तु उसके बचाने का पूरा प्रयत्न करने वर भी कोई फेंट में आ ही गया या अब सामने कोई आदा और उसने बेंड लगाया मगर ब्रेक फेल हो गया और गाडी नहीं दकी, तो ऐसी

नहीं हुआ। ही तो आप भी जीवन की गाडी लेकर चल रहे है। गाडी की घर से बाहर न निकाल कर केवज घर के गैरेज में बन्द का देना, ही मोटर गाडी का उपयोग नहीं हैं। मोटार का उपयोग तो मैदान में चलाता है। किन्तु चलाने का उचित विवेश रहना चाहिये। इसी प्रकार जीवन में भी मन को याद करके सूछा थो, जीवन की सारी हरकतें बाद कर वो और शरीर की एक गांम-पिण्ड बनाकर कि जिस्ता लाडा है, सूर्वे की तरह निष्क्रिय पड़े रहना कोई धर्म नहीं है।

स्यिति में कहा सकता है कि वह उस हिसा के बाप का भागी

तहस्य हो तो उस रूप में गाडों को चलाने काहक है और साध हो तो सभी चलाने का हक है किन्तु चलाते यथत नशा मत करो सेमान स बती। मस्तिरक की साफ और तरीताजा रक्लो। स्थाल रक्लो कि जीवन की यह गाडी किसी से टकरा न जाय। व्यथं या अनुधित हद से किसी को कुछ नुकसान न पहुँच जाय।

महाबीर कहते है-जीवन को चलाने की मनाई नहीं है।

ती दून सब बातों को ध्यान में रख कर ही जीवन की गाड़ी

कामी बाहिए। फिर मी कदाबित भूज हो जाय और हिसा हों मिन्नोसंग्य हो सकते हो, किन्तु अन्ये बन कर बलाओंगे तो सम्यं रहीं हो तकाने :-

एक बार तीवाम ने मानवात से भश्त किया। उन्होंने अपने ही जिएनहीं कियुं समस्त विश्व के लिए भूजा-भाषता । जीवन से कहीं वाद न करों, ऐसी पहुं बताइए वर्गीक बोधन वायमव है। चलते हुए भी पार कातता है।

र चार्रमी¦सके रही । राज्यसके सके भी पाप सगता है । ी

ं ्रिज्यन्या, बंद जाओ ।

ा ८ ल्याप तो बेठने पर भी कपता है। ८ ल्यापटा, पद जाओ । हारे दारोर की मुद्दें की तरह पदा १०० रुक्को । जारे पर १०००

-एड पड़े भी पांच छगता है। -तो मीन घोरण कर हो । चूप रही । बोली मत । साओ क्ये पीओ मत

?' बेटा यहाँ जीवन का अर्थ है ? किन्तु जीन-धर्म के संपादान करने की यह बदान नहीं हैं। पायान एह नहीं करहे कि सकते से बाद क्षाता है तो कर है जानाथे। इस पर भी पाय काने सो बैठ आओं और किन्द पसर जाओं और इस ताह थीवन की समायत कर बी। सावानके धर्म में सम्बद्धातायत बहु नहीं हैं को इधर प्योक्ति?' कहे और जाद एक जहर को पुद्धियां जा है। बस पाय नाम साव! सुजीवन रहे और सजीवन की हरकत रहे। बेत धर्म तो महरूकता है कि अनुवन । तेरी जिल्लाी अगर ५० वर्ष के लिए में ता ५० भीत रुक्क अने के दिए में तो १०० वय और प्रचार अने के दि भा मनार बच पुरे कर, किल् एक बाप का स्वान रथ कि.~

> जाय भरे अयं भिद्र, अपनामे अयं गत्। क्रम मुक्तमा मागमा, वावकम्य म मधर्र ॥

-451 - M . 4 M1 .

क्षरवेषम् गरवा के शारा मगवान महाबार का मनार के न साधकीं को भीवन सम्बद्धा है कि प्रायंक काय प्रमान बंक करा। ब हे हा धनमें में यनना रक्ता, विदय रक्तो । लड हो ना बंट-बात नहीं है। नार पर मकी हो पर विवेश के साथ । साना । बोजना है तो भी मही दाने हैं । विवेश के साथ लागा, विवे शाय बोली । फिर बाव कर्म गहीं संग्रेने । वाव-कम शविवेक से

हस, विवेश ही सहिंसा की मसीटी हैं । जहाँ विवेश है अहिता है ओर जहीं विवेश नहीं में यहाँ अहिना भी नहीं है। दि या यननापूर्वक काम करते हुए भी यवि कभी हिसा ही बाय त दिया नहीं होगी, अनुबन्ध हिसा नहीं होगी ।

ि ६ मा. देर प्रानिक परीक्षा बोर्ड के पाठवकम में निर्वासित ृत्यों का वर्षोधन मृत्य निम्नप्रकार है। पृत्युक्त काम दीयमु 🕟 र एक्ट कर रहेक बन्दक है। बद्दाल कार्य रिवर्ग कर दूरण ०-९० रहे तत्त्वाचीवियम मूत्रम् कर हेरसः १-१६ रा बत्तराध्ययन मूत्रम् •-{• .... a 4 4,41 |-10 | 58 Etalat 623/4 .-. राजन क्षत्र राष्ट्रश्च १-६० देश जैनावही झाडी .-. 1-24 रेरे बारने स्था 1-0 र क्षणका १-७० रिश सम्बद्ध मास्त्रीक 1-00 बाब बाका कन्द्रक निर्दे की ब्राउत सूत्रम के के देश कर देशा करते हैंदे बी बड़ी मूबर् **5-5**0 हैं पर किए कार मेक्स र-कर देश देश देश वादा 4-04 4-54 ११ इकायना तम्बालोक 1-54 1-1. 17 et erieffen grq ¥-40 •-13 و-14 15-0 1: Kangle (2- 245153) (-11.